ज्ञानपीठ-लोकोदय-ग्रन्थमाला
सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

प्रथम संस्करण
१९६१ ई०
मूल्य



प्रकाशक
मन्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी

ममतामयी रमा जैनको
सादर भेंट

तालिका

अ

आ

इ

क

प

फ़

ब

म

य

र

श

'अंजुम'—सुश्री आरिफ़ा बेगम अकबराबादी

सैरे-काश्मीर

हमारी निगाहें किधर जा रही है?
यह क्या देखती हैं? कि इतरा रही हैं
रहे अपनी नज़रोंका ओजे-रसाई[1]
बहिश्तेबरींकी[2] खबर ला रही है
यह कश्मीरका गुलसिताँ[3] अल्लह-अल्लह
बहारें फ़रिश्तोंको ललचा रही हैं
यह अतवारका दिन भी यौमे-तरब[4] है
वह गुलशनकी शहज़ादियाँ गा रही है
जिधर देखिए सूरतें प्यारी-प्यारी
हसीनाने-जन्नतको शर्मा रही हैं
यह मालूम होता है दोशीज़ः[5] परियाँ
ख़रामाँ-ख़रामाँ[6] चली आ रही हैं
न देखो हटा लो नज़र उनके रुख़से[7]
हयादार आँखें झुकी जा रही है
यह पुरकैफ़[8] मंज़र है क्या रूह-परवर[9]
निगाहें निगाहोंको शर्मा रही हैं

---

१. ऊँची पहुँच, २ जन्नतकी, ३ बाग, ४ खुशीका दिन, ५. कुवाँरी, ६. मधुर चालसे, ७. मुखसे, ८ आनन्दमय वातावरण, ९ प्राण-सचारक।

यह गर्दिशमें[1] है उनकी मस्तानः आँखें
कि गुलज़ारमें[2] जाम[3] छलका रही हैं
दुल्हनकी तरह बाग़ आरास्ता[4] है
हवाएँ दरे-ख़ुल्दसे[5] आ रही हैं



१. घूमनेमे, २. बागमे, ३. मदिरापात्र, ४. सजा हुआ, ५. जन्नतसे ।

'अख़्तर'—सुश्री नसीब अख़्तर

आ जाओ

ग़मे-फ़िराक़में[1] दिल अश्कबार[2] रहता है
न दिनको चैन न शबको[3] क़रार[4] रहता है
हर - एक लमहा[5] मुझे इन्तज़ार रहता है
अब इन्तज़ारकी घड़ियाँ मेरी बिता जाओ
मेरे रफ़ीक़[6]! मेरे दिल-नवाज़[7] आ जाओ

तसव्वुरातपै[8] दिन - रात छाये रहते हो
ख़याल-ओ-ख़्वाबकी दुनिया बसाये रहते हो
अगर्चे रूहके[9] अन्दर समाये रहते हो
मगर जो आग है दिलमें उसे बुझा जाओ
मेरे रफ़ीक़! मेरे दिल-नवाज़ आ जाओ

निगाहें ढूँढ़ती हैं तुमको लालाज़ारोंमें[10]
तलाश करता है दिल तुमको चाँद तारोंमें
ख़याल रहता है हर वक़्त कोहसारोंमें[11]
भटक रही हूँ निशाँ[12] अपना कुछ बता जाओ
मेरे रफ़ीक़! मेरे दिल-नवाज़ आ जाओ

---

१. विरह-वेदनामे, २. अश्रुपूर्ण, ३ रातको, ४ चैन, ५ क्षण, ६. मित्र, ७. ढाढस बँधानेवाले, ८ ध्यानमे, ९. आत्माके, दिलके, १०. उद्यानोंमे, ११. पर्वतोमे, १२. पता ।

तुम्हारी यादको दिलसे लगाऊँगी कबतक
ग़मे-फ़िराक़के सदमे उठाऊँगी कब तक
उमीदो-बीमकी[1] दुनिया बसाऊँगी कबतक
मैं जान हार रही हूँ मुझे जिता जाओ
मेरे रफीक़ ! मेरे दिल-नवाज़ आ जाओ

यह लमहा-लमहा दुश्वारे-जिन्दगी प्यारे !
उठा सकूँगी न अब बारे-ज़िन्दगी[2] प्यारे !
ग़शी[3] है और शबे-तारे-ज़िन्दगी[4] प्यारे !
ख़ुदाके वास्ते आकर मुझे जगा जाओ
मेरे रफीक़ ! मेरे दिल-नवाज़ आ जाओ



१. आशा-निराशाकी, २. जीवन-बोझ, ३ बेहोशी, ४ जिन्दगी अन्धकारमय ।

'अख़्तर'—सुश्री अख़्तर बेगम क़ुरैशी

भूले फ़साने [नज़्म]

मेरी नाकामियाँ जब मेरे दिलको तोड़ देती हैं
मेरी दिल सोज़[1] उम्मीदें मुझे जब छोड़ देती है
मेरी बरबादियाँ जब आस मेरी तोड़ देती हैं
दिले-ग़मगींको[2] कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

बिसाते-आस्माँपर[3] माहे-रोशन[4] जब दमकता है
सितारोंका मुनव्वर अक्स[5] पानीपर चमकता है
तमन्नाओंका शुअ़ला[6] मेरे सीनेमें भड़कता है
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते है

कभी महशर बपा[7] करती हैं मौजें आबशारोंमें[8]
कभी मेरा गुज़र होता है ऊँचे कोहसारोंमें[9]
कभी जब कूकती कोयल है दिलकश[10] शाखसारोंमें[11]
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते है

---

१. सहानुभूति रखनेवाला हृदय, २ दुःखी दिलको, ३. आकाशरूपी फर्शपर, ४. चन्द्रमा, ५ प्रकाशवान प्रतिबिम्ब, ६ आशाओंकी ज्वाला, ७. प्रलय-सी लाती है, ८ लहरोमे, झरनोमे, ९ पर्वतोमे, १० चित्ताकर्षक, ११ वृक्ष-समूहमे ।

जब आधी रातको सारा जहाँ ख़ामोश होता है
फ़ज़ाका[1] ज़र्रा-ज़र्रा[2] नींदसे मदहोश होता है
तेरे दिलकश तसव्वुर[3] जब अदूए-होश[4] होता है
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

सबाके[5] छेड़नेसे फूल जिस दम मुसकराते है
तयूरे-ख़ुशनवा[6] जब गुलसिताँमें[7] गीत गाते है
ख़यालाते-परेशाँ[8] मुझको अश्के-ख़ूँ[9] रुलाते है
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

ख़याले-ऐशो-रफ़्तः[10] अब तो माज़ी[11] का फ़साना[12] है
मगर पेशे-नज़र[13] अब भी वही रंगीं ज़माना है
वही तेरा तसव्वुर[14] और उल्फ़तका तराना[15] है
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते हैं

गुज़िश्तः राहतोंकी[16] दास्तानें[17] मुझसे मत पूछो
मेरी मुबहम ख़लिशकी[18] काविशोंको[19] मुझसे मत पूछो
तसव्वुर किसका है 'अख़्तर'! बस इसको मुझसे मत पूछो
दिले-ग़मगींको कुछ भूले फ़साने याद आते है

---

१. मैदानका, २ अणु-अणु, ३ चित्ताकर्षक चिन्तनमे, ४ समझदारीका शत्रु, दीवाना बनानेवाला, ५ पवनके, ६ मधुर स्वरके पक्षी, ७ उद्यानमे, ८ उद्विग्न विचार, ९ खूनके आँसू, १० भोग-विलासके विचार, ११. भूतकालीन, १२ कहानी, १३ आँखोके सामने, १४, ध्यान, १५ सगीत, १६ बीते हुए सुखोकी, १७ कहानियाँ, स्मृतियाँ, १८ छिपी हुई चुभनकी, १९ कुरेदोको, चिन्ताओको ।

किसीसे

यह नामुमकिन जफ़ाओंसे[1] तेरी मायूस[2] हो जाऊँ
यह नामुमकिन कि नाकामीसे मैं मानूस[3] हो जाऊँ
तेरी बे ऐतनाई[4] मुझको बरहम[5] कर नहीं सकती
मेरी आज़ाद फ़ितरत[6] ग़मसे सरख़म[7] हो नहीं सकती

तेरी वाबस्तगीकी ग़ैरसे[8] परवाह नहीं मुझको
तेरी इस बेवफ़ाईका ज़रा शिकवा[9] नहीं मुझको
न मजनूँकी तरह सहरानवर्दीपर[10] हूँ आमादः
न मैं दश्ते-बयाबाँकी[11] न तनहाईकी दिलदादः[12]

मेरे नज़दीक तेशा मारकर मरना नहीं बहतर
मैं राहे-इश्क़में फ़रहादकी तरह नहीं अब्तर[13]
जुनूने-इश्क़में[14] फ़रियाद करनेसे भी क्या हासिल ?
ख़ुद अपनी ज़ीस्तको[15] बरबाद करनेसे भी क्या हासिल ?



---

१. अत्याचारोंसे, २ निराश, ३ परिचित, ४. उपेक्षा, ५. उद्विग्न, क्रुद्ध, ६. स्वभाव, ७. नतमस्तक, ८ अन्यसे सम्बन्धित होनेकी, ९ शिकायत, १०. जंगलोंकी खाक छाननेको प्रस्तुत, ११–१२ वनो-रेगिस्तानोंमे भटकने या एकान्त-जीवन-व्यतीत करनेकी सनक नही, १३. दुर्दशाग्रस्त, बदहाल, १४. प्रेमोन्मादमे, १५. जीवनको ।

'अख़्तर'—सुश्री सैय्यदा अख़्तर हैदराबादी

ग़ज़ल

किसीकी यादमें आँसू बहा रही हूँ मैं
हदीसे - दर्दे - मुहब्बत[1] सुना रही हूँ मैं
सम्भल ज़मानए-हाज़िर[2] कि तुझसे कुछ पहिले
क़रीब मंज़िले-मक़सूद[3] जा रही हूँ मैं
सुनी है जबसे खबर उनकी आमद-आमदकी
हरीमे - दीदए - दिलको[4] सजा रही हूँ मै
अभी ज़माना नहीं उनके आज़मानेका
अभी तो अपनेको खुद आज़मा रही हूँ मै
नफ़स-नफस[5] है मेरा साज़े-ग़ैब[6] ऐ 'अख़्तर'!
जो सुन रही हूँ जहाँको सुना रही हूँ मै

ग़ज़ल

यह मैकदा[7] है मगर अब वह लुत्फ़े-आम[8] कहाँ ?
वह रक़्से-जाम[9] वह रिन्दाने-तिश्नाकाम[10] कहाँ ?
गुदाज़े - सीनए - मुतरिब[11] न सोज़े - नग़मए-नै[12]
वह बेकरारिए - महफ़िलका एहतमाम[13] कहाँ ?

---

१. प्रेम-व्यथाकी कथा, २ वर्तमान काल, ३ उद्देश्यपूर्तिके समीप, ४ हृदय-चक्षु-प्रासादको, ५. रोम-रोम, श्वास-श्वास, ६ परोक्षवाद्य, दैव-वाणी, ७. मदिरालय, ८ सर्व-साधारणको बैठकर पीनेका अधिकार, ९ मदिरापात्रका हाथोमे थिरकना, १० मद्यप, ११. गायकके गलेमें न वह दर्द, १२ और न वाद्यमे वह तडप, १३. प्रबन्ध ।

इधर तही है सुबू[१], उस तरफ़ तही साग़र[२]!
वह बादा-रेज़िए-महफ़िलकी[3] सुबहो-शाम कहाँ?
मिटे हुए-से हैं कुछ नक़्शे-पाँ[४] ज़रूर मगर
रहे-तलबमें[५] वह याराने-तेज़गाम[६] कहाँ?
नवाए-वक़्त[७] बहुत गुलफ़िशाँ[८] सही लेकिन
वह जाँ नवाज़ मुहब्बत अदा, पयाम[९] कहाँ?
शमीमे-शामे-मुहब्बतको[१०] क्या करूँ 'अख़्तर'!
नसीमे-सुबहे-तमन्नाका वह ख़राम[११] कहाँ?

ग़जल

जिसमें सरूरे-दर्दे-ग़मे-आशिक़ी[१२] नहीं
वोह ज़िन्दगी, तो मौत है, वोह ज़िन्दगी नहीं
जिसमें बराए-रास्त[१३] हो उनसे मुआमला
वल्लाह! ऐन होश है, वोह बेखुदी[१४] नहीं
इक ख़ूने-अन्दलीबके[१५] दमसे थी सब बहार
फूलोंमें अब वोह रंग नहीं, दिलकशी[१६] नहीं

---

१. मदिराका घडा खाली है, २ मदिराका प्याला रिक्त है, ३. मदिरा-पानसे परिपूर्ण, ४ चरणचिह्न, ५ प्रेम-मार्गमे, ६ शीघ्रगामी, ७ समयका गीत, ८ सुहावना, ९. जीवन-सचारक प्रेम-सन्देश, १०. सन्ध्या कालीन सुगन्धको, ११ आशा रूपी प्रात कालीन चाल, १२ प्रेम व्यथाओ-का नशा, १३ सीधा सम्बन्ध, १४ वेहोशी, १५ वुलवुलके वलिदानके, १६ आकर्पण ।

अल्लाहरे हिज्रे-यारकी[1] हैरततराज़ियाँ[2]
निकला हुआ है चाँद, मगर रोशनी नहीं
उनकी तरफ उठाऊँ मै अब क्या निगाहे-शौक़
अपनी तजल्लियों[3] ही से फ़ुर्सत अभी नहीं
यूँ दिन गुज़ारती हूँ किसीके फिराक़में[4]
जिन्दा बराये नाम हूँ और ज़िन्दगी नहीं

हमारी शामो-सहर

ज़बाने-शौक़ पै उनका ही नाम रहता है
उन्हींकी यादसे हर लहज़ा काम रहता है
नज़रको साग़रे-ग़ममें डुबोये रहती हूँ
तसव्वुरातकी[5] दुनियामें खोये रहती हूँ
न होशे-हाल, न एहसासे-हाल रहता है
बस एक सिर्फ उन्हींका खयाल रहता है
हज़ार दिलसे हम उनको भुलाये जाते है
न जाने क्यों वह हमें याद आये जाते है
अँधेरी रातमें भी मंज़रे-दरख़्शाँ[6] है
जिधर निगाह उठाती हूँ वोह नुमायाँ[7] है
सबाके दोशपै[8] उनके सलाम आते है
सितारे लेके नया इक पयाम[9] आते है

---

१. प्रेयसीके विरहकी, २ आश्चर्यजनक बाते, ३ तेज, आभा, ४ विरहमे, ५ उनके ख़यालकी ६ प्रकाशवान दृश्य, ७ उजागर, ८ हवाके कन्धोपै, ९ सन्देश।

गुज़ारिश

चला है राहे-वफ़ामें[1] तो मुसकराता चल !
हवादसातके बरबतपै[2] गीत गाता चल !
कमाले-आगही-ओ- कैफ़े- जुस्तजू[3] लेकर !
हिजाबे-दानिशो-होशो-ख़िरद[4] उठाता चल !
तग़य्युराते-ज़मानेको[5] देके हुक्मे-सबात[6] !
मवालिग़ाते-जहाँका[7] मज़ाक़ उड़ाता चल !
गिरोहे-अहले-तलबके[8] बुझे-बुझे-से हैं दिल !
चिराग़े-मंज़िले-मक़सूदको[9] जलाता चल !
अज़ीयतोंसे[10] उठा लुत्फ़े-ज़िन्दगी ऐ दोस्त !
हर-एक दर्दको दरमाने-ग़म[11] बनाता चल !
शुरूए-जादए-मक़सदके पेचो-ख़मसे[12] न डर !
हर-एक नक्शे क़दमसे-क़दम मिलाता चल !
दिखाके सोज़े मुहब्बतकी ताबनाकीको[13] !
जहाने-शौक़में इक आग-सी लगाता चल !
वह क़ूव्वतें[14] जो वदीयत[15] हुई हैं तेरे लिए !
बड़ा मज़ा हो अगर उनको आज़माता चल !

---

१. नेकीके मार्गमे, २ आपत्तियोके साजपर, ३ ज्ञान और खोज करनेका उत्साह लेकर, ४ समझ, होश और बुद्धिपर पडे हुए पर्दे, ५ युगके परिवर्त्तनको, ६ स्थायित्वकी आज्ञा, ७ दुनियाके अन्धविश्वासोका, ८ कुछ कर गुजरनेवालोके, ९ लक्ष्य-मार्गका दीप, १० कष्टोसे, ११. दुःखोका इलाज, १२. प्रारम्भमे मिलनेवाले संकीर्ण और चक्करदार मार्गसे, १३. प्रेमकी आगकी चमकको, १४ साधन, १५ प्रदान ।

मज़ाजे-बेहिसीए-ज़िन्दगीको[1] जल्द बदल !
पयाम अख़्तरे-आतिशनवा[2] सुनाता चल !

अहदे-नौ

कल भी थीं जहनीयतें मजरूह ओहामो[3]-गुमाँ
कुश्तए-ईहाम[4] है दुनियाए-इन्साँ आज भी
कल भी था चश्मे-बसीरत पर हिजाबे-इक्तदार[5]
हुर्रियतकी रूह[6] है मरहूने-जिन्दाँ[7] आज भी
कल भी थे जोशे-अनाके[8] वास्ते दारो-रसन
अहले-हक़के[9] वास्ते है, तेग़-बुर्राँ[10] आज भी
कल भी थी सरमायादारी[11] इक बलाए-जिन्दगी
ख़ूगरे-आलाम[12] है मज़दूरो-दहक़ाँ आज भी
....

सीनए-गेतीसे[13] कल भी उठ रहा था इक धुआँ
ज़र्राहाए-दहर है शोला बदामाँ[14] आज भी
भूल बैठा आजका इन्सान अगला तर्ज़ो-तौर
अल्लाह-अल्लाह ख़ूब आया है, यह अहदे नौका दौर[15]

---

१ अकर्मण्य स्वभाव को, २ आग्नेय सन्देश, ३ अन्धविश्वासो और शकोसे घायल बुद्धि, ४ अन्धविश्वासो-द्वारा बर्बाद, ५ उदार दृष्टिपर इख्तियारके पर्दे पडे हुए, ६ स्वतन्त्रताकी आत्मा, ७ कैदखानेमे गिरवी, ८ दीन-दुखियोको कष्टोकी गुहार करनेपर सजा मिलती थी यानी वे राजद्रोही समझे जाते थे, ९ यथार्थ बात कहनेवालोके लिए, अपना अधिकार माँगनेवालोके लिए, १० नगी तलवार, ११ पूँजीवाद, १२ दुःखोके अभ्यस्त, १३ ससारके सीनेसे, १४ दुनियाका जर्रा-जर्रा आज भी सुलग रहा है, १५ नया युग ।

'अज़मत'—सुश्री अज़मत अब्दुलक़यूम हैदराबादी

ग़ज़ल

फ़साना ग़मका[1] रुसवाए-जहाँ[2] होता तो क्या होता ?
मुहब्बतमें हर-इक आँसू ज़बाँ[3] होता तो क्या होता ?
अरे वह मेरे होंटोंका तबस्सुम[4] देखने वाले !
तुझे अन्दाज़ए-ज़ब्ते-फ़ुग़ाँ[5] होता तो क्या होता ?
ज़हे-क़िस्मत कि अब भी फ़र्क़े-हुस्नो-इश्क़ बाकी है
यहाँ जो हाल है दिलका वहाँ होता तो क्या होता ?
जुनूने-बेख़ुदीमें[6] जिस जगह हम सर झुका देते
वही क़िस्मतसे तेरा आस्ताँ[7] होता तो क्या होता ?
कमाले-बन्दगीए-इश्क़की[8] तौहीन-सी[9] होती
जबींपर[10] मेरी सज्दोंका[11] निशाँ होता तो क्या होता ?
दुआएँ दे रही हैं बाग़की वीरानियाँ जिसको
मुक़द्दरसे वह गुलचीं[12] बाग़बाँ होता तो क्या होता ?
खमोशी बन गई है दास्ताँ दर दास्ताँ जिसकी
वह 'अज़मत'-सा अगर जादू बयाँ होता तो क्या होता ?

---

१ दुःख-दर्दका बयान, २. संसारमें बदनाम, ३ मुखरित, ४ मुस्कान, ५ आहके दाबनेका अनुमान, ६ आत्म-विस्मृतिकी स्थितिमें, ७. द्वार, स्थान, ८. प्रेमोपासनाकी पवित्रताकी, ९. उपेक्षा-सी, अवमानना-सी, १० मस्तकपर, ११ मस्तक नवानेके चिह्न . १२. फूल तोड़नेवाला ।

'अज़मत'—सुश्री अज़मत इक़बाल

गजल

चमन[1] अपना न गुल[2] अपना न कोई बाग़बाँ अपना
तबीअत बुझ गई, उजड़ा खुशीका गुलसिताँ[3] अपना
मेरी सुबहे-मसर्रत[4] बन गई शामे-अलम[5] कैसी
है महवे-खुश-फ़शानी[6] यह शबाबे-नौहाख्वाँ[7] अपना
मुक़द्दरकी[8] लकीरें मिट नहीं सकतीं अगर या रब !
निकल जाये तो फिर सीने ही से कल्बे-तपाँ[9] अपना
हिकायाते-जुनूँ[10] फिर लब पै आती है मगर 'अजमत' !
फ़साना[11] है लबोंपर और नहीं अफसानाख्वाँ[12] अपना



---

१ बाग़, २. फूल, ३ उद्यान, ४. खुशी रूपी प्रातःकाल, ५ दुःख-रूपी सन्ध्या, ६ विनोद-प्रियतामे लीन, ७ शोक प्रकट करनेवाला यौवन, ८ भाग्य-रेखाएँ, ९ तडपता दिल, १० प्रेमोन्मादकी बातें, ११. कहानी, १२ कहानी सुननेवाला ।

'अदा'—सुश्री अदा जाफ़िरी बदायूनी

यह मेरे दिलको ख़याल आता है

देख तू सुर्मई आकाश पै तारोंका निखार
रातकी देवीके माथे पै चुनी है अफ़शाँ[1]
या कुछ अश्कोंके चराग़
हैं किसी राहगुज़रमें[2] लर्ज़ां[3]
आह यह सुर्मई आकाश, यह तारोंके शरार[4]
यह मेरे दिलको ख़याल आता है
दम अँधेरेमें घुटा जाता है,
क्यों न ईवाने-तसव्वुरमें[5] जला लूँ शमएँ
बरबतो[6]-चंगो-रबाब[7]
मुन्तज़िर हैं मेरे मिज़राबकी एक जुम्बिशके
ज़िन्दगी क्यों फ़क़त एक आहे-मुसलसल[8] ही रहे
क्यों न बेदार[9] करूँ वो नग़मे[10]
वक़्त भी सुनके जिन्हें थम जाये
रहगुज़ारोंमें[11] ये बहता हुआ ख़ूँ
मौतके साये तले सिसकियाँ भरती है हयात[12]

---

१ स्त्रियोके बालों अथवा कपोलोपर छिड़कनेका सुनहरा या रुपहरा चूर्ण, २ मार्गमे, ३. कम्पायमान, ४ अंगारे, ५. ध्यानरूपी प्रासादमे, ६. एक सितारकी तरहका बाजा, ७. बडी खंजरी और बाइलिन, ८. स्थायी, ९ जागृत, १० गीत, ११. मार्गोमे, १२. जिन्दगी।

इस उमड़ते हुए तूफ़ाँसे किनारा कर लूँ
ये सिसकती हुई लाशें, ये हयाते-मुर्दा[1]
ये जबीनें[2] जिन्हे सज्दोंसे[3] नहीं है फ़ुरसत
ये उमंगे जिन्हें फाक़ोंने कुचल डाला है
ये बिलकती हुई रूहें,[4] ये तड़पते हुए दिल
इन ढलकते हुए अश्कोंको चुराकर मैं भी
अपने ईवाने-तसव्वुरमें चराग़ाँ कर लूँ
देखकर रातकी देवीका सिंगार
वहम आता है मगर
नग़मः-ओ-नैका[5] सहारा लेकर
ज़िन्दगी चल भी सकेगी कि नहीं
इन सितारोंकी दमकती हुई क़न्दीलोंसे
रातके दिलकी सियाही भी मिटेगी कि नहीं ?

तामीरे-नौ

शरमिन्दगीए - कोशिशे - नाकाम[6] कहाँ तक ?
महरूमिए - तक़दीरका[7] इल्ज़ाम कहाँ तक ?
दुनियाको ज़रूरत है तेरे इज़्मे - जवाँकी[8]
सर गुश्ता[9] रहेगा सिफते-जाम[10] कहाँ तक ?

---

१ मृतको जैसा जीवन, २ मस्तक, ३ नमाजोमे सर झुकानेसे, ४ आत्माएँ, ५ संगीत और वाद्यका, ६ प्रयत्नोकी असफलताको शर्म, ७ भाग्य-हीनताका दोष, ८ युवकोचित संकल्पकी, ९ परीशान, चक्करमे, १० मदिरा-पात्रकी तरह ।

कब तक तेरे होंटों पै हदीसे-रुखे-ताबाँ[१]
सरमें तेरे सौदाए-लबे-बाम[२] कहाँ तक ?
गेसूए-सियह ताबो-रुख़े-साइक़ा परवर[३]
यह मर्ग-ओ-हयाते[४]-सुबहो-शाम कहाँ तक ?
लैलाए-हक़ीकतसे[५] भी हो जा कभी दो-चार[६]
ख़्वाबोंकी[७] हसीं छाँवमें आराम कहाँ तक ?
रुख गर्दिशे-दौराँका[८] पलट सकता है तू ख़ुद
नादाँ[९] गिलए-गर्दिशे-ऐय्याम[१०] कहाँ तक ?
कब तक तेरे सीनेमें ख़लिश तीरे-मज़हकी[११]
यादे-लबे-मैगूँ[१२] सहर[१३]-ओ-शाम कहाँ तक ?
ऐ ज़र्रए-नाचीज़[१४] ! ख़िजल[१५] महको[१६] कर दे
उफ़तादः[१७]-ओ-तफ़्सीदः[१८]-ओ-गुमनाम कहाँ तक ?
जुज़[१९]-वहम नहीं, क़ैदे-रहो-रस्मे-ज़माना
ऐ ताइरे-आज़ाद[२०] ! तहे-दाम[२१] कहाँ तक ?

---

१ चमकीले कपोलोकी तारीफ, २ प्रेयसीकी अट्टालिकाका ध्यान, ३ काली जुल्फो और चमकते कपोलोकी विद्युत्-छटाके प्रेमी, ४ मृत्यु और जिन्दगीकी, ५. वास्तविकता रूपी लैलीसे, ६ परिचित, ७. स्वप्नोकी, ८ संसारकी मुसीबतोका मुँह, ९. भोलेभाले, १० संसारके झगडोकी शिकायत, ११ पलकोके बालोरूपी तीरोकी चुभन, १२ ओठोसे लगाई हुई शराबकी याद, १३. सुबह, १४ तुच्छ अणु, १५. माँद, शर्मिन्दा, १६ सूर्यको, १७. दलित, दुखित, १८. बहुत गरम, १९. जमानेके रीति-रिवाज वहमके सिवा कुछ नही, २०. स्वतन्त्रताप्रिय पक्षी, २१. जालके अन्दर ।

मुहब्बत

मुहब्बत एक राज़[1] है
वह राज—रूहमें[2] रहे जो हुस्न[3] बनके जल्वःगर[4]
निगाह जिसके दीदकी[5] न ताब लाये उम्रभर
शऊरसे बुलन्दतर[6]
मुहब्बत एक राज़ है

मुहब्बत एक नाज़[7] है
वह नाज़—जो हयातको[8] निशाते-जाविदां करे[9]
जमींके रहनेवालोंको जो अर्श-आशियाँ करे[10]
न फर्के ईं-ओ-आँ करे
मुहब्बत एक नाज है

मुहब्बत इक ख़्वाब[11] है
वह ख़्वाब—जिसकी सरखुशीपै[12] जन्नतें निसार[13] हों
फ़साना साज़े-जिन्दगीकी इशरतें[14] निसार हों
हक़ीक़तें[15] निसार हों
मुहब्बत एक ख़्वाब है

---

१ भेद, २ आत्मामे, प्राणोमे, ३ सौन्दर्य, ४ प्रकाशवान्, ५ देखनेकी, ६. उच्चतर, ७ अभिमान योग्य, ८ ज़िन्दगीको, ९ अमरत्व प्रदान करे, १० आकाशमे प्रतिष्ठित करे, ११ स्वप्न, १२. मादकतापर, १३. न्योछावर, १४ खुशियाँ, १५. वास्तविकता।

मुहब्बत इक गुनाह है

लुटे न कारवाने-बू[1], रहे जो गुंचेमें निहाँ[2]
सदफ़[3]से बाहर आके फिर गुहर[4]की आबरू कहाँ ?
हुई जो महरमे-ज़बाँ[5]
मुहब्बत इक गुनाह है

मुहब्बत इक निगार[6] है

तमाम सिद्क़ो-सादगी[7], तमाम हुस्नो-काफ़िरी
तमाम शोरिशो-ख़लिश[8] मगर ब-तर्ज़े-दिलबरी[9]
शिकस्त[10]-जिसकी बरतरी[11]
मुहब्बत इक निगार है

नुक़रई धुँदलके[12]

ढलके-ढलके आँसू ढलके
छलके-छलके साग़र छलके
दिलके तक़ाज़े उनके इशारे
बोझल-बोझल हल्के-हल्के
देखो-देखो दामन उलझा
ठहरो-ठहरो साग़र छलके

---

१ सुगन्धरूपी यात्री दल, २ कलियोमे छिपा हुआ, ३ सीपसे, ४. मोतीकी, ५ हृदयकी बात वाणीसे प्रस्फुटित हुई, ६ चित्र, प्रेयसी, ७. सचाई-सादगी, ८. चुभन, ९. मित्रतापूर्ण व्यवहारसे, १०. हार, ११. श्रेष्ठ, १२. चाँदी जैसे उज्ज्वल अँधियारे।

उनका तग़ाफ़ुल[1], उनकी तवज्जः[2]
इक दिल, उसपर लाख तहलके
उनकी तमन्ना, उनकी मुहब्बत
देखो सँभलके, देखो सँभलके
ग़मने उठाये सैकड़ों तूफ़ाँ
दिलने बसाये लाख महलके
पलमें हँसाओ, पलमें रुलाओ
पलमें उजाले पलमें धुँदलके
हमने न समझा तुमने न जाना
दिलने मचाये लाख तहलके
लाख मनाया लाख भुलाया
नैन कटोरे भर-भर छलके
कितने उलझे कितने सीधे
रस्ते उनके रंग महलके
कड़ियाँ झेलीं पापड़ बेले
झलके अब तो मुखड़ा झलके

दो नैन कमल

दो नैन कमल
घूँघटमें घनेरी रात लिये
आँचलमें भरी बरसात लिये

---

१. उपेक्षाभाव, २. ध्यान आकर्षित।

कुछ पाये हुए, कुछ खोये भी
कुछ जागे भी, कुछ सोये भी,
चंचल ऊषाके बान लिये
गम्भीर घटाका मान लिये
सावनके सजल संगीत भरे
कुछ हार भरे कुछ जीत भरे
कुछ बीते दिनोंकी करवट-सी
कुछ आते दिनोंकी आहट-सी
किन गलियों दीप जलाये सखी !
यह भँवरे कित मँडलाये सखी !
सपनोंसे बोझल-बोझल
दो-नैन कमल

कुछ घबराये कुछ शर्माये
कुछ शर्मा-शर्मा इतराये
सखि ! भेदी भेद न पा जाये
कुछ उलझी-सुलझी आशाएँ
कुछ बूझी-बूझी भाषाएँ
कुछ बिखरे-बिखरे राग लिये
कुछ मीठी-मीठी आग लिये
अनुराग लिये वैराग लिये
मतवाले मनको रोग दिया
सखि ! किस बिरहनने जोग लिया ?
नैनोंसे ओझल-ओझल
दो नैन कमल

ग़ज़ल

रह गई शर्मे-ना-शके[1] बाई
भूलने वाले तेरी याद आई
अल्लाह-अल्लाह नाज़-फरमाई
ऑख झपकी थी जुल्फ़ लहराई
इस तरफ़ चारासाजिए-पैहम[2]
उस तरफ़ नाज़े-आबलापाई[3]
वोह भी आजर्दः ए-निगाह रहे[4]
दिल ही तनहा[5] न था तमाशाई[6]
८ ज़िन्दगी थी कि काकुले-बरहम[7]
आप सुलझाई आप उलझाई
मंज़िलें बढके खुद क़दम लेती
मै ही आग़ाज़े-रम[8] न कर पाई
मैने एक गीत गुनगुनाया था
बढ गया और रंजे-तनहाई[9]
भूलने वाले भूलकर खुश थे
याद आई तो बार-बार आई

---

१. वेसब्री, वेचैनीकी लाज, २ लगातार चिकित्साका प्रयास, ३ पॉव-के छालोपर अभिमान, ४ आँखो-आँखोमे अप्रसन्न, ५. अकेला, ६ तमाश देखनेवाला, ७ बिखरी हुई जुल्फे, ८. दौडनेकी शुरूआत, ९ जुदाईक रज ।

इल्तजा[1] इतनी बेअसर तो न थी
हाये पिन्दारे-ना पज़ीराई[2]
बारहा[3] हमने पी लिये आँसू
बारहा आपको हँसी आई
दिलका अन्दाजे-शर्मसार 'अदा'
निगाहे-नाज़ भी तो पछताई

फ़रेबकारी तखय्युलपर[4] जो इतराये
अब ऐसे सरकशो-नादाँको[5] कौन समझाये ?
हज़ार गुंचोंने[6] चाहा अलग-थलग रहना
जो कोई शोख़ किरन आप ही उलझ जाये
गिरह कुशाइए-शबनमकी[7] दाद क्यों दें, गुल
हँसीके साथ ही आँखोंमें अश्क भर आये
निगाहे-क़हकी[8] गर्मीकी ताब क्या लाते ?
निगाहे-महकी[9] शोख़ीसे भी जो कुम्हलाये
तेरी निगाहकी हैरानियोंके अफ़साने
मेरी निगाहकी नादानियोंने समझाये
तुम्हें तो हुस्नकी ज़ोलीदगीसे[10] शिकवा था
'अदा' यह किसने निगाहोंके राज़े[11] सुलझाये !

---

१ प्रार्थना, २ अस्वीकृतिका अभिमान, ३. बार-बार, ४ छल-प्रपंचके विचारोपर, ५. उद्दण्ड और मूर्खको, ६. कलियोने, ७. शबनमकी समस्या हल करनेकी तारीफ क्या करे, ८ दैवी कोपकी, ९. सूर्यकी रोगनीसे, १०. पेचीदगियोसे, उलझावसे, ११ भेद ।

ग़ज़ल

तूफ़ाँ उठा-उठा दिये हैं
जब इश्क़ने हौसले किये हैं
किस-किसकी नजर बचा-बचाकर
आँसू ग़मे-जीस्तने[१] पिये हैं
तारीक[२] थीं जिन्दगीकी राहें
यादोंके दिये जला लिये हैं
ऐ हाले-तबाह[३]! ओ-क़ल्बे महज़ूँ[४]!
कुछ हो न सका तो हँस दिये हैं
मत पूछो निगहे-फ़ित्नए-सामाँ[५]
किस आस पै आज तक जिये हैं
तकमीले-रसूमे-ग़म[६] हुई है
जब चाक जुनूँने सी लिये हैं
ए हुस्ने-सलूक-ओ-लुत्फ़े-एहसाँ !
किस नाजसे उसने ग़म दिये हैं
दिल जान रहा है, हाल अपना
कहनेको बहुत लिये दिये हैं
हाँ बज़्मे-सुखनके हमसफ़ीरो[७]
कुछ सोचके होंट सी लिये हैं

---

१ जिन्दगीके दुःखोंने, २ अन्धकारपूर्ण ३ खराब-खस्ताहाल, ४ उदास दिल, ५ षड्यन्त्रीकी दृष्टि, साजिशोंकी आँखे, ६. दुःख उठानेके रिवाजकी पूर्त्ति, ७ मुशाइरेके साथियो ।

ग़जल

नाज़ उठे कब दीदएतरके[1]
हँस-हँसकर खाये हैं चरके
किसके सर इलज़ाम धरोगे
बेपरवा अन्दाज़ - नज़रके
दिन भी रास आयें कि न आयें
रातें तो काटीं मर - मरके
आँख उठी थी बेगाना-सी[2]
खाये है दिलने ये भी चरके
रातने तुमको लूटा होगा
हमने धोके खाये सहरके[3]
किसको ख़बर थी हँसते-हँसते
राज़[4] खुलेंगे दीद-ए-तरके
थक गई आँखें मंज़िल तकते
पाँव हुए हैं मन-मन भरके
टूटी माला कौन समेटे
बिखरे सपने जीवन भरके
मोती बिखरे सपने टूटे
क्या-क्या हैं एहसान सहरके
आज दिवाने खुल खेलेंगे
उमरें बीतीं आहें भरके



---

१. अश्रुपूर्ण नेत्रोके, २ अनजान-सी, ३ प्रातःकालके, ४. भेद ।

'अनीस'—सुश्री अनीसबानो

गजल

आपकी नजरोंके फिरते ही यह सामाँ[1] हो गया
मुनक़लब[2] दुनिया हुई आलम परेशाँ[3] हो गया
अल्लह-अल्लह वह नसीमे-सुबहकी[4] अठखेलियाँ
ग़ुञ्चए-दिल[5] खिलते ही महवे-गुलिस्ताँ हो गया
अपनी वहशतकी तरक्की हदसे गुजरी ऐ जुनूँ!
हाथको जुम्बिश हुई और चाक दामाँ[6] हो गया
आपके कहनेसे कहती हूँ फ़साना हिज्रका[7]
फिर न कहिएगा कि मेरा दिल परेशाँ हो गया
बदनसीबीकी हदें क्या पूछती हो ऐ 'अनीस'!
जिस चमनमें दो घड़ी बैठी बयाबाँ हो गया



१ हाल, २ विरोधी, ३ ससार परेशान, ४ प्रात कालीन पवनकी, ५ हृदय-कमल, ६ गिरेबान फट गया, ७ विरह-कथा।

'आफ़ताब'—सुश्री आफ़ताबजहाँ देहल्वी

ग़ज़ल

ख़ुशीका ज़िक्र क्या, ग़मका गिला[1] क्या
न हो मरना तो जीनेका मज़ा क्या
नहीं मिलता मुहब्बतका निशाँ[2] भी
यह बदली है ज़मानेकी हवा क्या
गुनाहे - इश्क़की[3] मैं मुर्तकिब[4] हूँ
ज़रा देखें वे देते हैं सज़ा क्या
तसव्वुरमें[5] वही बातें हैं उनसे
जुदा होकर वे होते हैं जुदा क्या
करम[6] करते नहीं, चलिए न कीजे
सितमकी लज़्ज़तोंका पूछना क्या
डरे मेरी बला सैलाबे - ग़मसे[7]
ख़ुदा जब आश्ना[8] है, नाख़ुदा[9] क्या
नहीं कुछ ऐतबारे - ज़िन्दगानी[10]
मगर दिलमें तमन्नाएँ[11] है क्या-क्या
मसर्रत[12] है न उल्फ़त है न राहत[13]
इलाही! तेरी दुनियाको हुआ क्या
जहाँ हो 'आफ़ताबे' - आलमआरा
वहाँकी रौशनीका पूछना क्या

---

१ शिकायत, २ चिह्न, ३ प्रेम-अपराध करनेकी, ४ कुसूरवार, ५ ध्यानमें, ६ कृपा, ७ दु:खोंकी बाढ़ोसे, ८ दयालु, ९ मल्लाह, १०. जीवनका विश्वास, ११ अभिलाषाएँ, १२ खुशी, १३ चैन।

'इक़बाल'—सुश्री इक़बाल मारूफ़

कौन द्वारे आया ?

यह कौन द्वारे आया, यह कौन द्वारे आया ?
नैन भर आये बिछुड़े सजनको देखे मन भर आया
सुन्दर मुखड़ा जैसे दीपक मन-मन्दिर चमकाया
मन-मन्दिरके दिये जले और मन मोग सुख पाया
डूबती नैया लगी किनारे आज खिवैया आया
फूल कँवल नैना मुसकाये जीवन जग पै छाया
कली-कली मुसकावत है और पलटी जगकी काया
बादल लहराये अम्बरपर बिजलीका मन बल खाया
दुखने दम तोड़ा, हिचकी ली, बिरहा मन कलपाया
सुख आनन्द पियाके दर्शन रंग खुशीका छाया
आज गगन पै चाँद पूनमका प्रेम-सन्देसा लाया
दो हिरदे मिलकर धड़कत है, और जीवन मुसकाया
प्रेमने ली अँगड़ाई मनमें प्रीतने गीत सुनाया
यह कौन द्वारे आया, यह कौन द्वारे आया ?

विनती

आ भी जा मोरी नगरीके राजा, बनके अम्बर, नगरिया पै छा जा
मोरे होंटोंको हँसना सिखा जा, बनके आशा तू मनमें समा जा
मोरी सूनी नगरिया बसा जा

मोरे जीवनमें छाया अँधेरा, यह बता दे कि क्या तू है मेरा
आके इक बार तू मुसकरादे, मोरे जीवनके दीपक जला जा
मोरे संसारको जगमगा जा
आके बस जा नगरियामें मोरी, मोंसे प्रीतम न कर जोरा जोरी
काहे की थी, मोरे मनकी चोरी, प्रेमको आके फिरसे जगा जा
मनके मन्दिरको तू जगमगा जा
तोरे दर्शनको अँखियाँ तरसती, मोरे प्रीतम बिना सूनी बस्ती
आ, कि छा जाये दुनिया पै मस्ती, मोरी आँखोंको मदिरा पिला जा
मोरे प्रानोंसे प्यारे तू आ जा
राह तकती हैं अँखियाँ तुम्हारी, मोरी अँखियाँ वह बिरहाकी मारी
मोरी अँखियोंसे आँसू हैं जारी, मोरी अँखियोंको हँसना सिखा जा
मोरे नैनोंमें तू मुसकरा जा
तोरी डगरीमें अँखियाँ बिछा दूँ, बनके दीपक मैं जीवन जला दूँ
मनको मैं भेंट तोरे चढ़ा दूँ, एक झलकी सजनवाँ दिखा जा
मोरे नैनोंको अमृत पिला जा
आ भी जा मोहे मुखड़ा दिखा जा

परदेशी बालम

बरखा कैसे मनको रिझाये
जीवन उन बिन क्यों कल पाये
नयना नीर बहाये
बलम मोरे आज विदेस बसाये
चाँद गगनके मुख न दिखा तू
काली बदरीमें छुप जा तू

मन मोरा भर आये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
जाने कैसे बीतें रतियाँ
याद आवेंगी उनकी बतियाँ
क्यों बादल घिर आये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
पवन चले कलियाँ मुसकायें
भौरें झूमें पंछी गायें
कोयल कूक सुनाये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
प्रीतकी निर्मल रीति निभाना
बिरहिनको साजन न भुलाना
जीवन रूठ न जाये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
तड़पत हूँ बिन नीर मछलिया
जीवन है या कोई पहलिया
याद तोरी तड़पाये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये
मोर बलम जब लौट आवेंगे
नैननमें जब मुसकावेंगे
फिर जीवन कल पाये
बलम मोरे आज बिदेस बसाये

'इम्तियाज़'—सुश्री इम्तियाज़ बेगम

आज रातको

सजनको अर्पन करनेको प्रीतके गजरे लायेंगे
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे
मैं तो आज न शर्माऊँगी
देखकर उनको मुसकाऊँगी

फूल हँसीके चुनते-चुनते ख़ुद ही वह थक जायेंगे
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे
रूपकी मैं छलकाऊँगी
आज उन्हें बहकाऊँगी

मस्त-ओ-बेख़ुद उनको मेरे मादक नैन बनायेंगे
आज रातको सजना मेरे-सपनोंमें आ जायेंगे
फिर नाचूँगी, इठलाऊँगी
आज मैं रानी बन जाऊँगी

मेरे मनके राजा हैं वे, राजा बनकर आयेंगे
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे
दो हिरदे आपसमें मिलेंगे
आशाओंके फूल खिलेंगे

जीवनकी सुन्दर बगियाको खुशबूसे मँहकायेंगे
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे

देखो सखियो यूँ न सताओ
अब तो सो जाने दो मुझको

मै न मिली उनसे तो फिर वह मुझसे रूठ न जायेंगे ?
आज रातको सजना मेरे सपनोंमें आ जायेंगे

७

'इशरत'—सुश्री इशरतजहाँ

ग़ज़ल

फिर किसीने नज़र चुराई है
जज़्बए-दिल[1] तेरी दुहाई है
जिस तरह बाग़में बहार आये
दिलमें यूँ तेरी याद आई है
लुत्फ़े-सैय्याद[2] जिसमें शामिल हो
वह असीरी[3] नहीं रिहाई है
इश्क़ जब तक न साज़गार हुआ
ज़िन्दगी किसको रास आई है
न तसव्वुर कोई, न कोई ख़याल
दिलमें तेरी ही धुन समाई है
ऐ सबा[4] दे ख़बर असीरोंको[5]
फिर चमनमें बहार आई है
बुलबुलें चुप हैं, गुल ख़मोश-ख़मोश
इक उदासी चमन पै छाई है
जब मिली है तेरी नज़रसे नज़र
ज़िन्दगी जैसे मुसकराई है
जामे-लबरेज़[6] देखकर 'इशरत'
चश्मे-मख़मूर[7] याद आई है

---

१. हृदयके भाव, २. अहेरीका आनन्द, ३. बन्दी जीवन, ४. वायु, ५. बन्दियोंको, ६. भरे प्याले, ७. नशीली आँखें ।

'कँवल'—सुश्री कँवल नसीम कंजाही

ग़ज़ल

गाहे-गाहे[1] यूँ भी हुआ है
फूल खिले दिल चीख उठा है
कितनी यादें जाग उठी हैं
जब भी कोई गीत सुना है

कैसी ग़ज़ल और शेर कहाँ के
शायद कोई ज़ख़्म रिसा है
कितनी हसीं है आज यह दुनिया
शायद तुमने याद किया है

फूल-से कैसे खिल गये दिलमें
आपने कुछ इरशाद[2] किया है
कलसे 'कँवल' का रोते-रोते
देखो तो क्या हाल हुआ है



---

१. कभी-कभी, २. फर्माया ।

'कनीज़'—सुश्री कनीज़ मैमूना

नज़्म

जा रही है इक हसीना मैंड़पर
गाँवसे कुछ फ़ासलेपर नंगे सर
भूककी शिद्दतसे[1] है चेहरा निढाल
फ़र्ते-ग़मसे[2] आर्ज़ूएँ पायमाल[3]

चश्मसे[4] लबरेज़[5] पैमाने अयाँ
आँसुओंसे ग़मके पैमाने अयाँ
हाय यह उठती जवानीका जमाल[6]
यह हसीना और रोटीका सवाल

इसको खाना पेटभर मिलता नहीं
कोई ग़मकी दास्ताँ सुनता नहीं
गर्दे-रहसे[7] हैं अटे मासूम[8] बाल
ख़ुश्क होकर रह गये रंगीन बाल

ज़र्द[9] मिट्टीकी है आरिज़[10] पर नक़ाब
जिस तरह बादलकी तहमें माहताब[11]
हसरतो-अरमान[12] मुँह फेरे हुए
हादसाते-ज़िन्दगी[13] घेरे हुए

---

१. अधिकतासे, २ दु:खोके बोझसे, ३. इच्छाएँ मिटी हुई, ४. आँखसे, ५. भरे हुए, ६ रूप, ७ मार्गकी धूलमे, ८ कोमल, ९. पीली, १०. मुख-पर, ११. चन्द्रमा, १२ अभिलाषाएँ, १३. जीवनकी दुर्घटनाएँ।

ओढ़नेको इक दुपट्टः भी नहीं
आह गर्दू[1] तू किसीका भी नहीं
ज़िन्दगी गरदाब[2] में आई हुई
आबरूकी नाव चकराई हुई

आह हिन्दोस्तान ! तेरी लड़कियाँ
इस तरहसे ठोकरें खायें कहाँ
आह ! तेरी अब यह हालत हो गई
तेरी क़िस्मत मुँह छिपाकर सो गई

दिल भर आता है तेरी बरसातसे
दर्द उठता है तेरे नग़मातसे[3]
आह ! हिन्दोस्तान ऐसा इन्क़िलाब
सरनगूँ[4] है तेरे दामनमें शबाब[5]

है ज़मानेमें सकूँ[6] शायद महाल[7]
अब मै समझी ज़िन्दगानीका मआल[8]



१ आकाश, २ भँवरमे, ३. संगीतसे, ४. नत-मस्तक, ५ यौवन, ६ चैन, ७ मुश्किल, ८ परिणाम ।

'क़मर'—सुश्री क़मर सुल्तानबेगम देहल्वी

गीत

निसदिन दीप जलाये पगली पाये घोर अँधेरा
कौन कहे अब उसे हटीली ! अन्त यही है तेरा
रैनकी गोदी ख़ाली करके चाँद-सितारे भागे
अँधियारे हैं पीछे-पीछे, ज्योती आगे-आगे
होते-होते नैननवासे ओझल हुआ सबेरा
छाया घोर अँधेरा
अन्त यही है तेरा

दूर-दूर तक एक उदासी, सड़ी-बुसी इक छाया
धरतीसे आकाश तक उड़कर आशाने क्या पाया
चारों खूँट चली अँधियारी चिन्ताओंने घेरा
छाया घोर अँधेरा
अन्त यही है तेरा
कौन चुने अब टूटे तारे ! जोत कहाँसे आये
कौन गगनपर सेज बिछाये ! फूल तो हैं मुरझाये
कौन है जो इस नगरीमें अब आकर करे बसेरा ?
निसदिन दीप जलाये पगली पाये घोर अँधेरा
कौन कहे अब उसे हटीली ! अन्त यही है तेरा

'क़मर'—सुश्री क़मर जहाँ बेगम

तहज़ीबे-जदीदका नौहा[1]

नये फैशनके दिलदादः[2] ग़जब यह कैसा ढाते हैं
सरे बाज़ार वे नामूसको[3] अपने फिराते है
वे निसवानी शराफ़त[4] और इज़्ज़तको मिटाते हैं
कि अपने दोस्तोंके साथमें उनको नचाते हैं

समझते हैं यह जाहिल[5] अपने माँ-बाप और दादाको
ख़ुदाकी शान है ग़ुन्चे[6] गुलों पै मुसकराते है
हया ईमानका जुज़[7] है, यही ज़ेवर है औरतका
जो आक़िल है कहीं वे अपनी दौलतको गँवाते हैं

'क़मर' हमने अदा अपना किया इक फ़र्ज़ तब्लीग़ी
ख़ुदा रक्खे उन्हें जो हमको दीवाना बताते हैं



---

१ वर्त्तमान सभ्यतापर शोक पूर्ण कविता, २ नवीन सभ्यताके पुजारी, ३ पत्नीको, ४. स्त्रियोचित भद्रता, ५ मूर्ख, ६ कलियाँ, ७ अग, भाग ।

'काश'—सुश्री कनीज़ फ़ातमा

ग़ज़ल

तुम्हारी यादसे दिलको सजाके आई हूँ
मैं और ख़ानए-उल्फ़त[1] बनाके आई हूँ
तख़ैय्युलातकी[2] वादीमें[3] छुपके आलमसे[4]
किसीकी गोदको अक्सर सजाके आई हूँ
वह नशअ् ख़ेज़िए-उल्फ़त[5], वह ज़िन्दगीका शबाब[6]
हसीन होंटोंसे अक्सर पिलाके आई हूँ
रुख़ोंपै[7] आज भी इक अर्क़ सद नदामत[8] है
गुलोंका रंग चमनसे उड़ाके आई हूँ
तू 'काश' मुझसे न पूछे शबाबकी तफ़सीर[9]
मेरे हबीब[10]! मैं सब कुछ लुटाके आई हूँ



---

१. प्रेम-प्रासाद, २. कल्पनाओंकी, ३. घाटीमें, ४ संसारसे ५. मादकता लानेवाला प्रेम, ६. यौवन, ७. कपोलोंपर, ८ शर्मका पसीना, ९ कहानी, १० प्रियतम ।

'क़ैसर' – सुश्री क़ैसर शमीम

काँटोंका बन

पग-पग होती है उलझन
जीवन है काँटोंका बन
मर - मरके भी जीते है
जानसे प्यारा है जीवन !
अब तो रह - रहकर यूँ ही
बेकल हो उठता है मन
उचटा जी फुलवारीसे
याद आया उनका आँगन
साँझ - सवेरे डसता है
अपने घरका सूनापन
मन - ही मनमें घुटती है
मेरी आशा है बिरहन !
अब तो हर - इक आहटपर
बढ़ती है दिलकी धड़कन
हमपर क्या बीती मत पूछ
रोता गुज़रा है सावन
उनका चेहरा कुम्हलाया
टूट गये कितने दरपन !
कैसी धूप पड़ी 'क़ैसर'
सूख गये फूलोंके तन

'ख़ालिद:' – सुश्री ख़ालिदा बेगम जबलपुरी

निगाहोंसे अपनी वह तड़पा रहा है
तबस्सुमके साग़र[1] वह छलका रहा है
यह दिल जोशे-तूफ़ाँसे घबरा रहा है
वह हर्फ़े-ग़लत[2] है मिटा जा रहा है

मुहब्बतकी दुनिया निराली है सबसे
अनोखी यह बज़्मे-ख़याली है सबसे

हर-इक रंगसे आज़माया गया हूँ
चढ़ाकर नज़रसे गिराया गया हूँ
भरी बज़्मसे[3] मैं उठाया गया हूँ
कहाँ फिर कहाँसे मैं लाया गया हूँ

मुहब्बतकी दुनिया निराली है सबसे
अनोखी यह बज़्मे-ख़याली है सबसे

तड़प ख़ालद: दिलमें होती है अक्सर
मुसीबतमें हर आँख रोती है अक्सर
सुनो दिलकी धड़कन, यह कहती है अक्सर
यह शमअ़[4] है वोह जलके बुझती है अक्सर

मुहब्बतकी दुनिया निराली है सबसे
अनोखी यह बज़्मे-ख़याली है सबसे

---

१. मुसकानके प्याले, २. अशुद्ध अक्षर, ३. महफिलसे, ४. मोमवत्ती ।

मशरिककी औरत

कुर्बाने-मुहब्बत[१] हूँ
तसवीरे - मसर्रत[२] हूँ
फूलोंकी मैं निकहत[३] हूँ
दुनियाकी मै जन्नत हूँ
मशरिक़[४] की मै औरत हूँ

दरियाए - लताफ़त[५] हूँ
इक गौहरे - इस्मत[६] हूँ
इक राज़े - हक़ीक़त[७] हूँ
परवानेकी फ़ितरत[८] हूँ
मशरिक़की मैं औरत हूँ

मैं पैकरे - फ़ितरत[९] हूँ
मानूसे - मुहब्बत[१०] हूँ
सरमायए - राहत[११] हूँ
मैं हुस्ने - क़यामत[१२] हूँ
मशरिक़की मैं औरत हूँ

---

१ प्रेमपर न्योछावर, २. आनन्द-चित्र, ३ सुगन्ध, ४ पूर्व देशकी, ५ मृदुलताकी नदी, ६. सतीत्वका मोती, ७ वास्तविकताका भेद, ८ प्रेमीपर बलि होनेवाले परवाने जैसा स्वभाव, ९. चातुर्य्यका आकार, १०. प्रेमसे परिचित, ११. सुख-चैनका भण्डार, १२. प्रलयंकारी रूप ।

शीरींकी सबाहत[1] हूँ
लैलीकी मलाहत[2] हूँ,
फ़रहादकी ग़ैरत[3] हूँ
मजनूँकी मैं हसरत[4] हूँ
मशरिक़की मैं औरत हूँ

शमशीरे-हलाकत[5] हूँ
तफ़सीरे-क़यामत[6] हूँ
चंगेज़की ख़सलत हूँ,
महमूदकी आदत हूँ
मशरिक़की मैं औरत हूँ



१. शीरी जैसे रूपवाली, २. लैली जैसे लावण्यवाली ३. फ़रहाद जैसी लाजवाली, ४. अभिलाषा, ५. कातिल तलवार, ६. प्रलयकी कहानी।

ख़ुर्शीद—सुश्री ख़ुर्शीदआरा बेगम
अमरावती [बरार]

ग़ज़ल

राज़े-उल्फ़त[1] छुपाये बैठे हैं
आग दिलमें दबाये बैठे है
आस झूटी हम उनके आनेकी
हाय! कबसे लगाये बैठे है
दिल बहलता है, इन खयालोंमें
फ़र्ज़[2] करते है आये बैठे है
दिल है, मसरूफ़े-गिरिया[3] लेकिन हम
हँसती सूरत बनाये बैठे हैं
घरके गोशे[4] को आख़िरिश 'ख़ुर्शीद'
ग़मका दफ़्तर बनाये बैठे हैं



---

१. प्रेमभेद, २. कल्पना, ३. रोनेमे व्यस्त, ४. कोनेको।

'ग़ज़ाल:'—सुश्री ग़ज़ाल: जमाल

कभी आँसू बहाती हूँ कभी फ़रियाद करती हूँ
तुझे ऐ भूलने वाले मैं अब तक याद करती हूँ
मुझे अपनी रिहाईकी तवक्क़अ[1] है, न हसरत[2] है
यह मुश्ते-पर[3] भी नज़रे-मर्ज़िए-सैय्याद[4] करती हूँ
हसीं माज़ीकी[5] कुछ यादें हैं, कुछ आँसू हैं, कुछ नाले
उन्हींसे ख़ानए-वीराने-दिल[6] आबाद करती हूँ
तग़ाफ़ुलमें[7] भी शायद कोई पहलू है तवज्जोहका[8]
कि तुम जितना भुलाते हो मैं दूना याद करती हूँ
'ग़ज़ाल:' काश दामनमें किसीके जज़्ब[9] हो जाते
यह आँसू आह जिनको ख़ाकमें बरबाद करती हूँ



१. आशा, २. इच्छा, ३. मुट्ठी भर पंख, ४. चिडीमारकी इच्छाकी नजर, ५. भूतकालकी, ६. उजड़ा दिल ७. उपेक्षामे, ८. ध्यान देनेका, ९. समा जाते, घुलमिल जाते ।

'ग़ज़ल' – सुश्री हुस्नआरा बेगम बरेलवी

बाँसरी बजाये जा

ओ हुस्ने-काफ़िर[1]
मस्तो - नाज़मुतरब[2]
शोखे - लबे-मुग़निय[3]
ओ नशीली साहर[4]
राज़े-ग़म[5] सुनाये जा
बाँसरी बजाये जा
ख़ाके-दश्त[6] उड़ाये जा
बाँसरी बजाये जा
मेरे दिलकी अबतरी[7]
और तेरी बेखुदी[8]
मेरा हाले-जिन्दगी
तेरी ज़ुल्फ़े-अम्बरी[9]
राज़े-ग़म सुनाये जा
बाँसरी बजाये जा
खाके-दश्त उड़ाये जा
बाँसरी बजाये जा

---

१. काफिर हुस्न वाली, ईमान डिगाने वाली रूपवती, २. मस्तानी हाव-भाव वाली गायिका, ३ गायिकाके चचल ओठ, ४ जादूगरनी ५. गमके भेद, ६ मार्गकी धूल, ७. शोचनीय स्थिति, ८. बेपरवाही, ९ कस्तूरी सुगन्धवाली जुल्फे ।

ताबिशे - जमाल[१] तू
नाज़िशे - खयाल[२] तू
रुख़सते - कमाल तू
है दिले -ग़ज़ाल[३] तू
राज़े-ग़म सुनाये जा
बाँसरी बजाये जा
ख़ाके-दश्त उड़ाये जा
बाँसरी बजाये जा

नदी किनारे

दहक़ाँकी[४] प्यारी लड़की नदी पै जल्वःज़ा[५] है
सारीका सब्ज़ आँचल सरसे ढलक रहा है
चितवनकी सादगीमें इक बर्क़ शुअ़लः[६]ज़ा है
जिसपर नज़र पड़ी वह शुअ़लः बना हुआ है

होंटों पै है तबस्सुम[७] नजरें झुकी हुई है
मासूमे-हुस्ने-बेख़ुर्द[८] अँगड़ाई ले रहा है
हाथोंमें चूड़ियोंकी रंगीं लहरियाँ है
इक नीमबाज़ ग़ुञ्चः[९] कानोंमें हँस रहा है

---

१ प्रकाशवान सौन्दर्य्य, २. कल्पनाओका अभिमान, ३. मृगनयनीका दिल, ४. किसानकी, ५ रौनक बढा रही है, ६ बिजली-सी चमक रही है, ७. मुसकान, ८ भोला अनजान रूप, ९. अधखिली कली।

मासूम सादगीमें[1] लाखों तजल्लियाँ[2] है
माथेका सुर्ख़ टीका शुअ़ला बना हुआ है
मिज़गाँ में[3] मस्त पुतली रक़्साँ[4] है या सितमगर
काली घटामें कोई अँगड़ाई ले रहा है

गेसूसे[5] नर्म झोंके कुछ छेड़ कर रहे है
इन प्यारी अँखड़ियोंमें साग़र[6] छलक रहे है
बिजली तड़प रही है हर-हर नज़रमें क़ातिल
हर इक अदामें ज़ालिम शुअ़ला भड़क रहा है

मासूमियतकी पुतली, देवी नजाकतोंकी
तेरी अदाए-सादा जन्नत नहीं तो क्या है



---

१ भोली भाली बनावटहीनतामे, २ चमत्कार, ३ पलकोके बालोमे, ४ थिरकते हुए, ५ जुल्फोसे, ६. मदिरा-प्याले।

'गायत्री' – सुश्री गायत्री देवी

पुकार

यह हुस्नो-इश्क़की[1] रंगीनियाँ नहीं दरकार
शबे-फ़िराक़की[2] बेचैनियाँ नहीं दरकार
मुझे न चाहिए एहसासे-दर्द, बे-दरमाँ[3]
नहीं है दिलमें किसीका खयाल या अरमाँ

शराबो-इश्क़की मस्तीकी एहतियाज[4] नहीं
किसीका क़र्ब[5] मेरे शौक़का इलाज नहीं
सकूनबख़्श[6] नहीं है किसीकी पैहम[7] याद
किसीके ग़ममें नहीं हूँ खराब और बरबाद

शआरे-हुस्नो-मुहब्बत हुआ करे कुछ भी
मेरी बलासे किसीकी अदा करे कुछ भी
ग़मो-अलम मेरे हमदम बने खुदा न करे
हुआ ही क्या कोई मुझसे अगर वफ़ा न करे

नहीं है कैफ़ियते-इन्तज़ारकी हाजत[8]
अभी न चाहिए मुझको सिमतनुमा लज़्ज़त

---

१ रूप और प्यारकी, २. विरह-रात्रिकी ३. दुःख दर्द इलाज विना, ४. आवश्यकता, ५. सामीप्य, मिलन, ६ चैन देनेवाली, ७ लगातार, ८. इच्छा ।

लताफतें[1] मेरे हकमें अभी है दारो-रसनें[2]
मुझे पुकार रहा है मेरा अजीज वतन
अभी तो सोई हुई कौमको जगाना है
वतनको जन्नते-अरजी[3] अभी बनाना है

दूसरा रुख

सो भी जा दोस्त! कि अफकारसे[4] आजाद है तू
ज़िन्दगी तेरी अभी मरकजे - आलामें[5] नहीं
तू समझती है, कि पाइन्दः[6] है लमहाते-सकू[7]
सो भी जा दोस्त कि तू वाकिफे - अंजाम नहीं

मैं तो जागूंगी अभी मेरे लिए नींद कहाँ
मेरी किस्मतमें नहीं ख्वावके शीरीं लमहे[8]
हाँ मगर बेवसी हर रात चली आती है
कर्बे - बेख़्वाबी[9] दबे चैने - खयालात लिये

बारे - अन्दोहसे[10] है मेरे पपोटे बोझिल
तू समझती है यह हैं ख़्वावके एहसास[11] से चूर
ज़हन[12] है मेरा ग़मो-फ़िक्रकी यूरिश[13] से निढाल
मुज़महल[14] और थके मान्दे है विजदानो-शऊर[15]

---

१. खुशियाँ, २ फाँसी-सूली, ३. स्वर्ग, ४. चिन्ताओसे, ५. दुःखोका केन्द्र, ६. स्थायी, ७ सुख-चैनके दिन, ८. मधुर क्षण, ९. वास्तविक व्यथा, १०. दु खोके भारसे, ११. सुख-स्वप्नसे चूर, १२. मन, मस्तक, १३ दु ख और चिन्ताओके आक्रमणोसे शिथिल, १४ थके हुए, उदास, १५. ज्ञान-शक्ति, अक्ल।

लमहा-लमहा[1] मेरी ज़ीस्तका आज़ुर्दा-ओ-ख़्वार[2]
हसरते-ख़्वाब[3] कहाँ और कहाँ क़ल्बे-हज़ीं[4]
ज़िन्दगीको न समझ मजमुअए-कैफ़ो-सरूर[5]
यह हक़ीक़त है कोई ख़्वाब तरबनाक[6] नहीं

ख़ुश रहे तू तेरी आसूदगी[7] रास आये तुझे
हाँ मगर कलके तसव्वुरसे तू बेगाना[8] न हो
ज़िन्दगी तेरे लिए ख़्वाब ख़ुश आइन्द सही
ख़्वाबका और भी इक रुख़ है, यह एहसास[9] रहे



---

१ एक-एक पल, २ जिन्दगीका व्यर्थ, ३. आशा-स्वप्न, ४. दु:खी मन, ५. आनन्द और मस्तीका मिलाप, ६. आनन्ददायक, ७. खुशहाली, सुख, ८. अनभिज्ञ, ९ ध्यान, आभास ।

'ज़फ़र' – सुश्री ज़फ़र बानो

उनके दामनसे फूल बिखरे है
कहकशॉके[1] नजूम[2] निखरे है
साग़रे-गुल[3] पै मैके[4] क़तरे है
या मेरे दिलके दाग़ उभरे हैं
रू-ब-रू सामना हुआ जबसे
चॉद-सूरज नजरसे उतरे है
कोई नाज़ुक खराम[5] आता है
आसमॉसे फ़रिश्ते उतरे है
कह रही है महक नजारोंकी
वह अभी इस तरफ़से गुजरे है
हर क़दमपर यही हुआ एहसास[6]
जिन्दगीमें हसीन ख़तरे है
कोई आहट नहीं है यादोंकी
प्यारके गीत भूले - बिसरे है
कैसे कह दूॅ कि आप आ जायें
मेरी दुनिया पै ग़मके पहरे हैं
चॉदनीकी खमोश लहरोंमें
शोख यादोंके अक्स उभरे है

---

१ आकाशगंगा, छाया-पथ, २ नक्षत्र, ३. फूलरूपी मदिरा-पात्रोमे, ४. शराबके, ५ मस्त चाल, ६ आभास ।

'जमाल:' – सुश्री बिलक़ीस जमाल: बरेलवी

दरियाके किनारे

पानी बहता चलता है
कुछ दुःख सहता चलता है

सन्नाटा-सा कुछ छाया है
पानी कुछ मुर्झाया है

लहरें हैं कुछ मैली-मैली
मौजें[1] हैं कुछ फैली-फैली

तारे झुक-झुक पड़ते हैं
पत्ते चुप-चुप झड़ते हैं

अब्र[2]के टुकड़े उड़ते हैं
कटते हैं फिर जुड़ते हैं

तारे झिम-झिम होते हैं
तायर[3] चुपके सोते हैं

शाखें सर-ब-गरेबाँ[4] है
बिल्कुल चुप और हैराँ हैं

चाँद भी है कुछ खोया-सा
कुछ जागा कुछ सोया-सा

---

१ लहरे, २. बादलके, ३ पक्षी, ४ मिली हुई, झुकी हुई ।

अब्रमें[1] छिप-छिप जाता है
हर तारेको चमकाता है
कुछ बहका-बहका चलता है
पानीमें भटकता चलता है
शबनम[2] टप-टप रोती है
जो आँसू है वह मोती है
जंगल चुपका सोता है
मंज़र[3] पर सन्नाटा है
हर पत्तेमें ख़ामोशी है
हर कोंपलमें बेहोशी है
हर ज़र्रा[4] चुप, हर क़तरा चुप
अफ़लाकका[5] एक-एक तारा चुप
सब गुलहाए रीहाँ[6] चुप हैं
चम्पाकी सब कलियाँ चुप हैं
दरियाकी सब मौजें[7] चुप हैं
बलखाती सब लहरें चुप हैं
सोती है गुलोंमें चुप खुशबू
झिलमिल होते हैं जुगनू

---

१. बादलोंमे, २ ओस, ३ वातावरणमे, ४. अणु, ५. आकाशका, ६. एक फूलका नाम, ७ लहरे।

चलती है हवा कुछ धीमे-धीमे
फूलोंकी फ़ज़ामें चुपके-चुपके
हलके-हलके गीत सुनाती
रुक-रुककर एक तान लगाती
भीगे-भीगे फूल रसीले
चुपके-चुपके कुछ हँसते-से
यह खामोशी और सन्नाटा
और यह साकिन[1] मौजे-दरिया
इन आँखोंसे क्या-क्या देखूँ
इस दुनियाका हर ज़र्रा देखूँ
यारब ! ये सब मंज़र[2] क्या हैं !
सहरा[3] क्या है, घर-दर क्या है
खामोशी क्या, सन्नाटा क्या है
आधी रातका दरिया क्या है
ये सब क्यों हैं, ये सब क्या है,
खुद मैं क्या हूँ 'जमाल:' क्या है



---

१. शान्त, २. दृश्य, ३ जगल ।

'ज़ुहा – सुश्री ज़ुहा जमाल

एहसासात

अपने हर तारे-नज़रमें गो इन्हें पाती हूँ मैं
फिर भी दिलकी उलझनोंमें हाय खो जाती हूँ मै
लज़्ज़ते-ग़म मेरी राहत[१], सोज़े-दिल[२] मेरा सकूँ[३]
तल्खिए - नाकामयाबीमें[४] मज़ा पाती हूँ मैं
वक्ते-रुखसत उनकी नज़रोंने जो सौंपी थी कभी
आज तक वह याद सीनेमें[५] निहाँ पाती हूँ मैं
इक तरफ उनकी उम्मीदें, इक तरफ़ मायूसियाँ[६]
ज़िन्दगीकी रहगुजरसे[७] यूँ गुजर जाती हूँ मै
उनसे यूँ मिलती हूँ अपने दिलकी खिलवत गाहमें[८]
जैसे कोई गुमशुदा-सी चीज़ पा जाती हूँ मै
चाँदको, तारोंको, गुलको, गुंचहाए-बाग़को
देखती हूँ और फिर मायूस[९] हो जाती हूँ मै
दर्दकी लज़्ज़तमें इतना लुत्फ़[१०] अब आने लगा
ज़िन्दगीकी इशरतोंको[११] भूलती जाती हूँ मै

---

१ सुख, २. दिलका दुःख, ३. चैन, ४ असफलतामे, ५. छिपी हुई ६. निराशाएँ, ७ मार्गसे, ८ एकान्तमे, ९ निराश, १०. आनन्द, ११. आनन्दोको ।

उनकी नज़रोंने न जाने चुपके-चुपके क्या किया
दिल बहलता ही नहीं गो लाख बहलाती हूँ मैं
लूट ली दुनिया तेरी शायद निगाहे-नाज़ने[१]
आज कुछ खोई हुई 'ज़हा'[२] तुझे पाती हूँ मैं



१ भावुक आँखोने, २. गौरागना, हजरते-फातिमाकी उपाधि ।

'ज़हा'—सुश्री 'ज़हा' तबस्सुम ख़ैराबादी

रहता है बस ख़याल ही तेरा तेरे बग़ैर
जीनेका इक यही है सहारा तेरे बग़ैर

अब वह जमाले-शाम[1] निशाते-सहर[2] कहाँ
दुनियासे कर लिया है, किनारा तेरे बग़ैर

तू रूठकर चला मगर इतना मुझे बता
किससे करूँगी मै तेरा शिकवा[3] तेरे बग़ैर
बेनूर[4] है बहारे-दो आलम[5] निगाहमें
धोका है अब हर-एक नज़ारा तेरे बग़ैर

आ और आके छीन ले रूहे-हयात[6] भी
मै क्या करूँगी जी के भी तन्हा[7] तेरे बग़ैर
दिल बस्तगीका[8] कोई ज़रिया[9] नहीं रहा
सूनी पड़ी है 'ज़हा'की दुनिया तेरे बग़ैर



---

१. सन्ध्याका सौन्दर्य, २ सुबहका आनन्द, ३ शिकायत, ४. बेरौनक, ५. ससारकी बहारे, ६ जीवन, ७ अकेली, ८. मनोरंजनका, ९ साधन ।

'ज़हा'—सुश्री ज़हा हाशमी बदायूनी

आपके पति जाम नवाई साहब एक बार ऐसे बीमार हुए कि उनके बचनेकी आशाएँ जाती रही। आप उनकी सेवा-शुश्रूषामे जी-जानसे जुट गई और तभी आपने 'बीमार शौहरके सिराहने' शीर्षक नज्म कही। जिसमे आपने अपने शौहरके आरोग्य लाभकी और बदलेमे अपने प्राण देनेकी दुआ माँगी। सयोगकी बात, पति अच्छे हो गये और उनके बदले आपने चारपाई पकड ली और २ अक्तूबर १९४२ ई० को अल्लाहको प्यारी हो गई। बीमारीकी हालतमे निम्न ५१ शेरकी नज्म आपने कहकर अपने तकियेमे रख ली थी, जो कि मृत्युके ४० दिन बाद मिली। इस नज़्मके १५ शेर यहाँ दिये जा रहे है—

जाँ गुसिल[1] है यह तख़ैय्युल[2] किस क़दर मेरे लिए
बाद मेरे तुम रहोगे नौहागर[3] मेरे लिए

घरमें आकर हस्ब आदत जब न पाओगे मुझे
ख़ाक उड़ाओगे न क्या-क्या दर-बदर मेरे लिए

शिद्दते-ग़ममें[4] बहेंगे सुर्ख़ आँसू आँखसे
खून रोयेगी तुम्हारी चश्मेतर[5] मेरे लिए

देखकर रोते तुम्हें मेरी लरज़ जाती है रूह[6]
है तुम्हारे दिल पै सद्मा[7] किस क़दर मेरे लिए

क्या करोगे बादमें जब आज मेरे जीते जी
हो परेशाँ और ग़मगीं[8] इस क़दर मेरे लिए

---

१. हृदय-विदारक, २ विचार, ३ शोक सन्तप्त, ४. दु खकी अधिकतामे, ५ अश्रु पूर्ण नेत्र, ६ आत्मा, ७. शोक, ८ रंजीदा।

कौन समझायेगा तुमको मौत है हर-एकको
बन न सकते थे क़वानीने-दिगर[1] मेरे लिए
वक्तपर आई किसीकी भी टली है दहरमें ?
था न यह दस्तूरे-फ़ितरत[2] खासकर मेरे लिए
मैं हुई कुर्बान तुमपर फर्ज[3] था मेरा यही
तुमको वाजिब है जियो तुम उम्र भर मेरे लिए
तुमको मेरी आर्जू, मेरी मुहब्बतकी क़सम
तुम खुदा न ख्वास्तः जाना न मर मेरे लिए
मेरे बच्चोंसे मुहब्बत करते रहना उम्र भर
जानते रहना उन्हें नूरे - नज़र[4] मेरे लिए
आह! यह मेरी ज़ईफ़[5] अम्माँ तुम्हारी वालिदा
रोएंगी अब ज़िन्दगी भर किस क़दर मेरे लिए
मैंने अबतक दिल किसीका भी दुखाया ही न था
अब दुःखेंगे क़ुदरतन क़ल्बो-जिगर मेरे लिए
आह यह बेकार-सी हस्ती तो इस क़ाबिल न थी
सबके दिलमें इक मुहब्बत थी मगर मेरे लिए
जो खता मुझसे हुई हो बख्श दो लिल्लाह तुम
जिस तरह करते रहे हो उम्र भर मेरे लिए
मै तुम्हारी थी, तुम्हारी ही हूँ और इसके बाद भी
तुम ही होगे खुल्दो-फरदौसे-नजर मेरे लिए



---

१. भिन्न नियम, २. प्रकृतिका नियम, ३ कर्त्तव्य, ४. आँखोकी ज्योति, ५ वृद्ध।

'ज़ाहिदः'—सुश्री ज़ाहिदः ख़लीक़ुलरहमान

गजल

कुछ न होगी जीनते-शामो-सहर[1] मेरे बग़ैर
यह जहाँ बन जायगा वीरान घर मेरे बग़ैर
बादए-जौरो-सितमकी[2] क्या हुई सरमस्तियाँ[3] ?
क्यों परेशाँ है वह दुज़दीदः नज़र[4] मेरे बग़ैर ?
आमसज्दों[5] से कभी मस्जूद[6] हो सकता नहीं
बन चुका काबा तुम्हारा संगे-दर[7] मेरे बग़ैर
सब तेरी सरमस्तियाँ बेकैफ़[8] है अब्रे-बहार[9] !
हेच है बरसात का मौसम, मगर मेरे बग़ैर
[10]गुल हँसे, कलियाँ खिलीं, सब्ज़ेने लीं अँगड़ाइयाँ
हो रहे है आप लेकिन चश्मेतर[11] मेरे बग़ैर
आ इधर आ मैं भी शामे-ग़ममें तेरा साथ दूँ
लुत्फ़[12] क्या रोनेका ऐ शमए-सहर[13] ! मेरे बग़ैर
ढूँढ़ते फिरते हैं मुझको फ़स्ले-गुल[14] नज़दीकसे
उड़ते-फिरते हैं हवामें बालो-पर मेरे बग़ैर
तर्जुमाने-दिल[15] है इक-इक शेर अपना 'जाहिदः' !
कौन पा सकता है यह गुलहाएतर मेरे बग़ैर

---

१ सन्ध्या और प्रात कालकी शोभा, २ अत्याचाररूपी मदिराकी, ३ मस्तियाँ, ४ अर्द्धमीलित नेत्रवाला, ५ नमाजी सज्दोसे, ६ वन्दनीय, ७ द्वारका पत्थर, ८ आनन्दरहित, ९ सावनी घटाएँ, १० फूल, ११ अश्रुपूर्ण नेत्र, १२. आनन्द, १३. प्रात कालीन दीपक, १४. वहार-के फूल, १५ दिलका आशय समझानेवाले ।

ग़ज़ल

हूँ कुश्तए-नैरंगिए-दुनिया[1] कई दिनसे
बेरंग है तसवीरे-तमन्ना[2] कई दिनसे

फिर दिलके बनानेका है सौदा[3] कई दिनसे
करती हूँ बहममुन्तशिर अजज़ा[4] कई दिनसे

फ़ुर्क़तमें अजब हाल है अपना कई दिनसे
है ज़ौक़े-सकूँ दर पए-ईज़ा[5] कई दिनसे

बढती हुई वहशत[6]में तड़पते नहीं बनता
कम हो गई क्या वुसअ़ते-सहरा[7] कई दिनसे

जल्वोंने[8] तेरी क़ीमते-दिल और बढ़ा दी
सज्दः[9]के लिए आता है काबा कई दिनसे

लो तुम तो अलग हो गये दिखलाके तजल्ली[10]
गर्दिशमें है ख़ूने-रगे-सौदा कई दिनसे

उफ़! आलमे-उल्फ़तके दिलावेज़ मनाज़िर[11]
वहशत है अनागीरे-तमन्ना[12] कई दिनसे

क़ाबूमें दिल, आँखोंमें भरोसा नहीं, वर्ना
है जल्वानुमाँ हुस्ने-खुदआरा कई दिनसे

ऐ 'जाहिदः'! क्या कह दिया उस मस्त नज़रने
दिल भी नज़र आता नहीं अपना कई दिनसे

---

१ दुनियाके छल-फ़रेबोंकी सताई हुई, २ आशा-चित्र, ३ पागलपन, ४ भिन्न-भिन्न अंगोंको एकत्र करना, ५. सुख-चैनका शौक कष्ट पहुँचानेकी घातमें, ६ दीवानगीमें, ७ रेगिस्तानकी विस्तीर्णता, ८. रूपके चमत्कारोंने, ९ नत-मस्तक होनेको, १० चमत्कार, रूपका प्रकाश, ११. चित्ताकर्षक दृश्य, १२. अभिलाषाओंको बढानेवाली।

'ज़ुबेदा'—सुश्री ज़ुबेदा तहसीन

अभी मुसकरायेगी यह फ़ज़ा[1] अभी रोशनी नज़र आयेगी
यह जो ज़ुल्मते-शबे-यास[2] है यह नवेदे-सुबह[3] भी लायेगी
जो तड़प गई तो यह बर्क़[4] है जो मचल गई तो यह मौज[5] है,
यह तेरी नज़र कि है, शोबिदा[6] कोई ताज़ा गुल ही खिलायेगी
यह हवाए-यास[7] बर्जा[8], मगर तपिशे-उम्मीदपै[9] रख नज़र
वह जो इक चिराग़ बुझायेगी तो यह सौ चिराग़ जलायेगी
गर दिलो-दमाग़ पै छा गई हैं ग़मे-हयातकी तल्खियाँ[10]
तेरी याद फिर तेरी याद है, तेरी याद दिलसे न जायेगी
यह नसीम[11] नर्म अभी चली है अभीसे इसका गिला[12] न कर
जो बहार बनके यह छा गई तो कली-कलीको हँसायेगी



१. बहार, २ निराशाकी अँधेरी रात, ३. प्रातःकालीन ख़ुशखबरी, ४. बिजली, ५ लहर, ६ जादू, ७. निराशाकी हवा, ८. मुनासिब, उचित, ९. आशा रूपी गर्मीपर, १० जीवन-कष्टोंकी कड़ुवाहट, ११ मृदु पवन, १२. शिकायत।

'ज़ेब'—सुश्री ताजवर 'ज़ेब' उस्मानिया लुधियानवी

सईए-तफ़क्कुर

जीस्तमें[1] सईए-तफ़क्कुरसे[2] बशर[3] क्या लेगा ?
जोम[4] है उसको मगर, फिक्रसे कर क्या लेगा ?

कूचए-इश्क़के फ़ैज़ानेंका[5] मुनकिर[6] है यह क़ौल
रहके इस दर पै कोई खाक़ बशर क्या लेगा ?

हुस्नसे कह दो कि अब दीद[7]के मानी है कुछ और
रहके वह बज़्ममें[8] मस्तूरे-नज़र[9] क्या लेगा ?

क़ाबिले-क़द्र है याद आवरिए-दोस्त मगर
खुदको भूला हो जो वह उसकी खबर क्या लेगा ?

रस्मे-तहक़ीक़[10] है इक अपने सिवा कोई तलाश
वर्ना इस तर्ज़े-तजस्सुससे[11] बशर क्या लेगा ?

जिसने ऐ 'ज़ेब' सुना दर्से-खुदी[12] तुमसे सदा
वह तेरे वाज़े-मुहब्बतसे[13] असर क्या लेगा ?

---

१ जिन्दगीमे, २. चिन्ताओके प्रयाससे, ३. मनुष्य, ४. अभिमान, ५ प्रेम-गलीकी कृपाओका, ६. कृतघ्न, ७ देखनेके, ८ महफ़िलमे, ९. नजरोमे छिपकर, १०. खोज करनेका रिवाज, ११ अन्वेषणके ढगसे, १२. स्वाभिमानका पाठ, १३ प्रेम-भापणसे ।

मुक़ामात

नामे-ख़ुदासे[1] जो बुलन्द[2] फ़र्दका[3] नाम कर सकी
क़ौम वही हक़ीक़तन[4] है कोई काम कर सकी

अक़्लको ख़ुद पै ऐतबार है भी नहीं भी है जभी
अपनी किसी दलीलपर यह न क़याम कर सकी

संगे-हसीने - ज़ीस्त है, बन्दगिए - ख़ुदाका दाग़[5]
अक़्ल अगर न नफ़सको[6] अपना ग़ुलाम कर सकी

अज़ पए मदहे-हुस्न[7] वोह इश्क़का रौबे-गुफ़्तगू[8]
अक़्ल ही थी जो हिम्मते-क़तए-कलाम[9] कर सकी

'ज़ेब' था ज़िक्रे-रफ़्तगाँ[10],लज्जते-ग़मपै[11] मुनह्सिर[12]
क़ल्बे-बशरमें[13] आर्ज़ी[14] यह भी क़याम[15] कर सकी

ऐ महबूब !

क्या यह कुछ कम है मुहब्बतकी सनद[16] ऐ महबूब[17] !
हम दो आलमसे[18] किये जाते हैं, रद[19] ऐ महबूब !!

---

१. ख़ुदाके नामसे, २ अधिक उच्च, ३ व्यक्तिका, ४ सचमुच, वास्तविक, ५ ख़ुदाकी बन्दगीमे पडा हुआ माथेका दाग केवल एक सुन्दर पत्थर है, ६ अगर इन्द्रियोको वशीभूत न किया तो, ७ रूपकी प्रशंसा, ८. वार्तालापका रोब, ९. वार्ताको टोकनेका साहस, १०. भूतकालीन जिक्र, ११. कष्टोको आनन्द समझनेकी स्थितिमे, १२. निर्भर, १३ मानव-हृदयमे, १४. अस्थायी, १५. निवास, १६ प्रमाण-पत्र, १७. प्रियतम, १८. लोक-परलोकसे, १९. व्यर्थ, बहिष्कृत ।

तूले - फ़ुर्क़तकी[१] भी आखिर कोई हद तो होगी
तुझ पै रौशन है अज़ल[२] और अबद[३] ऐ महबूब !

फ़िक्रे - दुनिया[४] ग़मे - उक़बा[५] तेरे मस्तोंके ख़िलाफ़
एक साज़िश[६] है अज़ल ताबः अबद ऐ महबूब !

बस वही दिन कि मुहब्बतका था अहदे - तिफ़ली[७]
फिर कभी चल न सका रौबे - ख़िरद[८] ऐ महबूब !

लबे - नाज़ुकको[९] तेरे ज़हमते - गुफ़्तार[१०] हुई
कहाँ आसाँ है, मेरी बातका रद ऐ महबूब !

अहल - ओ - नाअहल[११] मुहब्बतकी परख करनेमें
मैंने देखा कि खिरद[१२] फिर है खिरद ऐ महबूब !

क्या पड़ी तुझको करे क़तअ़ तअ़ल्लुक़[१३] सबसे
'जेब' को तो है ज़मानेसे हसद[१४] ऐ महबूब !

मक़सदे-हयात[१५]

भूलके भी न दर्दको दिलसे कभी जुदा समझ
शाहिदे-दिलनवाज़की[१६] यह भी कोई अ़ता[१७] समझ

---

१. विरहकी अधिकताकी, २. अनादि, ३. अनन्त, ४. संसारकी चिन्ता, ५ परलोक भय, ६ षड्यन्त्र, ७ बाल-युग, ८ अक्लका रौब, ९ कोमल ओठोंको, १०. वार्तालाप करनेमें कष्ट, ११ योग्य-अयोग्य, १२ अक्ल, १३. सम्बन्ध-विच्छेद, १४ ईर्ष्या, १५ जीवन-उद्देश्य, १६ प्रेमीकी, १७. देन, कृपा ।

अम्नकी आर्ज़ू[1] न कर, अम्नका मुद्दआ है मौत[2]
हर नफ़से-हयातको[3] दर्दमें मुब्तिला[4] समझ
शाहरहे - हयातमें[5] रहबरो - राहज़न[6] न बन
अपने सफ़रका मुद्दआ उनसे कहीं सिवा समझ
मंज़िले-हस्तो-बूदमें[7] तेरा मुक़ाम है बुलन्द
महरो-महो-नजूमको[8] अपने निशाने-पा[9] समझ
जौहरे-दर्द[10] है अगर गौहरे-अश्कमें[11] तेरे
दामने - कायनातको[12] मोतियोसे भरा समझ
तेरे सिफ़ाते - क़ल्बका[13] दहरमें इम्तहान[14] है
खुदको बशर समझ मगर क़ुदसियोंसे[15] सिवा समझ
'ज़ेब' हरीमे-क़ल्बकी[16] ख़ाकमें जब जुमूद[17] है
फ़ित्नः[18] कोई उठा समझ, हश्र[19] कोई बपा समझ

एहसासे-ग़मे-इन्साँ[20] ऐ 'ज़ेब' है दीं[21] जिसका
नाज़ाँ[22] न हों क्यों उनपर ख़ुद क़ौमकी तक़दीरें

---

१. सघर्ष-रहित जिन्दगीकी इच्छा, २ शान्त जीवन अकर्मण्यता लाता है, ३. जीवन श्वासको, ४. दु खसे ओत-प्रोत, ५ जीवन-मार्गमे, ६ पथ-प्रर्शक और लुटेरा, ७ जीवन-मार्गमे, ८ सूर्य्य, चन्द्र और नक्षत्रको, ९. चरण-चिह्न, १०. दर्दका अंश, ११ आँसूरूपी मोतीमे, १२ संसारके आँचलको, १३. स्वच्छ हृदयका, १४ ससारमे परीक्षा, १५ देवताओसे, १६. हृदय-प्रासादकी, १७ गत्यवरोध, १८ पड़्यन्त्र, १९ कयामत, साजिश, २० मनुष्योके कष्टोका सवेदन, ध्यान, २१. धर्म, २२. गर्वीली ।

उसको जमाना रखता है क़ायम
जिस क़ौमको है एहसासे-अंजाम[१]
जिसमें अमलकी[२] ताक़त नही 'ज़ेब'!
वक़अतसे[३] खाली है उसके अहकाम[४]

तू साहिबे तद्बीर, न मैं साहिबे तद्बीर
तद्बीर पै मौक़ूफ़[५] है हर क़ौमकी तक़दीर

ऐ 'जेब'! मशरिक़ी[६] हों क़ौमें कि मग़रबी[७] हों
है जिनका अज़्म[८] आली उनके नसीब आली[९]

जागेगी न हरगिज़ कभी उस क़ौमकी तक़दीर
जिस क़ौमकी औरत ही नहीं साहिबे-तद्बीर[१०]

रहे-हयातमें[११] मुड़-मुड़के नक़्शे-पाको[१२] न देख
मह-ओ-सितारेकी[१३] शाने-खिराम[१४] पैदा कर

---

१ परिणामका ज्ञान, २ कथनको कार्य्यरूपमे परिणत करनेकी, ३ आदर, इज्जतसे, ४ आदेश, वाते, ५ निर्भर, ६. पूर्वीय, ७ पश्चिमीय, ८ ऊँचे इरादे, कार्य करनेकी धुन, ९ भाग्य अच्छे है, १० कर्मवीर, ११. जीवनमार्गमें, १२ चरण-चिह्नोको, १३ चन्द्र-नक्षत्रकी, १४ मस्त चाल।

क़तरे-क़तरेको फिरें तेरे सुबूकश[1] लाचार
है यह किसलिए ग़ैरतका मुक़ाम ऐ साक़ी !
मक़्मतसे[2] तेरी हो जायें न मैकश[3] बद्‌दिल[4]
संगदिल[5] है तेरी महफ़िलका निज़ाम[6] ऐ साक़ी !

उठा है महफ़िले-हस्तीसे[7] ऐतमादे-वफ़ा[8]
कहो किसीसे कि रस्मे-जफ़ा[9] पै नाज़[10] करे
ख़ुदा भी हो तो कभी कोशिशे-नियाज़[11] न कर
अगर वह तुझसे कोई एहतियाते-राज़[12] करे

गर्दिशे-चश्मे-दोस्त ही गर्दिशे-रोज़गार है
सोच-समझके शिकवए-गर्दिशे-रोज़गार कर
हुजलए-उजज़से[13] निकल, पर्दए-बन्दगी[14] उठा
वक़्तका इक़्तज़ा[15] है 'ज़ेब' ख़ुदको अब आश्कार[16] कर



१. शराबी, २. दयालुतासे, ३ सुराभक्त, ४ निराश, नाराज, बद्‌गुमान, ५ पत्थर हृदय, ६. व्यवस्था, ७. संसारसे, ८ नेकोका विश्वास, ९ अत्याचारोपर, १० गर्व, ११. नम्रताका प्रयास, १२, सावधानीका बर्ताव, १३ प्रार्थनाके चक्करसे, १४ उपासनाका पर्दा, १५ तकाजा, १६ अपनेको पहचान, प्रकट कर।

'ज़ेब'—सुश्री ज़ेबुन्निसा 'ज़ेब'

दिलासा

हर उस बेटीके नाम जो अपनी मजबूर और गरीब माँके जेर साया परवान चढ रही है।

न रो कि तेरे लिए मेरा दम ग़नीमत है,

यह मेरा प्यार तेरे हौसले बढायेगा
क़दम-क़दमपै नई जन्नतें दिखायेगा
मेरा खलूस[1] तुझे लोरियाँ सुनायेगा
थपक-थपकके बड़े प्यारसे सुलायेगा

तेरी ख़ुशीपै मैं अपनी ख़ुशी लुटाऊँगी
मचल गई तो सितारे भी तोड़ लाऊँगी

ग़रीब माँकी ग़रीबीका कुछ खयाल न कर
तेरे निसार[2] तू बिलकुल मेरा मलाल न कर
बिलक-बिलकके मेरी ज़िन्दगी वबाल न कर
जवाब न दे सकूँ जिसका वह सवाल न कर

जो मुझपै बीत गई उसको इत्तफ़ाक़ समझ
मेरे मज़ाक़की हद तक मेरा मज़ाक़ समझ

---

१. स्नेह, ममता, २ न्योछावर।

मेरी निगाहसे मस्तूर[1] हो गई दुनिया
क़रीब होके बहुत दूर हो गई दुनिया
मुझे मिटाने पै मजबूर हो गई दुनिया
कुछ आज और भी मग़रूर[2] हो गई दुनिया

बलासे अब जो किसीको न मेरा पास रहे
दुआ यह कर मेरी फ़ितरत[3] खुदी शनास[4] रहे

दिलो-निगाहको आसूदगी[5] मिले-न-मिले
मेरे लबोंको[6] वह पहली हँसी मिले-न मिले
फ़सुर्दगीको[7] मेरी ताज़गी मिले-न-मिले
खुशीकी फ़िक्र नहीं है ख़ुशी मिले-न-मिले

हर-एक ग़मको ग़मे-जाविदाँ[8] बनाने दे
नया सफ़र है, नया कारवाँ[9] बनाने दे

लतीफ़[10] जिन्स हूँ बेशक, नहीफ़ो-ज़ार[11] सही
मेरा वजूद[12] भी हरचन्द मुझपै बार[13] सही
हज़ारों रंज मुसीबतकी मै शिकार सही
जो बे-दयार[14] हूँ अब तक तो बेदयार सही

मुझे क़बूल है सब सख़्तियाँ ज़मानेकी
न भूल जाये अदाएँ तू मुसकरानेकी

---

१. छिप गई, २ गर्वीली, ३ स्वभाव, ४. स्वयंको जाननेवाली, ५. तृप्ति, खुशहाली, ६ ओठोको, ७ मुर्झायेपनको, ८ स्थायी दुःख, ९. यात्रीदल, १०. कोमल वस्तु, ११. अबला, १२. अस्तित्व, १३. बोझ, १४. बे घर, बे वतन।

जिसारतोंको[1] तेरे नामसे पुकारा है
रुखे-हयात[2] नये अज़्मसे[3] सँवारा है
उम्मीद वक्तका सबसे बड़ा सहारा है
जो हौसला है, तो हर मौजमें[4] कनारा है
सफ़ीना[5] शोरिश-तूफ़ाँसे[6] आश्ना[7] न सही
खुदा तो है मेरे हमराह[8] नाखुदा[9] न सही

क़दम-क़दम पै तेरा प्यार आसरा देगा
मुझे यह मेरा ग़मे-वक्त खुद सदा[10] देगा
तेरा खयाल मेरी कुलफ़तें[11] मिटा देगा
तेरा फसूने-नजर[12] मरके भी जिला देगा
तड़पके लाख मै यह रोज़ो-शब[13] गुज़ारूँगी
ब-हर तरीक़ तेरी ज़िन्दगी सवाँरूँगी
न रो कि तेरे लिए मेरा दम ग़नीमत है



---

१. दिलेरियो, २. जीवन-मुख, ३. नवीन इरादेसे, ४. लहरमे, ५. नौका, ६. तूफानके शोरसे, ७. परिचित, ८ साथ, ९. मल्लाह, १० आवाज, ११ परेशानियाँ, १२. नेत्रोका जादू, १३. दिन-रात ।

'ज़ेबा'—सुश्री इफ़्फ़त बानो 'ज़ेबा' काकोरवी

ज़ख़्म दिलके छुपाके देख लिया
ग़मसे आँखें चुराके देख लिया

लज़्ज़ते-दर्द मैं निसार[1] तेरे!
तुझसे दामन बचाके देख लिया

दिलका हर ज़ख़्म मुसकरा उट्ठा!
नग़मए-ऐश[2] गाके देख लिया

ज़िन्दगीका सकून[3] खो बैठे
ग़मकी दौलत लुटाके देख लिया

बिजलियाँ सैकड़ों चमक उट्ठीं
फिर नशेमन बनाके देख लिया

कैसी उलफ़त, कहाँकी रस्मे-वफ़ा
सबको अपना बनाके देख लिया

हमनवाँ[4] कौन? हमनफ़स[5] कैसा!
नौहए-ग़म[6] सुनाके देख लिया

ज़िन्दग़ी इक सराब[7] है 'ज़ेबा'!
ख़न्दए-गुलकों[8] जाके देख लिया

---

१. न्योछावर, २. विलासपूर्ण गीत, ३. चैन, ४ अपनी जैसी भाषा-वाला, ५. मित्र, साथी, ६ दु खड़ा, ७. मृग-मरीचिका, ८. मुसकराते फूलको।

ज़ो-बे साहिबा*

मन मेरा है प्रेमकी बस्ती
प्रेमका मामन मेरी हस्ती
जानके बदले पीत है सस्ती
यह संसार है प्रेमका गीत
जिसके मनमें बसे न मीत
वह क्या जाने प्रीतकी रीत

प्रीत करे और मनको गँवाये
प्रीतमें जीवन अपना बिताये
मन हारे पर मीत न जाये
मनके हारे प्रीतकी जीत
जिसके मनमें बसे न मीत
वह क्या जाने प्रीतकी रीत

जब आँखोंमें मीत समाये
और कोई फिर नज़र न आये
मनमें मीत बसे मन जाये
प्रेम नगरकी उल्टी रीत
जिसके मनमें बसे न मीत
वह क्या जाने प्रीतकी रीत

---

* आप इसी नामसे लिखती है।

उसने पाया जिसने खोया
पीत बिना कोई मीत न होया
जोगी हो या कोई अतीत
जिसके मनमें बसे न मीत
वह क्या जाने प्रीतकी रीत

'तबस्सुम'—सुश्री तबस्सुम पूनावी

इतना पुरफ़न[1] यह आस्माँ तो नहीं
पसे-पर्दा[2] वह महर्बां तो नहीं
किस पतेपर उसे तलाश करूँ ?
बे-निशाँका कोई निशाँ तो नहीं
क्यों सलासिल[3] है फूलकी लड़ियाँ
क़ैदख़ाना यह गुलसिताँ[4] तो नहीं
जिसका हर नक़्शे-पा[5] है, मशअ़ले-राह[6]
वह मेरा मीरे-कारवाँ[7] तो नहीं
जोरे-बातिलपर[8] ख़न्द:-ज़न[9] क्यों है !
हक़ 'तबस्सुम'का पासबाँ[10] तो नहीं



---

१ धूर्त, २. पर्देकी आडमे, ३. जंजीरे, बेडियाँ, ४ बाग, ५ चरण-चिह्न, ६ मार्ग-दीप, ७. यात्रीदलका प्रधान, ८. झूठे बलपर, ९. हँसना, १० रक्षक ।

'तस्नीम'—सुश्री जमीला ख़ातून 'तस्नीम' मलीहाबादी

ग़ज़ल

ज़िन्दगीको एक बहरे-बेकराँ[१] पाती हूँ मैं
उनके हाथों मिटके उम्रे-जाविदाँ[२] पाती हूँ मैं

ख़ुद-ब-ख़ुद दिल हो गया दीनो जहाँसे बेनियाज़[३]
अब ज़मीने-इश्क़ गोया आस्माँ[४] पाती हूँ मैं

झुटपुटेसे दिल बुझा रहता है तेरी यादमें
चाँदनी रातोंमें अश्कोंको रवाँ[५] पाती हूँ मैं

सैकड़ों सज्दे[६] तड़पते है जबीने-शौक़में[७]
ऐ हक़ीक़त[८] तेरा नक़्शे-पा[९] कहाँ पाती हूँ मै

अब भी आँसू बह निकलते हैं किसीकी यादमें
अन्दलीबे-ज़ारको[१०] जब नौहाख़्वाँ[११] पाती हूँ मैं

अपना ऐ 'तस्नीम'[१२]! इस दुनियासे घबराता है दिल
बाँकी हर शैको फ़क़त वहमो-गुमाँ पाती हूँ मैं



---

१. असीम समुद्र, २. अमरत्व, ३. उदासीन, ४ प्यार करनेका स्थान आकाशको, ५. बहते हुए, ६ नमाजमे मत्था टेकनेके भाव, ७. उत्साहपूर्ण मस्तकमे, ८. सचाई, ९ चरणचिह्न, १०. दु खी बुलबुलको, ११. शोक-सन्तप्त, १२ जन्नतकी नहर।

'दरख़्शाँ'—सुश्री आर. के. दरख़्शाँ बिजनौरी

ग़ज़ल

गदा[1] तेरे दरकी[2] बना चाहती हूँ
मुहब्बतमें तेरी फ़ना[3] चाहती हूँ

कहे अब वोह रूदादे-ग़म[4] मुझसे आके
तसव्वुरमें[5] लेकिन सुना चाहती हूँ

हुआ किस तरह क़ल्बे-तारीक रौशन[6]
अयाँ राज़े-पिन्हाँ[7] किया चाहती हूँ

कहा आके गुलशनमें बुलबुलने हँसकर
मै फूलोंसे दामन भरा चाहती हूँ

हुई महफ़िले-शौक़ तारीक[8] मेरी
तुझे दिलमें जल्वानुमा चाहती हूँ

कहानी मेरे ग़मकी बिखरी हुई है
ग़मे-अहद[9] यकजा किया चाहती हूँ

न देखे तसव्वुरमें भी कोई मुझको
लताफ़तमें[10] ऐसी छिपा चाहती हूँ

गुनाहोंका नज़रों पै इतना असर है
मै बहरे-खिजलमें[11] बहा चाहती हूँ

'दरख्शाँ'[12] मेरे शेर है दिलके टुकड़े
मै काविशका[13] अपनी सिला चाहती हूँ

---

१ भिक्षुक, २ दरवाजेकी, ३ मिटना, ४ दु:खोकी कहानी, ५ ध्यानमे, ६ अन्धकारपूर्ण हृदय प्रकाशवान् हुआ, ७. छिपा भेद, ८. अँधियारी, ९ दु:खोका जमाना, १० मृदुलतामे, ११ लाज रूपी दरियामे, १२. चमकता हुआ, १३. श्रमका ।

'नज्मः'—सुश्री शमशाद नज्मः तसद्दुक़ एम. ए. बी. टी.

तरानए-मुहब्बत

मुहब्बतके तराने गा रही हूँ
फ़ज़ामें[1] आग-सी भड़का रही हूँ
यह मैं, यह हादसाते-ज़िन्दगानी[2]
किसी तूफ़ाँ में बहती जा रही हूँ

किसीकी यादमें नग़मे[3] लुटाकर
दिले-कौनो-मकाँ धड़का रही हूँ
ख़िरद[4] जितना मुझे समझा रही है
मैं उतनी और खोई जा रही हूँ

मसाइब[5] घूरते हैं हर तरफ़से
मगर मैं क़हक़हे बरसा रही हूँ
न मंज़िल है न कोई राहे-मंज़िल
मगर मैं एक धुनमें जा रही हूँ
जो देखा था कभी इक ख़्वाब 'नज्मा'[6]!
उसे अशआरमें दुहरा रही हूँ

---

१. वातावरणमे, रौनकमे. २ जीवन-दुर्घटनाएँ, ३. गीत, ४. अक्ल, ५ मुसीबते, ६ नक्षत्र ।

ग़ज़ल

खुद मिट गई न पा सकी तेरे निशाँको मैं
समझी थी सहल शौक़की राहे-गराँको[1] मैं
यह आर्ज़ूए - जोशे - तजस्सुसका[2] है मआल[3]
भूला है कारवाँ[4] मुझे और कारवाँको मैं
सोजे - जुनूँकी[5] आगसे इक रोज़ फूँक दूँ
वहमो - गुमाँको[6] जज़्बए - सूदो - ज़ियाँको[7] मैं
तारोंकी मस्त छाओंमें अब भी कभी - कभी
करती हूँ याद भूली हुई दास्ताँको मै
हर - हर क़दम पै मेरी जबीं सज्द: रेज़[8] है
काबा समझ रही हूँ तेरे आस्ताँको[9] मैं
'नज्मः' न पूछ मुझसे मेरी दास्ताने - ज़ीस्त[10]
अल मुख्तसिर कि याद रहूँगी जहाँको मैं

अफसानए - निगाहे - मुहब्बत[11] न पूछिए
कहते है किसको हश्रे - मसर्रत[12] न पूछिए
वह मस्त-मस्त रात वह बाद: बदस्त[13] रात
उस मस्त - मस्त रातकी क़ीमत न पूछिए

१. कठिन डगरको, २. तलाश करनेकी बलवती इच्छाका, ३. परिणाम, ४. यात्रीदल, ५ प्रेम-अग्निसे, ६. शक-शुबहोको, ७. लाभ-हानिके विचारोको, ८. मस्तक नत है, ९. द्वारकी चौखटको, १० जीवन-कथा, ११. प्रेम-दृष्टिकी कहानी, १२. खुशियोकी प्रलय, अथाह आनन्द, १३. नशीली।

होती है दिलमें इक ख़लिशे-बेक़रार - सी[१]
वल्लाह उस नज़रकी शरारत न पूछिए
आलम[२] तमाम आँसुओंका एक सैल[३] था
मुझसे फ़सानए - शबे - फ़ुर्क़त[४] न पूछिए
रातोंको कर रही हूँ सितारोंसे गुफ़्तगू
मुझसे मेरे जुनूँकी हिकायत न पूछिए
क्या हो गया है आपकी 'नज्मः' को क्या कहूँ
हालत न पूछिए, मेरी हालत न पूछिए

उस निगाहे - मस्तसे जब वज्दमें[५] आती हूँ मैं
कैफ़ो - रंगो - नूरकी दुनिया पै छा जाती हूँ मैं
चाहती तो हूँ कि मौजोंसे रहूँ दामनकशाँ[६]
किश्तिए - ग़म[७] हूँ भँवरमें फिर भी आ जाती हूँ मैं
सुबहतक ठहरा नज़र आता है दौरे - आस्माँ
जब तसव्वुरमें[८] तेरे रातोंको खो जाती हूँ मैं
जाम[९] गिर पड़ता है साक़ी ! थरथरा जाते हैं हाथ
तेरी आँखें देखकर नशेमें आ जाती हूँ मैं

---

१. बेचैनीकी चुभन, २. संसार, ३. बाढ, ४. विरह-रात्रिकी बात, ५. आपेमे नही रहना, तल्लीनता, ६. लहरोसे दामन बचाये, ७ दुखोकी नाव, ८. ध्यानमे, ९. मदिरा-पात्र ।

यह दूरकी वादीसे[1] मुझे किसने सदा[2] दी ?
इक आग मेरे दिलमें मुहब्बतकी लगा दी
फूलोंकी बहार और सितारोंकी जवानी
हर चीज़ तेरे मस्त तबस्सुमपै[3] लुटा दी
यह कौन मेरी रूहकी[4] गहराईमें झूमा
उजड़ी हुई बस्ती यह मेरी किसने बसा दी ?
वह बात, जिसे दिलने छिपाया था ब - मुश्किल
दुनियाको तेरी मस्त निगाहोंने बता दी
फिर उठने लगे रूहसे रंगीन शरारे
फिर हिज्रकी रूदाद[5] पपीहेने सुना दी
फिर कर दिया मदहोश मुझे होशमें लाकर
फिर मस्त निगाहोंने निगाहोंको पिला दी
इस शर्मे - जफ़ापर[6] तेरी, क़ुर्बान[7] वफ़ाएँ
जब शिकवए - बेदाद[8] किया आँख झुका दी

बेखुदीके साज़पर[9] गानेका मौसम आ गया
आ गया पीकर बहक जानेका मौसम आ गया
फिर पयामे - आमदे - जानाँ[10] सकूने-शाम है[11]
सेजपर कलियोंके खिल जानेका मौसम आ गया

---

१. घाटीसे, २ आवाज, ३. मुसकानपै, ४. दिलकी, ५. विरह-कथा, ६. अत्याचारोकी लाजपर, ७ न्यौछावर, ८ अत्याचारकी शिकायत, ९ आत्मलीनताके वाद्यपर, १० प्रियतमके आगमनका सन्देश, ११ सन्ध्या-कालीन सुख।

यह तड़प, यह दर्द, यह रग-रगमें हलकी-सी कसक
यह शबाब[१] आया कि मर जानेका मौसम आ गया
तोड़कर हमदम! हर इक रस्मो-रहे-क़ौनीनको[२]
लग़्ज़िशोंपर लग़्ज़िशें[३] खानेका मौसम आ गया

मुहब्बतमें क्या दूँ मुहब्बतमें क्या लूँ
तुझे देके दिल तुझको अपना बना लूँ
इधर आओ पहलूमें तुमको बिठा लूँ
ज़रा हौसले अपने दिलके निकालूँ
वफ़ूरे-मुहब्बत[४] भी है इक मुसीबत
मैं तुझको सम्भालूँ कि ख़ुदको सम्भालूँ

क्योंकर गुज़र रहे हैं मेरी ज़िन्दगीके दिन
यह मैं तुम्हें बता नहीं सकती हूँ क्या करूँ
मुझको तेरे फ़िराक़का[५] एहसास[६] है मगर
मैं तेरे पास आ नही सकती हूँ क्या करूँ
यह ठंडी-ठंडी आग मुहब्बत कहें जिसे
यह आग मैं बुझा नहीं सकती हूँ क्या करूँ

---

१. जोवन, २. संसारके रीति-रिवाजोको, ३. भूलोंपर भूल करनेका, ४. प्रेमकी अधिकता, ५. जुदाईका, ६ ज्ञान ।

आग़ाज़े-इश्क[1]

तलव्वन[2]

आग़ाज़े-मुहब्बतमें वह इक सुबह ख़रामाँ[3]
आँखोंमें समेटे हुए सौ रंगके तूफ़ाँ
अब तक है तसव्वुरमें[4] वह बेदार नजारः[5]
वह मस्त समाँ[6] अब भी आँखोंमें है रक़्साँ[7]
साँचेमें जवानीके वह ढाली हुई मूरत
हूरोंके तबस्सुमकी[8] झलक रुखपै फ़रोज़ाँ[9]
दुजदीदः निगाहोंमें[10] वोह दुज़दीदा तबस्सुम
वोह बर्क़ मुजस्सिम[11] कभी पिन्हा[12] कभी उरियाँ[13]
वोह अहदे जवानीकी तमन्नाओंका मरकज़[14]
वोह क़ामते-ख़ुश[15] जिससे खिजल[16] सरूओ-गुलिस्ताँ[17]
वह जोशे-शबाब[18] और वह शर्मीली अदाएँ
पैग़ामे-जुँनू[19] दिलके लिए इश्वए-पिन्हाँ[20]

---

१. इश्ककी शुरूआत, २ अस्थिरता, कभी कुछ होना, कभी कुछ, ३. धीमी चालसे प्रात काल आया, ४. ध्यानमे, नजरोमे, ५ जगानेवाला दृश्य, ६ समय, ७. थिरकता हुआ, ८. देवागनाओकी मुसकानकी, ९. कपोलोपर दीप्तिवान्, १०. अधखुली आँखोमे, ११ साक्षात् विजली, १२ छिपो हुई, १३. प्रकट, १४. केन्द्र, १५. अच्छा कद, १६. शर्मिन्दा, १७ सरू वृक्ष और उद्यान, १८ जोवनका जोश, १९ वावला वना देने-वाला सन्देश, २०. छिपे हुए हाव-भाव ।

अँगड़ाई - सी लेकर हुई बेदार[1] मुहब्बत
जज़्बातकी[2] मस्ती हुई ख़ुर्शीदे - गुलिस्ताँ[3]
उम्मीदकी आग़ोशमें[4] पलते रहे जज़्बे[5]
आग़ाज़में[6] होता है मगर इश्क़ भी नादाँ[7]

अंजामे-इश्क़[8]

इक वक़्त फिर आता है कि मर जाती है उम्मीद
फ़ुर्सत नहीं मिलती कि सिएँ चाके-गरीबाँ[9]
होती नहीं मानूस[10] किसी शैसे तबीयत
ख़ातिर भी परेशान, तख़ैय्युल[11] भी परीशाँ
बढ़ जाती है अफ़कारे-मईशतकी कशायश[12]
दोज़ख़-सी[13] नज़र आती है यह जन्नते-दौराँ[14]
घुट जाता है ज़ौके-अम्नो-जोशे-तमन्ना[15]
बढ़ जाती है मायूसिए-दिल ताजदे-इमकाँ[16]

---

१. जागृत, २. भावोकी, ३. उद्यानका सूर्य्य, ४. गोदमे, ५. विचार, ६ प्रारम्भमे, ७. मूर्ख, ८. प्रेम-परिणाम, ९ कुरतेका फटा हुआ गला, १०. बहलती, परिचित, ११. विचार, १२. चिन्तारूपी आजीविकाकी उदारता, १३. नरक-सी, १४ संसार रूपी स्वर्ग, १५. सुख-चैन और उत्साहका जोश, १६. हृदयकी निराशाएँ विस्तृत।

तज्दीदे-इश्क़[1]

फिर फित्ने जवानीके मचलते है रगोंमें
फिर दिलका हर-इक गोशः[2] है सद् हश्र वदामाँ[3]

फिर हुस्नकी दुनियामें है इक गूना तग़ैय्युर[4]
है ज़ूद पशेमाँका[5] हर अन्दाज पशेमाँ[6]

फिर छेड़ती है मेरी तमन्नाओंको नज़रें
फिर रूहको[7] तज्दीदे-मुहब्बतका है अरमाँ

फिर याद दिलाती है मुझे अहदे-गुजिश्तः[8]
क्यों होते है फिर मेरी तबाहीके यह सामाँ

औरतकी अदाएँ न हों बेबाक इलाही !
औरतकी अदाओंसे लरज़ जाता है ईमाँ

'नज्म:' न कहीं मुझको गुनहगार[9] बनादें
यह बहकी हुई रात यह हँसते हुए तारे

इतना बुलन्द जौक़[10] नहीं अहले इश्क़[11] का
यह क्या समझके हुस्नने आँसू बहा दिये ?

---

१. इश्ककी नवीनता, २. कोना, ३. कयामती, ४. क्रान्ति,परिवर्त्तन, ५. शीघ्र भूल माननेवालेका, ६. प्रत्येक भाव लजालू, ७. आत्माको, ८. बीते हुए दिन, ९ अपराधी, १०. उच्चरुचि, ११ प्रेमियोका ।

बहकी हूँ मैं लतीफ़[1] जवानीके कैफ़से[2]
हर चीज़को शराब किये जा रही हूँ मैं
कितना बुलन्द है मेरी तामीरका[3] मज़ाक़?
तारोंको आफ़ताब[4] किये जा रही हूँ मैं
क्यों मैं गुनाहे-इश्क़से[5] डरती हूँ इस क़दर
हस्तीको क्यों अज़ाब[6] किये जा रही हूँ मैं

जब मेरे पास वे नहीं होते
उनसे होती हैं राज़की[7] बातें
जिनपै मौसीक़ियोंको[8] वज्द[9] आये
हाय! उस मस्ते - नाज़[10] की बातें

आना किसीका आज भी मुमकिन नहीं, मगर
क्यों देरसे सिंगार किये जा रही हूँ मैं?

मेरी दोशीज़गी[11] जब फूल बनकर मुसकराती है
गुनाहे-इश्क़का दामन पै धब्बा देख लेती हूँ

वे जब सामने थे अदब दरमियाँ था
इन्हें देख लेनेका मौक़ा कहाँ था

---

१. लावण्यमयी, २. मादकतासे, ३. निर्माणका, ४. सूर्य्य, ५. प्रेम-अपराधसे, ६. दुःखी, ७. भेदकी, ८ सगीतोंको, ९. तल्लीनता, वेहोशी, १० प्रियतमकी, ११. कुआँरापन।

यह किसने डूबती नब्जों पै रखा दस्ते-नाज[1] अपना
कि दुनिया मेरी नज़रोंमें जवाँ मालूम होती है

फ़ना[2] हो गया आदमी इश्क़ करके
खिरदकी[3] कोई बात उसने न मानी

चाँदनी, मै, बहार, खिलवते-नाज[4]
उनकी बाहोंमें झूम जाने दे

कभी इधर भी चले आओ कैफ़[5] बरसाते
सबूकदेकी फ़जाएँ[6] सलाम कहती है
खयाले-दोस्त! यह चुपके-से उनसे कह देना
तुम्हें किसीकी वफाएँ सलाम कहती है

आओ सीनेसे लगाकर दूँ तुम्हें दादे-वफ़ा
यह सुता चेहरा, यह ग़म, यह चश्मे-तर मेरे लिए?



---

१. नजाकत भरा हाथ, २ मिट गया, ३ अक्लकी, ४. प्रियतमका एकान्त, ५ नशा, मस्ती, ६. मदिरालयकी बहारें।

'नज्म':—सुश्री नज्मः रहमतअल्लह बी.ए. लाहौरी

अहदे-रफ़्तः[1]

बहारे जाँफ़ज़ा[2] जाकर चमनसे फिर भी आती है
घटा काली बरसकर इक दफ़ा फिर भी तो छाती है
सितारे दिनको बुझ जाते हैं फिर शबको[3] चमकते हैं
फ़लकपर[4] रातभर शोख़ीसे हँस-हँसकर दमकते हैं
शफ़क़की[5] झीलमें ख़ुर्शीद[6] शबको डूब जाता है
दरे-क़सरे-उफ़क़से[7] झाँककर फिर मुसकराते हैं
अगर मुर्झा गये हैं फूल और गुञ्चे तो क्या पर्वा
परिन्दे हैं अगर मग़मूम[8] गुलशनके तो क्या पर्वा
ख़िज़ाँ के[9] बाद यह फूल और गुञ्चे फिर भी महकेंगे
बहार आते ही तायर[10] डालियों पै फिर भी चहकेंगे
अगर तारीक[11] रात आती है ऐ हमदम! तो आने दे
अगर जंगलकी नद्दी ख़ुश्क होती है तो हो जाये
कभी तो चाँदनी रात आके यह ज़ुल्मत मिटायेगी
यह नद्दी फिर सुरीले और शीरीं[12] गीत गायेगी
निशाँ[13] गुज़री हुई घड़ियोंका लेकिन फिर नहीं मिलता
कँवल मुर्झाके दिलका इक दफ़ा फिरसे नहीं खिलता

---

१ बीते दिन, २. प्राण-सचारक, ३. रातको, ४ आकाशपर, ५. सूर्य्यास्त लालीकी ६ सूर्य्य, ७ आकाश रूपी प्रासादके द्वारसे, ८ रंजीदा, ९. पतझड़के, १० पक्षी, ११. अँधेरी, १२. मधुर, १३. निशान।

आमदे-बहार

गुलशनमें किस अदासे है आई हुई बहार
फूलों पै हुस्न बनके है छाई हुई बहार
मसरूफ़े-रक़्स[1] नद्दीके पानी पै है हुबाब[2]
करती है शोख़ी नाज़से अमवाज सतहे-आब[3]
गुलशनके फूल-पत्तों पै है आ गया निखार
वह तितलियोंका नाचना गुलशनमें बार-बार
बाग़ और बनमें घिरके वह आना सहाबका[4]
ठंढी हवामें झूमना बेखुद[5] गुलाबका
हल्के सुरोंमें गीत सुनाते है आबशार[6]
मसरूर[7] हैं बहार दर आग़ोश सब्ज़ः ज़ार[8]
है नग़्मःजन[9] तयूर,[10] हसीं हर दरख़्तपर
खुद हुस्न हुक्मरान है हर कोहो-दस्तपर[11]
फूलोंकी शाल ओढ़के नाज़ाँ[12] है क़ायनात[13]
साज़े-तरब पै[14] आज ग़ज़ल ख़्वाँ है कायनात



---

१ नृत्यमे लीन, २. बुलबुला, ३. लहरे सतहके पानीसे, ४ बादलका, ५ मस्त, ६. झरने, ७. नशीली, मस्त, ८ गोदमे हरियाली लिये हुए, ९ गीत गाते हुए, १०. पक्षी, ११. पर्वत और जंगलमे, १२ गर्वीली, १३. दुनिया, १४ वाद्यपर।

'नज्मी'—सुश्री ताहिरा नज्मी

ग़ज़ल

क्या कहूँ फिर किसको ताबे-जल्वए जानाना[1] थी
ख़ुद निगाहे-शौक़ ही जब दीदसे[2] बेगाना[3] थी
दिलमें इक दुनियाके पिन्हाँ उल्फ़ते-जानाना[4] थी
उसकी महफ़िलमें निगाहे-शौक़ भी बेगाना थी
देखना एजाज़[5] उसके इल्तफ़ाते - नाज़का[6]
आर्ज़ू[7] ख़ुद आज वक़्फ़े - सज्दए शुक्राना[8] थी
क़िस्सए - दिल बेख़ुदीमें कुछ कहा कुछ रह गया
हसरते - अर्ज़े - मुहब्बत कितनी बेताबाना[9] थी
रंगे - मस्तीमें थी महफ़िल सर-ब-सर डूबी हुई
गर्दिशे - चश्मे - फ़सूँ[10] गर गर्दिशे - पैमाना[11] थी
हाल 'नज्मी' से तजाहुलके[12] बरतनेका सबब
मैंने माना आपको अग़ियार[13] की परवा न थी



---

१. प्रियतमका जल्वा देखनेका चाव, २. सूरतसे, ३. अपरिचित, ४. प्रेमीकी मुहब्बत छिपी हुई, ५ जादू, ६. हावभावकी कृपाओंका, ७. इच्छा, ८. उपासनाकी अनुगृहीत, ९ बेताब, १०. जादूगर प्रियतमकी आँखें, ११. मदिरापानकी तरह घूम रही थी, १२. उपेक्षाभावके, १३. ग़ैरकी।

'नवेद'—सुश्री शमीम नवेद

रातकी तन्हाइयाँ[1] है और हम
घुटके मर जायें न इस आलममें[2] हम
जानते है, राहे-ग़मके[3] पेचो-खम[4]
बढ़ गये जोशे-मुहब्बतमें क़दम
तुमने नजरें फेर लीं तो क्या हुआ
रास हमको आ चुके है, दर्दे-ग़म
मरहबा[5] रंगे-खलूसे-मैकदा[6]
तौबा-तौबा फ़ित्नए-दैरो-हरम[7]
इक फ़साना ही ग़मे-हस्ती सही
इक हक़ीक़त है मगर, हस्तीए-ग़म
अपनी बर्बादीका शिकवा क्या करें
ज़ब्ते-ग़मका और खुलना है भरम
ज़िन्दगीमें ग़म न होता गर 'नवेद[8]'!
कर न सकते थे खुशीकी क़द्र हम



---

१. अकेलापन, २ स्थितिमे, ३ दुःखोके मार्गके, ४. घुमाव और चक्कर, ५ शाबास, ६ मदिरालयका सौजन्य, ७. मन्दिर-मस्जिदकी घातोसे कान पकडे, ८. निमंत्रण, शुभसूचना।

'नसरीं'[1]—सुश्री आबदः ख़ानम नसरीं मथरावी

ग़ज़ल

ख़बर मेरी न ली बरबाद करके फ़ित्नः गर तूने
मैं तकती रह गई और फेर ली अपनी नज़र तूने
सज़ा मिलती है लेकिन बेवफ़ा इतनी नहीं मिलती
ज़रा-से जुर्मे-उल्फ़तपर सताया उम्र भर तूने
फ़रेबे-कामयाबी ऐ दिले-मुज़्तर[2] मुबारक हो
इक उम्मीदे-असरपर आह खींची रातभर तूने

अपने ग़मका मुझे कहाँ ग़म है
तेरे ग़मसे यह आँख पुरनम[3] है
है पसीना जो उनके आरिज़[4] पर
दामने - गुल[5] पै जैसे शबनम[6] है
जिसको उल्फ़त किसीसे हो उसकी
यह समझ लो कि ज़िन्दगी कम है
इस तजाहुलसे[7] रंज हो कि न हो
मुझसे कहते हैं "तुझको क्या ग़म है" ?

---

१. सेवतीका फूल, २. तड़पते हुए दिल, ३. अश्रुपूर्ण, ४. कपोलोपर, ५. फूलोपर, ६ ओस, ७ अनजानपनसे ।

इश्क़की किस तरह न क़द्र करें
जिस पै दारो - मदारे - आलम[1] है
मेरी किश्ती किनारे पै डूबी
यह करम नाख़ुदाका[2] क्या कम है
गर वह नाज़ाँ[3] है हुस्नपर 'नसरीं'!
मनसबे-इश्क़[4] अपना क्या कम है?



१ संसारकी निर्भरता, २ मल्लाहका, ३ गर्वीले, ४ प्रेम-पद।

'नसीम'—सुश्री नक्हत नसीम[1]

तल्ख़ी[2]

कौन-सी रात थी जो अश्क[3] बहाते न कटी
कौन-सा दिन ग़मे-फ़रदामें[4] गुज़ारा न गया
कब तबस्सुम[5] मेरा अश्कोंसे सँवारा न गया
अब्रे-रहमतसे[6] भी क़िस्मतकी सियाही न छुटी

आसमाँ चाँद सितारोंसे सँवरता ही रहा,
धुल सका फिर भी न तारीक ख़लाओंका ग़ुबार[7]
बन न पाई कोई तसवीर हसीन-ओ-ज़रकार
नूर हर ज़र्रए-आलमपै[8] बिखरता ही रहा

छीन भी लेता है तू मुझसे अगर ग़म अपना ०
तेरे ग़मके सिवा ग़म हाय दिगर[9] और भी हैं
मंज़रे-दर्द[10] अभी मुहताजे-नज़र[11] और भी है
इतनी महदूद[12] नहीं मेरे दुःखोंकी दुनिया

---

१. सुगन्धित वायु, २. कटुता, अरुचिकर, ३. आँसू, ४. आनेवाले दिनकी चिन्तामे, ५. मुसकान, ६ ईश्वरीय वर्षासे, ७. अँधेरी गुफाओकी धूल, ८. संसारके कण-कणपर, ९. अन्य, १०. दु:खोंके दृश्य, ११ नजरके मुहताज, १२ सीमित।

ग़मसे तपते हुए लमहाते - जवानीकी[१] क़सम
चाँदनी, मौसमे-गुल, नर्म हवा, कुछ भी नहीं
नग़मा - ओ - साज़ मए होशरुबा कुछ भी नहीं
मौत और ख़ूनके दरियाकी रवानीकी क़सम

ज़हनमें[२] बनते हैं जन्नतके निराले नक़्शे
दोज़ख़ें नाचने लगती हैं, इन ईवानोंमें[३]
अहरमन[४] चीखता है जंगके मैदानोंमें
ख़ूनमें डूबने लगते है सुनहरी सपने

क़ैसरी[५] भेंट लिया करती है इंसानोंकी
जाल फैलाये हुए आहनी दस्तूरोंका[६]
खुसरवी[७] ख़ून पिया करती है, मजबूरोंका
किस क़दर तल्ख हक़ीक़त है इन अफ़सानोंकी

रज्अत[८]

मैं हसीन कलियोंसे आग़ोश[९] सजा लूँ तो क्या
अपने ग़मख़ानोंमें[१०] इक शमअ़[११] जला लूँ तो क्या
मुसकरा लूँ भी तो क्या साज़ बजा लूँ तो क्या
वक़्तकी तल्खिए-गुफ़्तार[१२] तो मिटनेसे रही

---

१ जीवन-क्षणोकी, २ मस्तिष्कमे, ३. महलोमे, ४. बदीका खुदा, ५. बादशाहते, ६ लोहे जैसी कठोर रिवाजोका, ७. धनसत्तावादी नीति, साम्राज्य-लोलुपता, ८ पुरातन विचार, प्रगतिशीलताका अभाव, ९. गोद, १० दुःखके अँधेरेमे, ११ दीपक, १२. वार्तालापकी कटुता ।

ख़्वाबसे अपने ज़ुलेख़ा भी हो बेदार तो फिर
हो भी जाये कोई यूसुफ़का ख़रीदार तो फिर
एक आलम है हक़ीक़तसे ख़बरदार तो फिर
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

यह रविश[1] और यह हालात बदल भी जायें
यह तसव्वुर यह ख़यालात बदल भी जायें
यह शऊर और यह जज़्बात[2] बदल भी जायें
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

चूम लूँ चाँदके शफ़्फ़ाफ़[3] किनारे भी अगर
तोड़ लूँ उड़के यह रंगीन सितारे भी अगर
मोड़ दूँ ज़ीस्तके[4] बहते हुए धारे भी अगर
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

पी भी लूँ मस्त निगाहोंके इशारोंसे अगर
तल्ख़िए-ज़ीस्त मिटा भी दूँ उठाकर साग़र
मंज़रे-ग़मको[5] बना लूँ भी जो फ़िरदौसे-नज़र[6]
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

घुटके रह जायगी इक दिन यह सिसकती आवाज़
मुन्तशिर[7] टूटके हो जायगा शीराज़ए-राज़[8]
जल्वए-नाज़से भर जायगी आग़ोशे-नियाज़
वक़्तकी तल्ख़िए-गुफ़्तार तो मिटनेसे रही

---

१ ढग, २. भाव, ३ निर्मल, ४. जिन्दगीके, ५. दुःखोके वातावरणको, दृश्यको, ६ दृष्टिका स्वर्ग, ७. छिन्न-भिन्न, ८. भेदोका समूह ।

अब याद नहीं

तारोंसे सोना बरसा था, चश्मोंसे[1] चाँदी बहती थी
फूलोंपर मोती बिखरे थे ज़र्रोंकी[2] क़िस्मत चमकी थी
कलियोंके लबपर[3] नग़मे[4] थे शाखोंपै वज्द-सा[5] तारी था
खुशबूके खज़ाने लुटते थे और दुनिया बहकी-चहकी थी
ऐ दोस्त! तुझे शायद वह दिन अब याद नहीं, अब याद नहीं

सूरजकी नरम शुआओंसे[6] कलियोंके रूप निखरते हों
सरसोंकी नाजुक शाखोंपर सोनेके फूल लचकते हों
जब ऊदे-ऊदे बादलसे अमृतकी धारें बहती थीं
और हल्की-हल्की खुनकीमें दिल धीरे-धीरे तपते थे
ऐ दोस्त! तुझे शायद वह दिन अब याद नहीं, अब याद नहीं

फूलोंके साग़र अपने थे, शबनमकी सहबा[7] अपनी थी
जर्रोंके हीरे अपने थे तारोंकी माला अपनी थी
दरियाकी लहरें अपनी थी लहरोंका तरन्नुम[8] अपना था
ज़र्रोंसे लेकर तारों तक यह सारी दुनिया अपनी थी
ऐ दोस्त! तुझे शायद वह दिन अब याद नहीं, अब याद नहीं

हम दोनों एक हक़ीक़त[9] थे, हम दोनों एक फ़साना[10] थे
हम आप ही अपनी दुनिया थे हम दुनियासे बेगाने[11] थे

---

१. झरनोंसे, २ अणुओंकी, कणोंकी, ३ ओठपर, ४. संगीत, ५ मोहनी-सी, ६. किरणोंसे, ७ ओसकी मदिरा, ८. संगीत, ९. सत्य, वास्तविकता, १०. कहानी, ११. अनजान।

हम अपने राग पै हँसते थे हम अपनी आगमें जलते थे
हम अपने ही ऐशका नग़्मा थे हम अपने ही ग़मका गाना थे
ऐ दोस्त! तुझे शायद वह दिन अब याद नहीं, अब याद नहीं

यह साज़के पर्दे, यह मुतरिब[1] सब अपना तरन्नुम[2] खो बैठे
यह फूल, यह कलियाँ, यह तारे, सब अपना तबस्सुम[3] खो बैठे
यह नर्म हवाएँ, यह बादल, सब भूल गये शायद हमको
ख़ामोश मनाज़िर[4] फ़ितरतके[5] सब अपना तकल्लुम[6] खो बैठे
ऐ दोस्त! मुझे भी वह लमहे[7] अब याद नहीं, अब याद नहीं

दोराहा

"मैं कहाँ जाऊँ?"........यह आवाज़ किधरसे आई?
जैसे साग़र[8] कोई खुनके कोई शीशा टूटे
जैसे शर्मीले मुग़न्नीका[9] इरादा टूटे
जैसे सहराओंकी[10] तनहाईमें नैकी[11] आवाज़
जैसे लहरोंपै हवाओंकी थिरकता हुआ साज़[12]
"मैं कहाँ जाऊँ?"........यह आवाज़ किधरसे आई?

मैं हूँ मग़मूम[13] कि यह साज़ भी मग़मूम-से हैं
यह मेरे अश्क हक़ीक़त[14] हैं, कि मौहूम-से[15] हैं

---

१. गायक, २ संगीत, ३. मुसकान, ४ दृश्य ५. प्रकृतिके, ६ बात करना, ७ क्षण, ८. मदिरा-पात्र, ९ गायकका, १०. रेगिस्तानकी, ११. लयकी, १२ वाद्य, १३ रंजीदा, १४ वास्तविक, १५. भ्रममूलक-से।

जैसे तनहाईमें इक साज बजाता हो कोई
जैसे खामोश सितारोंको रुलाता हो कोई
"मैं कहाँ जाऊँ ?"·········यह आवाज किधरसे आई ?

कौन गुमनाम खलाओंमें[1] बुलाता है मुझे ?
कौन मानूस-सा[2] इक राग सुनाता है मुझे ?
जैसे गुज़रे हुए लमहोंको[3] पुकारे कोई
जैसे डूबी हुई किश्तीको उभारे कोई
और यह आवाज़·········यह आवाज़ किधरसे आई ?

सिर्फ़ नग़मोंके सहारोंपै कोई जी न सका
साग़रे-अश्क भी ता-जीस्त[4] कोई पी न सका
ज़िन्दगी ऐशो - मुहब्बतके सिवा भी कुछ है
जिन्दगी नग़मए - जन्नतके सिवा भी कुछ है
"मैं कहाँ जाऊँ ?"·········यह आवाज़ किधरसे आई ?

आ ! कि तलवार उठा, साज़के दिन बीत गये
यह अलम[5] हाथमें ले नाज़के[6] दिन बीत गये
तल्खिए - ज़ीस्तको[7] नग़मोंसे[8] भुलाना कबतक ?
खूँ बहानेकी जगह अश्क[9] बहाना कबतक ?
"मैं कहाँ जाऊँ ?"·········यह आवाज़ किधरसे आई ?

---

१ अज्ञात स्थानोंमे, २ परिचित-सा, ३ क्षणोंको, ४ जीवन पर्यन्त, ५. झण्डा, ६ नखरोंके, हाव-भावके, ७. जिन्दगीकी कटुताको, ८ गीतोंसे, ९. आँसू ।

आ ! कि तारोंकी क़तारें हैं, जिलोमें[1] तेरे
उठ ! कि जन्नतकी बहारें हैं, जिलोमें तेरे
चल ! कि हर गामपै[2] सज्दोंकी[3] ज़रूरत ही नहीं
सुन ! कि अब तुझसे ग़ुलामीको मुहब्बत ही नहीं

इस दोराहे पै............यह आवाज़ किधरसे आई ?



१. बागडोर, कमानमे, २. कदमपर, ३. उपासनाकी ।

'नाज़'—सुश्री वीनारानी 'नाज़'

वह दिल नहीं है कि जिसमें नासेह[1] सकून[2] है, बेकली नहीं है
वह जान क्या है जो सोज़े - उल्फ़तमें[3] ग़मसरापा[4] बनी नहीं है
क़दम - क़दमपर नफ़्स - नफ़्सपर[5] पुकारा जिसको दिले - हज़ींने[6]
न अपनी चश्मे - करमसे[7] देखा, पुकार दिलकी सुनी नहीं है
चमन है रंगीं, बहार रंगी, बहारकी हर अदा है रंगीं
अज़लसे[8] दिल जिसको ढूँढता है चमनमें वोह फूल ही नहीं है
अजब है हस्ती, हमारी हस्ती, हमारी दुनिया है खूब दुनिया
मसर्रतोंका[9] तो ज़िक्र क्या है मुसीबतोंकी कमी नहीं है,



१ नसीहत देनेवाले, २. चैन, ३ प्रेम-अग्निमे, ४ साक्षात् दु ख-रज, ५ श्वास-श्वासपर, ६ दु खी दिलने, ७. कृपालु आँखोसे, ८. सदैवसे, ९. खुशियोका ।

'नाज़'—सुश्री नाज़ बिलगरामी

ग़ज़ल

ज़िन्दगानी कट रही है एक ही उम्मीदपर
जी रही हूँ बस तुम्हारी आर्ज़ूए-दीदपर[1]
तुमको क्या एहसास[2] इक सरगश्तःओ-नाशाद[3] का
तुमसे बेदर्द ? और दर्द आशिक़े-बरबादका
सब बहारें गुलशने-हस्तीकी वीराँ हो चुकीं
सब तमन्नाएँ मेरी ख़ूँनाबः अफ़शाँ[4] हो चुकीं
ज़िन्दगी क्या है अब इक आज़ार[5] है मेरे लिए
गुलशने-हस्तीका हर गुल ख़ार[6] है मेरे लिए
वे भी क्या दिन थे कि मेरी आर्ज़ूएँ शाद थीं
क्या ज़माना था कि दिलकी बस्तियाँ आबाद थीं
फिर मुहब्बतपर बहार आये, तमन्ना हों जवाँ
फिर उमीदोंपर शबाब[7] आ जाये दुनिया हो जवाँ
फिर चले बादे-बहारी[8], फिर खिलें गुलहाए-ऐश
नग़माहाए-ऐशसे मामूर हो दुनियाए-ऐश
खोलदे तू 'नाज'पर या रब ! किताबे-ज़िन्दगी
हालमें[9] पढ़ले वह मुस्तक़बिलका बाबे-ज़िन्दगी[10]

---

१ देखनेकी आशापर, २ ज्ञान, आभास, ३ दुःखी और रंजीदाका, ४. माथेका रक्तपूर्ण सिंगार, ५ मुसीबत, ६ कॉटा, ७. जवानी, ८. मृदु-पवन, ९ वर्तमानमें, १०. भविष्य जीवनका परिच्छेद ।

हुस्नका इश्क़ राज़[1] क्या जाने ?
सादगीए - नियाज़[2] क्या जाने ?

हाय री सादगी मुहब्बतकी
यह नशेबो - फ़राज़[3] क्या जाने ?

चोट - सी दिल पै लग गई कैसी
निगहे - नीमबाज़[4] क्या जाने ?

कूच - ए - इश्क़की[5] कठिन राहें
खिज्र - सा पाकबाज़ क्या जाने ?

'नाज़'के दिल पै क्या गुज़रती है
तुझ-सा ज़ालिम यह राज़ क्या जाने ?



---

१ भेद, २ नम्रताकी सादगी, ३. परिणाम, ४. अधखुली आँखें, ५. प्रेमगलीकी ।

'नाहीद'[1]—सुश्री नीलोफ़र 'नाहीद'

ग़ज़ल

ख़ुशी जो आरज़ी शै[2] है न मैं कभी लूँगी
जो हो सका तो बस इक सोज़े-दायमी[3] लूँगी

जिगरमें दर्द, रगो-पै में टीस, आँखोंमें अश्क
तेरी ख़ुशी है तो मैं इस तरह भी जी लूँगी

निहाँ[4] है ख़ूने-जिगर ही में गर हयाते-दवाम[5]
तो मुसकराके मैं ख़ूने-जिगर भी पी लूँगी

रमूज़े - दिलको[6] छुपानेके वास्ते ऐ दोस्त !
तेरी क़सम है कि मैं अपने होंट सी लूँगी

दलीले-राहे-मुहब्बत ख़िरद[7] तो बन न सकी
जुनूने - शौक़से[8] अब दर्से - रहबरी[9] लूँगी

समझती हूँ जिन्हें नक़्क़ादे[10]-शेरो-फ़न 'नाहीद'
उन्हींसे आज मैं दादे-सुख़नवरी लूँगी

---

१. शुक्रग्रह, २. अस्थायी वस्तु, ३. स्थायी तड़प, ४. छिपा हुआ, ५. अमरत्व, ६. दिलकी बातको, ७. अक्ल, ८. उत्साह रूपी लगनसे, ९. मार्ग-दर्शकका पाठ, १०. आलोचक ।

अन्दाज़े-सितम

अरबाबे-मुहब्बतने[1] तराशे हैं सनम और
बुतखानए-फ़ितरतका न खुल जाये भरम और

करता रहे सैराबे-ग़मे-दिल[2] कोई ऐ काश !
और मैं यह कहे जाऊँ "दिये जा मुझे ग़म और"

कुछ कम नहीं तो भी, मगर ऐ गर्दिशे-दौराँ[3] !
हम क्या कहें उस बुतका है अन्दाज़े-सितम और

इस राज़से वाक़िफ़ नहीं काफ़िर हो कि मोमिन
दुनियाए-मुहब्बतके हैं दैरें[4] और हरम[5] और

जितना कोई मिटता है, रहे-इश्क़में[6] 'नाहीद' !
उनकी निगहे-नाज़का होता है करँम[7] और

इश्क़की यादगार लेके चले
इक दिले-दाग़दार लेके चले

किससे कहिए कि हम बहारमें भी
ग़मे-फ़स्ले-बहार लेके चले

जो किसीसे न उठ सका वह बार[8]
आपके जाँ-निसार[9] लेके चले

---

१ प्रेमियोने, २ दिलके दुःखोको हरभरा, ३ दुनियाकी मुसीबते, ४. मन्दिर, ५ मस्जिद, ६ प्रेम-मार्गमे, ७. कृपा, ८ बोझ, ९ जान-देनेवाले।

जाते-जाते भी तेरे कुश्तए-ग़म[1]
लज़्जते - इन्तज़ार लेके चले

तेरी रहमतकी वुसअ़तोंके[2] लिए
गुनहे - बेशुमार[3] लेके चले

और होंगे जिन्हें नसीब हैं गुल
हम तो दामनमें ख़ार[4] लेके चले

जाते-जाते यह क्या ग़ज़ब ढाया
मेरा सब्रो-क़रार लेके चले

दामने-ग़ममें तेरी यादके साथ
गौहरे - आबेदार[5] लेके चले

आज 'नाहीद' उनकी महफ़िलसे
आहे-सद शोला बार लेके चले

दामने-शकेबाई[6]

दिलने यूँ ली है आज अँगड़ाई
जैसे कोई मुराद बरआई[7]

आ रहे है खिंचे हुए जल्वे
किस क़दर पुर कशिश है तन्हाई

---

१. गममे मिटे हुए, २. विस्तीर्णताके, ३ अनगिनत अपराध, ४. काँटे, ५. आबदार मोती, ६. सब्रका दामन, ७. इच्छा पूर्ण हुई ।

किसकी यादे-हसींकी आमद है ?
बैठे-बैठे जो आँख भर आई

करवटें ले रही है दिलमें अभी
अव्वल - अव्वलकी वह शनासाई[1]

निस्बते - हुस्नपर नहीं मौक़ूफ़
आप अपना है इश्क़ सौदाई

ज़ब्ते-ग़मका है अब ख़ुदा हाफ़िज़
चाक[2] है दामने - शकेबाई

हुस्नने हार मान ली 'नाहीद'
इश्ककी शायद आज बन आई ।



१. जान-पहचान, २ फटा हुआ ।

'निक्हत'—सुश्री जहाँ निक्हत गुलशनाबादी

ग़जल

खफ़ा हो किस लिए मैने कहा क्या ?
बताओ तो हुई मुझसे ख़ता क्या ?

हसीनोंका जफ़ाकारी[1] है पेशा
फिर उनकी बेवफ़ाईका गिला[2] क्या ?

शिकिस्तः साज़[3]को क्यों छेड़ते हो ?
मेरे टूटे हुए दिलकी सदा[4] क्या ?

जो सरसे पाँव तक काफ़िर है काफ़िर
उन्हें नामे - खुदासे वास्ता क्या ?

नहीं जब अम्ने - साहिलकी[5] ज़रूरत
तो फिर फिक्रे-खुदा-ओ-नाख़ुदा[6] क्या ?

जफ़ा भी[7] अब तो उन्क़ा[8] हो गई है
वफ़ाका ज़िक्र ऐ 'निक्हत'! भला क्या ?



---

१. जुल्म करना, २. शिकायत, ३. टूटे वाद्यको, ४. आवाज, ५. किनारेके सुखकी, ६. ईश्वर और मल्लाहकी चिन्ता, ७. बुराई, अत्याचार, ८. दुष्प्राप्य, एक पक्षीका नाम ।

'निक्हत'[1]—सुश्री शकीला बेगम निक्हत

बहार बनके तू आ जा कि जा चुकी है बहार

गुलोंको ओससे नहलाके जा चुकी है बहार
मुझे तो खूनके आँसू रुला चुकी है बहार
मेरी तो दुनिया मिटाकर ही जा चुकी है बहार
फ़कत मुझे यही नग़मः लिखा चुकी है बहार
बहार बनके तू आ जा कि जा चुकी है बहार

इन अन्दलीबोंके[2] नग्मोंकी लोरियोंकी क़सम
नसीमे-सुबहकी[3] उन मीठी थपकियोंकी क़सम
वोह तेरी यादकी दिलदोज़[4] हिचकियोंकी क़सम
तुझे गुलिस्ताँकी[5] रंगीन तितलियोंकी क़सम
बहार बनके तू आ जा कि जा चुकी है बहार



---

१ सुगन्ध, २. बुलबुलोंके, ३. प्रातःकालीन वायुकी, ४. दिलमे असर करनेवाली, ५. उद्यानकी ।

'निगाह'—सुश्री ज़ह्रा 'निगाह'

छलक रही है मएनाब[1] तिश्नगीके[2] लिए
सँवर रही है तेरी बज़्म[3] बरहमीके[4] लिए

नहीं-नही हमें अब तेरी जुस्तजू[5] भी नहीं
तुझे भी भूल गये हम तेरी ख़ुशीके लिए

जहाने-नौका[6] तसव्वुर हयाते-नौका[7] ख़याल
बड़े फ़रेब[8] दिये तुमने बन्दगीके लिए

कहाँके इश्क़ो-मुहब्बत, किधरके हिज्रो-विसाल[9]
अभी तो लोग तरसते है ज़िन्दगीके लिए

जो ज़ुल्मतोंमें हवीदा[10] हो क़ल्बे-इंसाँसे[11]
ज़ियानवाज़[12] वह शोला[13] है तीरगीके[14] लिए

न मंज़िलोंकी तमन्ना, न रहगुज़र[15]की तलाश
न जाने किसपै भरोसा है रहबरी[16]के लिए

जो कर रहे हैं पसे-पर्दा, दुश्मनी अबतक
बड़े ख़ुलूससे[17] आये थे दोस्तीके लिए

---

१. निर्मल और खालिस मदिरा, २ प्यासके लिए, ३. महफिल, ४ तितर-बितर होनेके लिए, ५ तलाश, ६. नवीन युगका, ७ नव-जीवनका, ८. चकमे, ९. विरह और मिलन, १० प्रकट, ११. मानव-हृदयसे, १२. सूर्य्य, १३. चिनगारी, १४. अँधेरेके, १५. पगडण्डीकी, १६. मार्ग दिखानेके लिए, १७. सहृदयतासे ।

मए-हयातमें[1] शामिल है तल्खिए-दौराँ[2]
जभी तो पीके तरसते है दोस्तीके लिए
तेरे जहानकी हर दिलकशी सलामत है
मेरी 'निगाह' भटकती है, आदमीके लिए

यह हुक्म है कि अँधेरोको रोशनी समझो
मिले नसीब तो कोहो-यमनकी[3] बात करो
फ़रेब खुर्दए-मंज़िल[4] है हमको क्या मालूम
ब-तर्ज़े-राहबरी[5] रहज़नीकी[6] बात करो
क़दम-क़दम पै फरोज़ाँ[7] है आँसुओके चिराग़
इन्हें बुझाओ तो सुबहे-वतनकी बात करो
बहार आये तो चुप चाप ही गुजर जाये
न रंगो-बूकी, न सरू-ओ-समनकी[8] बात करो
खिजाँने[9] आके कहा मेरे ग़मसे क्या हासिल ?
जहाँ बहार लुटी उस चमनकी बात करो
नहीं है मै[10] न सही चश्मे-इल्तफात[11] तो है
नई है बज़्म[12] तरीक़े-कुहनकी[13] बात करो

---

१ जीवन-मदिरामे, २ जमानेकी कटुता, ३. पर्वतो और लाल याकूतोके देशकी, ४. मार्गमे धोका खाये हुए, ५. मार्ग-दर्शकके ढगपर, ६. लुटेरेपनकी, ७. प्रकाशवान्, ८. सरू वृक्ष और चमेलीकी, ९. पतझड़ने, १०. मदिरा, ११ कृपादृष्टि, १२ महफिल, १३ पुराने ढंगकी ।

जहाँ पर मुहरे-ख़ामोशी लगी है होंटोंपर
जो कर सको तो उसी अंजुमनकी बात करो
हुज़ूर काफ़ी सुखन-फ़हम भी हैं फ़नकारो !
ग़ज़लके रंगमें दारो-रसनकी बात करो

सब्रो - ज़ब्तके लेके बेशुमार नज़राने
तेरी याद आई थी, आज मुझको समझाने
पा गये है मंज़िलको ख़ुद-ब-ख़ुद ही दीवाने
अक़्लके दोराहे पै खो गये है फ़रज़ाने[1]
तुमने बात कह डाली, कोई भी न पहचाना
हमने बात सोची थी, बन गये हैं अफ़साने
उन नई बहारोंपर उन नये नज़ारोंपर
एक रिन्द[2] ही क्या है, रो रहे है मैख़ाने[3]
हाय क्या मुसीबत है, हाय क्या क़यामत[4] है
हम ही खा गये धोका, हम चले थे समझाने

ख़ुश जो आये थे पशेमान[5] गये
ऐ तग़ाफ़ुल[6] तुझे पहचान गये
ख़ूब है साहिबे-महफिलकी अदा
कोई बोला तो बुरा मान गये

---

१. बुद्धिमान्, दक्ष, २ मद्यप, ३. मदिरालय, ४. प्रलय, ५. शर्मिन्दा, ६. उपेक्षा ।

कोई धड़कन है, न आँसू, न उमंग
वक़्तके साथ यह तूफ़ान गये

इसको समझे कि न समझे लेकिन
गर्दिशे-दहर[1] तुझे जान गये

तेरी एक-एक अदा पहचानी
अपनी एक-एक ख़ता मान गये

उस जगह अक़्लने धोका खाया
जिस जगह दिल! तेरे फ़रमान गये



१ ससार-चक्र, दुनियाकी मुसीबत ।

'नुज़हत'[1]—सुश्री नुज़हत नजमी मुजफ़्फ़रनगरी

फ़रेबे-नजर

दिलमें वह शर्मसार है अबतक
ख़ुद-ब-ख़ुद बेक़रार है अबतक
इश्क़की यादगार है अबतक
दिल मेरा दाग़दार है अबतक
हम पहुँच तो गये हैं मंज़िलपर
जुस्तजूए - क़रार[2] है अबतक
लाल-ओ-गुलकी चाक दामानी
मेरी आइनादार है अबतक
दिले-मायूसको[3] न जाने क्यों
जैसे कुछ इन्तज़ार है अबतक
उनकी हर बातपर ख़ुदा जाने
क्यों मुझे ऐतबार है अबतक
ज़ेरे-लब कौन गुनगुनाया था ?
रूह[4] वक़्फ़े-खुमार[5] है अबतक
फ़स्ले-गुल[6] आगई मगर दिलको
इन्तज़ारे - बहार है अबतक
टूट जाये न दिल कहीं 'नुज़हत'
यूरिशे - रोज़गार है अबतक

---

१. पवित्रता, २. चैनकी तलाश, ३. निराश दिलको, ४. प्राण, ५. नशेमे मस्त, ६. बहार।

'नुदरत'[1]—सुश्री सुरैय्या महमूद 'नुदरत'

गजल

अब तो नाकामी ही तक़दीर बनी जाती है
जिन्दगी दर्दकी तसवीर बनी जाती है

तेरा मिलना ही था मेराजे-मुहब्बत[2] लेकिन
तुझसे दूरी मेरी तक़दीर बनी जाती है

है करिश्मा यह अनोखा शबे-महजूरीका[3]
तीरगी[4] सुबहकी तनवीर[5] बनी जाती है

राहें मसदूद[6] है, महदूद[7] है दुनिया मेरी
ज़िन्दगी हलक़ए-जंजीर[8] बनी जाती है

महफिले-हुस्नकी थी, ज़हनमें हल्की-सी झलक
वही फरदौसकी[9] तसवीर बनी जाती है

कौन-सा राज[10] है, दिलका जो नहीं उन पै अयॉ[11]
खामुशी ही मेरी, तक़रीर[12] बनी जाती है

आहकी बे-असरीका भी मुझे होश नहीं
बे-खुदी[13] जल्वए-तासीर[14] बनी जाती है

---

१ नवीनता, २. प्रेमलक्ष, ३ विरह-रातका, ४. अँधेरापन, ५ ज्योति, ६. अवरुद्ध, रुकी हुई, ७. सीमित, सकीर्ण, ८. कैदी, परतत्र, ९. अन्नतकी, १० भेद, ११. प्रकट, १२ वाणी, वार्त्ता, १३. आत्मलीनता, बेहोशी, १४ प्रभावक ।

राज़े-ग़म[1] कैसे छुपाऊँ कि ख़मोशी भी मेरी
मेरे एहसासकी तफ़सीर[2] बनी जाती है
इक जफ़ा-पेशा[3] कि बेगाना अदाई[4] 'नुद्रत'!
मेरे हर ख़्वाबकी ताबीर बनी जाती है

ग़ज़ल

तेरा राहमें आस्ताना[5] पड़ेगा
तो सरको खुशीसे झुकाना पड़ेगा
तेरा ग़म मेरी ज़िन्दगी बन चुका है
ख़ुशीसे हर-इक ग़म उठाना पड़ेगा
मचल जायेंगे अश्क[6] आँखोंमें मेरी
तो दामन तुम्हींको बढाना पड़ेगा
जो दुनिया बसाई थी उल्फ़तकी हमने
उसे अपने हाथों मिटाना पड़ेगा
यह राहे-वफ़ा, और यह पुरख़ार मंज़िल[7]!
सम्भलकर क़दम अब उठाना पड़ेगा
वह आतिश जो पिन्हाँ[8] है सीनेमें अबतक
उसे आँसुओंसे बुझाना पड़ेगा
सलामत रहे बेरुख़ी उनकी 'नुद्रत'
सिवा उनके हर शै भुलाना पड़ेगा

---

१. दुःखका भेद, २. भावोका स्पष्टीकरण, ३ अत्याचार करना जिसका स्वभाव है, ४. अनजान-सा बननेवाला, ५ द्वार, ६. आँसू, ७. कण्टकाकीर्ण मार्ग, ८ छिपी हुई।

गजल

शमएँ बुझीं, फ़लकसे[1] सितारे चले गये
उनसे बिछुड़के सारे सहारे चले गये
मोजे-बलाओ शोरिशे-तूफाँका[2] क्या गिला[3]
पास आके और दूर किनारे चले गये
कैसी बहार, कैसा चमन और कहाँके फूल
तुम क्या गये यह सारे नज़ारे चले गये
तुम यूँ गये कि मुड़के भी देखा न एक बार
हम अश्कबार[4] तुमको पुकारे चले गये
मामूर[5] कर दिया था जिन्हें तुमने हुस्नसे
रातें गईं, वह चाँद सितारे चले गये
बे आसरा ख़ुदा न करे यूँ भी कोई हो
एक - एक करके सारे सहारे चले गये
'नुदरत' कभी तो आयेगा दौरे-बहार भी
इस आरज़ूमें[6] वक्त गुज़ारे चले गये

ग़मकी यह रात ढले या न ढले
तीरगी[7] कहती है इक शमअ[8] जले
अपनी महफ़िलकी बहारोंको सँभाल
तेरे दीवाने कहीं और चले

---

१. आकाशसे, २. लहरोंकी भयानकता और तूफानके शोरका, ३ शिकायत, ४ अश्रुपूर्ण, ५ प्रकाशित, ६. उम्मीदपर, ७. अँधियारी, ८. मोमबत्ती ।

लौ हुई तेज़ चराग़े - दिलकी
अब कोई शमअ़ जले या न जले
जाने, है कौन - सी दुनिया आबाद
तेरी ज़ुल्फ़ोंकी घनी छाँव तले
हर क़दमपर है कोई मोड़ नया
कह दो 'नुद्रत' से कि बच-बचके चले

धोके खाये है गो हज़ार अबतक
है मगर उनका एतबार अबतक
लग गई आग आशियाँको[1] मेरे
बर्क़[2] फिर क्यों है बेक़रार अबतक
जानती हूँ कि तुम न आओगे
फिर भी करती हूँ इन्तज़ार अबतक
गो तुम्हारी जफ़ासे हूँ वाक़िफ़
दिल मगर कर रहा है प्यार अबतक
जबसे उनसे निगाह चार हुई
जख्मे - दिल खाये बे शुमार अबतक
कैसी आई थी यह ख़िज़ाँ[3] 'नुद्रत'!
कि फ़ज़ामें[4] है इन्तशार[5] अबतक



---

१. नीड़को, घरको, २ बिजली, ३. पतझड, ४ वातावरणमे, ५ परेशानी।

'नुसरत'[1]—सुश्री नुसरत क़ुरैशी

खुदा मालूम

जब उसने मुझसे मेरा हाले-दिल किया मालूम
खुद उसकी आँखमें आँसू थे क्यों खुदा मालूम

हुए असीर[2], जला आशियाँ[3], गिरी बिजली
फिर उसके बाद गुलिस्ताँका[4] हाल क्या मालूम

बड़े दिनोंसे बहारोंकी आज़ू थी मगर
लुटेंगे फस्ले-बहारोंमें यह न था मालूम

हवाए-तुन्द[5] है, तूफाँ है, दूर साहिल[6] है
मेरे सफीनेका[7] अंजाम[8] नाखुदा[9] मालूम

न दिल दही[10] न तशफ़्फ़ी[11] न इल्तफ़ात[12] ऐ दोस्त!
यह इब्तदाका[13] है आलम तो इन्तहा[14] मालूम

जफासे पहले ज़रा यह तो सोच लें दिलमें
हुई जो वह भी हमें आपकी वफा मालूम

कसक जो दर्दकी पूछो तो वह है ला-महदूद[15]
जो दिलकी चोटको पूछो तो वह है ना मालूम

---

१ सहायता, समर्थन, २. कैदी, वन्दी, ३ नीड, घर, ४. उद्यानका, ५ प्रचण्ड हवा, आँधी, ६ किनारा, ७. नावका, ८ परिणाम, ९ मल्लाह, १०, ढारस, सान्त्वना, ११ तसल्ली, १२ कृपा, १३. प्रेमके प्रारम्भका, १४ अन्त, १५ असीमित।

कुछ इस अदासे वह करते हैं मुझसे इस्तफ़सार[1]
कि जैसे उनको नहीं दिलका मुद्दआ[2] मालूम
हर-एक बातमें इलज़ाम दूसरोंको दिया
कभी किसीको न अपनी हुई ख़ता मालूम
ये मुद्दईसे[3] ज़ियादा हैं दुश्मनोंसे सिवा
समझ रहे हो तुम अपनोंको क्या खुदा मालूम
ज़माना रंग बदलता है किस तरह 'नुसरत'
यह इन्क़िलाबके सद्क़ेमें हो गया मालूम



१ प्रश्न, हाल-चाल पूछना, २ अभिप्राय, उद्देश्य, ३ वादीसे।

'नूर'—सुश्री नूरजहाँ बेगम 'नूर' बदायूनी

औरत

औरत इस दुनियामें वह मज़मूअए-अज़्दाद[1] है
जिसके दिलमें वुस्अते-अर्ज़ो-समाँ[2] आबाद है
हर कलीकी बू है यह, हर फूलका यह रंग है
देखकर नैरंगियाँ इसकी जमाना दंग है
ज़ीनते-महफ़िल[3] भी है, आराइशे-खिल्वत[4] भी है
है कभी ग़ुंचा[5], कभी गुल[6], और कभी निकहत[7] भी है
इसकी पस्तीमें[8] निहाँ तहतुस्सराकी[9] पस्तियाँ
और इसकी रफ़अतें[10] बालाए-सतहे-आस्माँ[11]
इश्क़में है इसके मुजमिर[12] सोजिशे-बर्क़े-तपाँ[13]
हुस्न इसका आलमे-ईजादकी रंगीनियाँ[14]
पाँवमें है बेड़ियाँ लाखों मगर आज़ाद है
क़ल्बमें[15] जज़्बातकी दुनियाए-नौ आबाद[16] है
सादा दिल ऐसी कि बदले सूदके[17] ले ले ज़ियाँ[18]
नुक्तादाँ ऐसी उड़ा दे अक़्लकी भी धज्जियाँ

---

१. पुरखोकी समष्टि, पूर्वजोकी शृंखलावर्द्धक, २. पृथ्वी-आकाशकी विस्तीर्णता, ३ महफिलकी शोभा, ४. एकान्तकी सजावट, ५. कली, ६ फूल, ७. सुगन्ध, ८ पतनमे, ९. पातालकी पतितावस्था छिपी हुई है, १०. उड़ान, उच्चता, ११. आकाशसे उच्च, १२ घुली-मिली, १३. बिजलीकी तपिश, १४ ससारकी रौनक, १५ दिलमे, १६ नवीन संसारकी भावनाओका अस्तित्व, १७ लाभके, १८ हानि ।

गुंचए-फ़रदौस है बाग़े-इरमका फूल[1] है
आमिले-फ़ितरत[2] है यह, हर शै यहाँ मामूल है

बज़्मे-इशरत[3] आश्नाए-खन्दए-क़ल्क़ल[4] है यह
इस गुलिस्ताने जहाँकी[5] खुशनवा[6] बुलबुल है यह

दस्ते-फ़ितरतमें[7] है इक तुर्फ़ा खिलौना इसकी ज़ात
है वजूद[8] इसका जहाँ में रौनक़े-बज़्मे-हयात[9]

नाज़ उठाती है, मगर ख़ुद भी सरापा नाज़ है
नग़मे रखती है मगर एक साज़े-बे-आवाज़ है

वज्हे-शोरिश[10] भी, सकूने आलमे-इमकाँ[11] भी यह
क़ुल्ज़मे-तख़लीक़का[12] साहिल[13] भी यह तूफ़ाँ[14] भी यह

है वह दुख़्ते-नेक अख़्तर मादरे एय्यामकी[15]
जिसके ज़ुल्फ़ो-रुखसे[16] है तशरीह[17] सुबहो-शामकी

अलग़रज़ औरत है इक जामअ़ किताबे-कायनात[18]
ग़ैर फ़ानी शै[19] थी, गर होती न दुनिया बेसबात[20]



१. जन्नतका फूल, २. कार्य रूपमे परिणत करनेवाली, ३. सुख देनेवाली महफिल, ४. वाणीकी मुसकानसे परिचित, ५. संसार वाटिकाकी, ६. मधुर स्वरवाली, ७. प्रकृतिके स्वभावमे, ८. अस्तित्व, ९. जीवनकी महफ़िलकी रौनक़, १०. उपद्रवका कारण, ११ विश्वशान्ति, १२. निर्वाण रूपी दरियाका, १३ किनारा, १४. तूफान, १५. ससार रूपी माँकी नेक पुत्री, १६ जुल्फ़ और कपोलोसे, १७ भाष्य, १८ ससारकी प्रामाणिक पुस्तक १९. अमर वस्तु,, २०. नश्वर।

'नैयिर'—सुश्री नवाब ज़किया सुल्ताना नैयिर साग़र निज़ामी

मिलनकी जोत

मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

मिलनसें शक्ति मिलनमें मुक्ती, मिलन है चारों खूँट
कोढसे बढ़कर रोग है वीरन ! यह आपसकी फूट
इकला और गुमराह मुसाफ़िर आप है अपनी लूट
अतलसके बिखरे हुए डोरे आप है अपनी टूट
पर रेशमकी कोमल लच्छी दे आहनको दान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

आप ही अपने दिये बुझाकर घरको करें ज़ुल्मात
अपने चमनको आप ही फूँकें, आप ही सेकें हात
आप ही खोटी चालें सोचें, आप ही खायें मात
अपने चप्पू आप ही तोड़ें तूफ़ॉमें दिन-रात
अपनी नैय्या आप डुबोयें, बनकर ख़ुद तूफ़ान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

---

१ सूर्य्य, २ अन्धकार पूर्ण ।

हिन्दू-मुस्लिम बातिनमें[1] है दो तन और इक जान
जान जुदा तनसे हो जाये नहीं कोई आसान
फूट तेरा तन-मन डस लेगी, इस नागिनको जान
तारे टूटें बिजली कड़के लाख आयें तूफ़ान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

मेरे अभागे देशके बासी यूँ हैं कपटसे ख्वार
जैसे लड़ें आपसमें भिकारी धनमन्तोंके द्वार
गुन अपने गाती है तबाही हँसता है संसार
आज़ादी बैठी रोती है, कैसी हुई यह हार
पहली ही मंज़िल पै पहुँचकर भटक गये नादान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

रूठोंको सीनेसे लगाले फूटको मनसे निकाल
मिलनका मंतर जपले बीरन ! तोड़ दे इसका जाल
देशका कस-बल टूट रहा है जनता है कंगाल
कब तक बर्बादीके झक्कड़, कब तक यह भूचाल
देश है प्याला तू है मदिरा, देश शरीर है तू है जान
मानवता दीपक है और आजादी जोत समान
मिलनकी मनमें जोत जगाले, मिलनका करले ज्ञान

---

१. प्रकटमें ।

ग़ज़ल

शबे-ग़म सदा उनकी आने लगी है
मेरी रात फिर गुनगुनाने लगी है
गुल उनका तबस्सुम[1] चुराने लगे हैं
सबा[2] उनके पैग़ाम[3] लाने लगी है
मेरी आहकी नारसाई[4] तो देखो
सितारोंसे आगे भी जाने लगी है
जो डूबी हुई थी अँधेरेमें ग़मके
वह क़ौसे-कुज़ह[5] मुसकराने लगी है
जो पामाले-बेइल्तफाती[6] थी कल तक
वही ख़ाक अब मुसकराने लगी है
नई एक झंकार उठी साज़े-दिलसे
उम्मीद एक नग़मा-सा[7] गाने लगी है
उलट दी जुनूँने बिसाते-मुहब्बत
ख़िरद[8] मात-पर-मात खाने लगी है
मुबारक सर अफ़राज़िए-इश्क़[9] 'नैयिर'!
मेरी याद अब उनको आने लगी है

---

१ मुसकान, २. वायु, ३. सन्देश, ४ पहुँच, ५. इन्द्रधनुप, ६. अकृपाओंके कारण पददलित, ७. गीत-सा, ८. अक्ल, ९. प्रेमीका उच्च मस्तक, स्वाभिमान।

जफ़ा जू[1] किस क़दर है, यह ज़माना आज़माते है
हज़ारों ज़ख़्म खाते है, मगर हम मुसकराते हैं

किसी टूटे हुए मअबदमें[2] जैसे रो उठे दीपक
दिले-वीराँमें यादोंके दिए यूँ टिमटिमाते है

मेरी टूटी हुई किश्ती बिसाते-जश्ने-तूफ़ाँ[3] है
तलातुम[4] रक्स[5] करते हैं, किनारे मुसकराते हैं

मेरी आँखोंमें तारीख़े-जफ़ाए-ज़िन्दगी[6] पढ़कर
सितम हाए-ज़माना मेरी हिम्मत आज़माते हैं

यह मेरे अश्क हैं, तारीख़ नग़माते-मुहब्बत भी
उन्हीं अश्कोंमें 'नैयिर' हालो-माज़ी[7] मुसकराते हैं



---

१. अत्याचारी, २. उपासना-गृहमें, ३. तूफ़ानके उत्सवकी बिछावन, ४. तूफान, ५. नृत्य, ६. जिन्दगीके अत्याचारोंका इतिहास, ७. वर्त्तमान और भूतकाल।

'नौशाद'[1]—मुंशी नौशाद किदवाई

यादे-माज़ी[2]

धुँधली - धुँधली ख़मोश राहोंपर
कौन जाता है सर झुकाये हुए ?
लब भिंचे-से मगर रवाँ[3] आहें
बन्द पलकों पे अश्क आये हुए
लग़ज़िशें हर कदम पे कुछ ऐसी
बार[4] जैसे कोई उठाये हुए
एक नग़्मा लबोंमें उलझा-सा
साज सीनेसे इक लगाये हुए
अहदे रफ़्ताकी[6] सरज़मीं है यहाँ
यादे-माज़ी रवाँ यहीं है कहीं

नग़मए-जिन्दगी[7]

ज़िन्दगीके लबे-नौशींसे[8] सदा[9] आती है—
'मेरे ख़ुमख़ानए-ऐय्याममें[10] इशरतें[11] तो नहीं' ?

---

१. एक मशहूर मलकाका नाम, २. भूतकालकी स्मृति, ३ प्रवाहित, ४. बोझ, ५. गीत, ६ बीते युगकी, ७ जिन्दगीका गीत, ८. जीवनके ओठोंसे, ९. आवाज, १० दिनरूपी मदिरालयमे, ११. सुख-भोग ।

मुझको बदमस्त बनानेकी अदा होती है,
ज़हरे-ग़मके[1] लिए तिरयाक़[2] मसर्रत[3] तो नहीं ?
मेरे आँचलसे मुहब्बतकी हवा आती है
मेरे दामनमें कोई ख़्वाबे-हक़ीक़त[4] तो नहीं ?

मुझमें इक सोज़े-तमन्नाकी तपिश[5] है लेकिन
हुस्ने-यज़दाँ[6] मेरे काशानेकी[7] क़िस्मत तो नहीं
ज़ौक़े-इसियाँ[8] मेरा काँटोंकी ख़लिश[9] है लेकिन
दर्दको कैफ़[10] बनानेकी ज़रूरत तो नहीं
मेरी उफ़तादगियोंमें[11] भी कशिश है लेकिन
मेरे कूचेमें कोई मंज़िले-रफ़अ़त[12] तो नहीं

मैं जहाँ तक हूँ वहीं तक है वजूदे-आलम[13]
मानती हूँ कि अबद[14] तक मेरी वुसअ़त[15] तो नहीं
रक़्स[16] करती हुई और पीती-पिलाती बाहम[17]
बढ़ती जाती हूँ ठहरना मेरी फ़ितरत[18] तो नहीं
ज़ख़्म एहसासपै[19] कितने ही लगे हों ताहम[20]
मेरे एहसासको इक आहकी फ़ुर्सत तो नहीं



१. दुःखरूपी विषके लिए, २. विषहर औषधि, अफीम, ३. ख़ुशी, ४. वास्तविकताका स्वप्न, ५. इच्छाओंकी तपिश, ६. ईश्वरीय नूर, ७. घरकी, ८. पापका शौक, ९. चुभन, १०. नशीला, ११. बरबादियोंमें, १२. विस्तृत मंज़िल, १३. संसारका अस्तित्व, १४. सदैवको, १५. शक्ति, सामर्थ्य, १६. नृत्य, १७. परस्पर, १८. स्वभाव, १९. भावनाओंपर, मनपर, २०. तौभी।

नोशाबः—सुश्री नोशाबः ख़ातून क़ुरैशी

अपनी हस्तीको मिटाकर बन, फ़रोग़े-अञ्जुमन[1]
शमअ़से[2] कुछ सीख ले, सोजो-गुदाजे-ज़िन्दगी[3]

है नवाए-तल्ख़[4] यारब! सोजो-साज़े-ज़िन्दगी[5]
नग़मए-शीरीं[6] सुना बरबत-नवाजे-जिन्दगी[7]

मुन्तशिर शीराज़ए-औराके-हस्ती[8] जब हुआ
आश्कारा[9] हो गया दमभरमें राजे-जिन्दगी[10]

है सकूने-मौतसे[11] बदतर, सकूने-इन्जमाद[12]
सई-ओ-हरकत[13] दहरमें[14] है एहतियाज़े-जिन्दगी[15]



---

१. सभाओंका प्रकाश, उन्नति, २ दीपशिखासे, ३ जीवनको जलाकर पिघलनेकी विद्या, रुला देनेवाली कैफियत, ४. कडवी बातें, ५ जीवनकी दुःखभरी बाते कहना, ६. मधुर गीत, ७ जीवनवाद्य बजानेवाले, ८. जीवन-रूपी पुस्तकके पृष्ठ जब तितर-बितर हुए, ९ स्पष्ट, प्रकट, १० जीवन-भेद, ११. मृत्युकी शान्तिसे, १२. स्थायित्वकी शान्ति, स्थिरताके चैनसे, १३. प्रयास और पराक्रम, १४. संसारमे, १५. जीवन-अस्तित्व।

'पर्वी'[1]—सुश्री पर्वी मुरादाबादी

क़तआत

मौजे-सराब—

चार दिनका शबाब[2] है दुनिया
ख़्वाब[3] है एक ख़्वाब है दुनिया
दिले-नादाँ[4] ! समझ न आबे-हयात[5]
एक मौजे-सराब[6] है दुनिया

दौलते-दिल—

हर निशाँ वजहे-बे-निशानी है
इक फ़साना है, इक कहानी है
दौलते-दिल है, [7]जाविदाँ 'परवीं'
और जो कुछ यहाँ है, फ़ानी[8] है

तल्ख़-हक़ीक़त[9]—

सीना-कावी[10] है, दिल फिगारी[11] है
ज़िन्दगी एक बेक़रारी है
बज़्मे-आलमके[12] ज़र्रे-ज़र्रे पर[13]
कैफ़े-सहबाए-यास[14] तारी[15] है

---

१. गुच्छा, २. रूप, यौवन, ३. स्वप्न, ४. मूर्ख दिल, ५. अमृत, ६. मृगमरीचिका, ७. अमर, ८ नाशवान्, ९. कटु सत्य १०. दागदार दिल, ११. घायल, १२ संसाररूपी महफ़िलके, १३. अणु-अणुपर १४. निराशारूपी शराबकी मस्ती, १५. छाई ।

'पर्वी'—सुश्री पर्वी रागव

अअदों[1]से है, शिकवा न मुझे तुमसे गिला है
वह देख रही हूँ जो मुक़द्दरमें लिखा है
मुझको यह सबक़ दानए-गन्दुमसे[2] मिला है
दर अस्ल वफ़ा[3] तकमीलय-ए-नक़्शे-फ़ना[4] है
क्योंकर न मैं उस दर्दको सीनेमें जगह दूँ
सरकारे-मुहब्बतसे यह इनआम मिला है
अब तक है, तेरी याद अनीसे-दिले-मुज़तर[5]!
दुनिया-ए-तसव्वुर[6]में तू ही जल्वानुमा[7] है
देख इस बुते-रअ़नाको[8] सनमखान-ए-दिलमें[9]
मुश्ताके-तजल्ली[10]! हरमो-दैरमें[11] क्या है?
उनवान[12] है दो एक ही अफ़सानेके वरना
जो दैरमें बुत है, वही काबेमें ख़ुदा है
माल्म है, 'परवी' तेरे नग़मोंकी हक़ीक़त
यह रब्बे-दो-आलमकी फ़कत लुत्फ़ो-अ़ता है



१. प्रतिद्वन्द्वियोंसे, २. गेहूँके दानेसे, ३ जिन्दगी, ४ मृत्यु ही जीवन, ५ बेचैन दिलके साथी, ६ ध्यानके संसारमें, ७ प्रतिबिम्बित, आसीन, ८. सुन्दर प्रियतमको, ९ हृदय-मन्दिरमें, १० प्रकाशके इच्छुक, ११ मसजिद-मन्दिरमें, १२ शीर्षक।

'पर्वी'—सुश्री आइशा पर्वी

बीत रही बरसात

रैन अँधेरी सावनकी ऋतु छाई घटा घनघोर
बादल गूँजे, बिजली चमके, धक-धक हो मन मोर
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
ठंडी-ठंडी हवाके झोंके, मन मोरा लहराये
कोयलकी दरदीली सदाएँ, हूक-सी चुभ-चुभ जाये
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
बिना सजन यह सावन झूला, मन मोरा थर्राय
गीत सखी मैं कैसे गाऊँ, हाय जिया कलपाय
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
रो-रो तड़पूँ चैन न पाऊँ, हाय जिया घबराय
साजन अब तक घर ना आये, रह-रह याद सताय
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
रहते थे जब पास पिया, जगमें सब कुछ अपना था
देख लिया याँ जो कुछ देखा, कितना सुन्दर सपना था
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात
भूल गये, परदेस बसे, प्रीतका रोग लगाना था
साजन क्या सच रूठ गये, दो दिन मुझको हँसाना था
किसे बताऊँ मनकी बात, बीत रही बरसात

'पिनहाँ'[1]—सुश्री सिपिह्र[2] आरा राबिया बरेलवी

फिर नये अपने ज़मी-ओ-आसमाँ पैदा करें
मावराए-लामकाँ[3] अपना जहाँ पैदा करें
फूँक डालें जो हवादसके[4] ख़सो-खाशाकको[5]
आतिशी आहोंसे[6] ऐसी बिजलियाँ पैदा करें
कायनाते-हुस्नमें[7] आ जाये जिससे ज़लज़ला
क़ारे-दिलसे वह नवाये-ख़ूँफ़िशाँ[8] पैदा करें
खेलते हो इस शकिस्ता साजके[9] तारोंसे क्या
दिलके टुकड़े क्या, नवाये-दिलसिताँ[10] पैदा करें
कारगर हो जायगा 'पिनहाँ' कभी जज़्बे-जुनूँ[11]
नालए-शबगीरो-सोज़े-जाविदाँ[12] पैदा करें

नियाज़ो-नाज़[13] ना मक़बूल[14] दोनों
न समझी मै कि है तेरी रज़ा[15] क्या ?
जबीने-हुस्नपर[16] सुर्खी-सी दौड़ी
निगाहे-आज़ूने[17] कर दिया क्या ?

---

१ छिपी हुई, २ आकाश, ३ ससारसे परे, ४ मुसीबतोंके, ५ घास-तिनकोंको, ६ आहरूपी आगसे, ७ रूपकी दुनियामे, ८. रक्तरंजित गीत, ९. टूटे वाद्यके, १०. हृदय-वीणाके स्वर, ११. प्रेमोन्मादका विचार सफल होगा, १२ पिछली रातको उठनेवाली आहोमे स्थायित्व, १३ नम्रता और अभिमान, १४ अरुचिकर, १५ इच्छा, १६. रूपके मस्तक पर, १७ इच्छा दृष्टिने ।

न जाने क्या समझकर हँस पड़े हैं
यह है तमहीद[1] ज़ौक़े-एतना[2] क्या ?
ज़फ़ाओ-नाज़की ख़ूगर[3] हूँ 'पिनहाँ'
ख़ुदा मालूम है रस्मे-वफ़ा क्या ?

दीदनी[4] है तेरे अ़ताबका[5] रंग
शीशए-चश्ममें[6] शराबका रंग

शीशए-मीनामें[7] 'पिनहाँ' बर्क़[8] है
हुस्ने-पुरफ़न[9] आज ज़ेरे-दाम[10] है



१. भूमिका, २. उपेक्षाके शौकको, ३. अभ्यस्त, ४. देखने योग्य, ५. क्रोधका, ६. आँखरूपी प्यालोंमे, ७. मदिरा-पात्रमे, ८. बिजली, ९. ऐय्यार सौन्दर्य, १०. जालमे बन्दी ।

'फ़रहत'—सुश्री सैय्यदा 'फ़रहत'

ग़ज़ल

इक तरफ़ शाने-खुदी[1] मानए-इज़हार[2] भी है
ज़ब्ते-ग़म[3] दिलकी नज़ाकतपै मगर बार[4] भी है
लुत्फ़[5] दोनोंसे उठाते है उठानेवाले
जिन्दगी निकहते-गुल[6] भी, ख़लिशे-खार[7] भी है
मुनहसिर[8] हौसिलए-दिलपै है साबुत क़दमी
जादहे-शौक[9] तो आसाँ भी है, दुश्वार भी है
ख़ुदको खोया है तो पाई है मुहब्बत तेरी
ज़िन्दगीमें यह मेरी जीत भी है हार भी है
हदसे आगे न बढे हुस्नका यह नाज़ो-ग़रूर[10]
है वफ़ाकश[11] अगर इश्क़ तो खुद्दार[12] भी है
इक जरा करती है मसहूर[13] तेरी चश्मे-करम[14]
दिल मगर तेरे तलब्बुनसे[15] ख़बरदार भी है
सैरे-महफ़िलसे जो फ़ुरसत हो इधर भी देखो
सरे-तस्लीम[16] झुकाये यह खतावार भी है

---

१ अहम्‌की शान, २ मनकी बात प्रकट करनेमे, ३ दुःखोका छिपाना, ४. कोमलतापर बोझ, ५ आनन्द, ६ फूलोकी सुबास, ७ काँटोकी चुभन, ८. निर्भर, ९. प्रेम-मार्ग, १०. अभिमान, गर्व, ११. प्यारेका तन-मन-धनसे साथ देना, वफादारी, १२. स्वाभिमानी, १३ मन्त्रमुग्ध, मोहित, १४. कृपादृष्टि, १५. उपेक्षा भावसे, १६. मस्तकनत ।

फ़रार

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी[1] हसीं वादीमें[2]
ग़मे-हस्ती न मुख़िल[3] हो मेरी आज़ादीमें

दिलको दे लेने दे कुछ देर मसर्रतका फ़रेब[4]
चन्द साअ़त[5] तो मिले रूहको[6] तस्कीनो-शिकेब[7]
भूल जाने दे ज़मानेके फ़राज़ और नशेब[8]
ज़ाहरी शानो-शौकत और दिखावेकी यह ज़ेब[9]

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे-हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

चन्द लमहोंके[10] लिए आपसे खो जाने दे
ख़ुद-फ़रामोश[11] ज़रा देरको हो जाने दे
तल्ख़िए-ज़ीस्तके[12] एहसासको[13] सो जाने दे
दिले-ग़मगींको किसी तौरसे बहलाने दे

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे-हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

---

१. कल्पनाओंकी, २. सुन्दर घाटियोंमें, ३. आड़े न आये, विघ्न न डाले, ४. सुखका धोका, ५ क्षण, ६. दिलको, आत्माको, ७. चैन, नम्र, ८. ऊँचाई-नीचाई, ९ सजावट, रौनक, १०. क्षणोंके, ११. अपनेको भूलना, १२. जीवनके कड़ुवे, १३. ज्ञानको।

भूलने दे कि जहाँमें ग़मो-आलाम[1] भी हैं
हसरतो-यास[2] भी, अफ़कार[3] भी, ओहाम[4] भी है
बेकसो-ज़ार[5] भी है, ज़ालिमो-ख़ुदकाम[6] भी है
एकसे सब है, मगर खास भी है आम भी हैं

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे-हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

इक ज़रा आँखसे ओझल हों भयानक मंज़र[7]
दिल पै हो जाये न वहशतका तसल्लुत[8] यकसर
सर्द हो जाये न दिल, तंग न हो जाये नज़र
खार[9] बनकर न मेरी आँखमें खटके गुले-तर[10]

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे - हस्ती न मुखिल हो मेरी आज़ादीमें

ग़मके एहसासमें हो जाये न पैदा शिद्दत[11]
इज़्ज़ते-नफ़्स[12] न हो परदए-ग़ममें रुख़सत[13]
मौतकी नींद न सो जाये फ़सुर्दा फ़ितरत[14]
अपनी हस्तीसे भी हो जाये न मुझको नफ़रत

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे - हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें

---

१. दुःख, २. इच्छा और निराशा, ३. चिन्ताएँ, ४. वहम, ५ दीन-दुःखी, ६ अत्याचारी और निरंकुश, ७. दृश्य, ८. उन्मादका प्रभाव, ९ काँटा, १० प्रफुल्ल फूल, ११ अधिकता, १२. शारीरिक प्रतिष्ठा, १३ विदा, १४. मुर्झाई बहार ।

जानती हूँ कि नहीं, सहल हक़ीक़तसे[1] फ़रार[2]
चोट खाये हुए दिलका है सँभलना दुश्वार
तै बहरहाल यह करना ही है राहे-पुरख़ार[3]
ख़ुद - फ़रेबीके[4] सिवा कोई नहीं चाराकार[5]

छोड़ दे मुझको तख़ैय्युलकी हसीं वादीमें
ग़मे - हस्ती न मुख़िल हो मेरी आज़ादीमें



१. वास्तविकतासे, २. छुटकारा, ३. कण्टकाकीर्ण मार्ग, ४. स्वयंको धोका देना, ५. उपाय ।

'वर्क़'—सुश्री सरला 'वर्क़'

ग़जल

उसका सानी जमाल[1] मुश्किल है
और मेरी मिसाल मुश्किल है
दिलके हाथों है जान आफतमें
ना समझकी सँभाल मुश्किल है
लाख मरहम रखे कोई दिलपर
जख्मका अन्दमाल[2] मुश्किल है
किस तरह उसको हमनवा कर लें
दर्दका इन्तक़ाल मुश्किल है
हम - कलामी[3] उदूकी[4] ऐ तोबा
हमसे यह इब्तज़ाल[5] मुश्किल है
अभी नादान है मेरा नासेह
कैफ़में ऐतिदाल[6] मुश्किल है
हम न कहते थे हज़रते-मूसा !
ताबे - 'बर्क़' - जमाल[7] मुश्किल है



---

१ सदृग सौन्दर्य्य, २. भरना, ३ वार्त्तालाप, ४. सौतसे, ५. अश्लीलता, फूहडपन, ६. नशेमे सन्तुलन, ७. सौन्दर्य्यकी बिजलीकी ताब ।

'बशीर'—सुश्री बशीरुन्निसाबेगम हैदराबादी

ग़ज़ल

बताऊँ क्या तुम्हें, मैं कौन हूँ, क्या हूँ बहरसूरत
सरापा[1] दर्द हूँ इक हस्तिए-महरूमे-दर[2] माँ हूँ
चमनमें फूल हूँ, गुलमें ब-रंगे-बू हूँ पोशीदः[3]
सितमदीदः[4] हूँ, वीरानेकी मैं खाके-परीशाँ हूँ
मेरी नाचीज़ हस्ती, दहरकी तक्वींका[5] बाइस[6] है
ख़िज़ाँदीदः शजर[7] हूँ, दरखुरे-ज़ेबे-गुलिस्ताँ[8] हूँ
तलाशे-गौहरे-मक़सूदमें[9] मुज़तर[10] है दिल मेरा
नज़र आवारए-सहने-गुलिस्ताँ गुलबदामाँ हूँ
मुझे क्या साज़े-इशरतसे[11] मुझे क्या बाज़ हसरतसे[12]
'बशीर' इस आलमे-हस्तीमें मैं मानिन्दे-महमाँ हूँ

'बशीर' उम्मीद क्या रक्खें चमनमें हमसफ़ीरोंसे[13]
लगाई आग अपनोंने जला जब आशियाँ[14] अपना
परेशाँ फूल हैं ख़ामोश बुलबुल आशियानोंमें
इलाही! मशवरे क्या हो रहे हैं बाग़बानोंमें?



१. व्यथाकी मूर्त्ति, २. चिकित्सासे वंचित व्यक्ति, ३. छिपी हुई, ४. अत्याचार पीडित, ५. सृष्टि-निर्माणका, ६. कारण, साधन, ७. पतझड़-का अनुभव किया हुआ वृक्ष, ८. उपवनकी शोभा योग्य, ९ उद्देश्यरूपी मोतीकी खोजमें, १० बेचैन, ११. सुख-वाद्यसे, १२. अभिलाषाओंसे सरोकार, १३. साथियोंसे, १४. नीड़, घोसला।

'बानो'—सुश्री शकीलाबानो भोपाली

मुझको रास आगये तेरे जौरो-सितम
ज़िन्दगी मिल गई ज़िन्दगीकी क़सम
उनके वादेकी लज़्ज़त खुदाकी क़सम
याद रखना ग़ज़ब, भूल जाना सितम
मेरी मंज़िल वहाँसे भी कुछ दूर थी
देखते रह गये मुझको दैरो-हरम[१]
हो खुशी जिसके हिस्सेमें उसको मिले
मेरे हिस्सेमें आ जायें दुनियाँके ग़म
सच है अन्दाज़े-तक़रीर दिल खींच ले
हाये नीयत मेरे वाइज़े-मुहतरिम
यूँ मुहब्बतकी राहोंसे 'बानो' गुजर
लोग देखा करें तेरा नक़्शे-क़दम[२]



१. मन्दिर-मस्जिद, २. चरणचिह्न ।

'बानो'--सुश्री इक़बाल बानो

ग़ज़ल

फूलोंके इश्तयाक़[1]में काँटोंसे जा मिले
ऐ दश्ते-शौक़[2] ! तेरी तमन्नाके सिलसिले

मेरे लिए चमनमें फ़क़त रह गया ग़ुबार[3]
आगे निकल गये है, बहारोंके क़ाफ़िले[4]

कहते हैं लोग बादे-सबाका[5] दरूद[6] है
लेकिन कहीं चमनमें कोई शाख तो हिले!

अब दास्ताने-ग़म भी सुनाना हुआ मुहाल[7]
फ़रियाद की जहाँ भी वहीं मेरे लब सिले

'बानो' यह हाल अपनी उमीदोंका हो गया
कुछ फूल जैसे गोरे-ग़रीबाँ[8] पै हों खिले



१. चाहतमे, २. यात्राका उत्साह, ३. धूलका धुआँ, ४. यात्रीदल,
५. पवनका, ६. उपहार, ७. कठिन, ८. कब्रिस्तानमें ।

'बिल्क़ीस'—सुश्री बिल्क़ीस रहमानी बानो

इज़हारे-मुहब्बत

हम न समझें तेरे इल्ताफ़ो-करमके[1] माने
लाख नादाँ सही, अब ऐसे भी नादाँ तो नहीं

शबकी[2] आग़ोशमें[3] बल खाती हुई काहकशाँ[4]
यह किसी माँगकी बिखरी हुई अफ़शाँ[5] तो नहीं

दिलके दाग़ोंसे मैं सीनेको सजाऊँ कब तक
दिल तो दिल ही है, कोई बज़्मे-चराग़ाँ[6] तो नहीं

क्यों मुझे देखते ही झुक गईं नज़रें उनकी
कहीं अब अपने किये पर वह पशेमाँ[7] तो नहीं

दौलते-दर्द सलामत रहे राहत[8] न सही
घर जो आबाद नहीं क्या हुआ, वीराँ[9] तो सही



---

१. महर्बानी और कृपाके, २. रातकी, ३. गोदमें, ४. छायापथ, ५. माँग सजानेकी वस्तुएँ, ६. सभाका दीप, ७. शर्मिन्दा, ८. चैन, ९. उजाड़।

'बिलक़ीस'—सुश्री नाहीद बिलक़ीस अकबराबादी

ग़ज़ल

किस क़दर हुस्ने-नज़र है तेरे दीवानोंमें
कलियाँ दामनकी सजाई है गरेबानोंमें

हुस्नको खींचके ले आई मुहब्बतकी कशिश
आके ख़ुद शमअ़को जलना पड़ा परवानोंमें

क्या ख़बर हमको हरम[1] क्या है कलीसा[2] क्या है
ज़िन्दगी हमने गुज़ारी इन्हीं मैखानोंमें[3]

हमने देखी है तेरी मस्त जवानीकी अदा
हँसते फूलोंमें, छलकते हुए पैमानोंमें

फूल खिलता है जो कोई तो ख़्याल आता है
यह भी शायद है तेरे चाक गरेबानोंमें[4]

दिले-नाकामके उजड़े हुए गैसू[5] तौबा
एक महफ़िल भी थी शायद उन्हीं दीवानोंमें

हमको 'बिलक़ीस'[6] तकल्लुफ़की ज़रूरत क्या है
पी लिया करते है, टूटे हुए पैमानोंमें



---

१. कावा, २. गिरजा, ३. मदिरालयोंमें, ४ कुरतेका फटा हुआ गला, ५. जुल्फ, ६. एक मशहूर मल्काका नाम।

'बेख़ुद'—सुश्री शान्ति 'बेख़ुद'

फिर दास्ताने-दिलको[1] रक़म[2] कर रही हूँ मैं
क़तरेको[3] मौजे-बहरमें[4] जम[5] कर रही हूँ मै

अच्छा हुआ कि आप मेरे दिलमें बस गये
घर बैठे अब तवाफ़े-हरम[6] कर रही हूँ मै

ज़ाहिद ! यह क्या हुआ मेरे जौक़े-नियाज़[7] को
सज्दे जो आज पेशे-सनम[8] कर रही हूँ मै

वक्ते-नज़अ[9] भी उनसे तसुव्वरमें[10] बार-बार
क्यों अर्ज़े-इल्तफ़ाते-करम[11] कर रही हूँ मैं

आसानियोंके शौक़में 'बेखुद'[12] हूँ इस क़दर
दुश्वारियोंको अपने बहम[13] कर रही हूँ मैं



---

१ दिलकी कहानीको, २. लेखबद्ध, ३ बूँदको, ४ दरियाकी लहरोमे, ५ एकीकरण, मिलाना, ६ काबेकी परिक्रमा, ७ नम्रताके चावको, ८. मूर्तिकी तरफ, प्रियतमकी ओर, ९. मृत्यु-समय, १०. ध्यानमे, ११ कृपाके लिए प्रार्थना, १२ आत्मलीन, १३. एकत्र ।

'बेगम'—सुश्री करामत फ़ातमा बेगम

ग़जल

भरी महफ़िलमें भी तनहाइयाँ[१] महसूस[२] करती हूँ
कि दिलमें आजकल वीरानियाँ महसूस करती हूँ
कभी वह दिन थे हासिल थी मुझे ग़ममें भी इक लज़्ज़त
मसर्रतमें[३] भी अब तो तल्खियाँ[४] महसूस करती हूँ
तिलस्मे-दो जहाँ[५] क्या है, समझमें कुछ नही आता
कि हर-सू[६] देखकर हैरानियाँ महसूस करती हूँ
कभी मालूम होता है कि गोया[७] है हर इक जर्रा[८]
कभी हर चार-सू ख़ामोशियाँ महसूस करती हूँ
वही है गुलशने-हस्ती[९] मगर ऐ हमनशीं[१०]! फिर भी
खुदा जाने कि क्यों बे कैफ़ियाँ[११] महसूस करती हूँ
नही मालूम क्या दुनियाए-दिलमें इन्क़िलाब आया
सकूने-क़ल्बकी[१२] बर्बादियाँ महसूस करती हूँ
क़फ़समें[१३] घुटके रह जाता है मेरा जौक़े-आज़ादी
तड़प जाती हूँ जब मजबूरियाँ महसूस करती हूँ
हुजूमे-ग़मसे घबराकर निकल आते है जब आँसू
शिकस्ते-जब्तकी[१४] रुसवाइयाँ[१५] महसूस करती हूँ

---

१ अकेलापन, २. अनुभव, ३. सुखमे, ४. कडुवाहट, ५. लोक-परलोकका तिलिस्म, ६. हर तरफ, ७. मुखरित, ८. कण, ९ जीवन-वाटिका, १० मित्र, साथी, ११ परेशानियाँ, १२ दिलके चैनकी, १३ पिंजरेमे, १४. छिपावकी हारकी, १५. बदनामियाँ ।

ग़ज़ल

देता है सरे-महफ़िल क्यों जानका नज़राना
क्यों शमअ़को करता है बदनाम यह परवाना
कमबख़्तके हाथों है, दुश्वार मुझे जीना
तग़ईरके[1] क़ाबिल है मेरा दिल - दीवाना
यह जाम ही बस पीकर तौबा मुझे करनी है
क़ुर्बान[2] मेरे साकी भर दे मेरा पैमाना
अपनोंमें जो अपनायत बाक़ी न रही कुछ भी
यकसॉ है हमें दोनों अपना हो कि बेगाना
क्या कीजिएगा सुनकर कुछ लुत्फ़[3] न आयेगा
दर्दो-ग़मो-हसरतसे[4] पुर[5] है मेरा अफ़साना[6]
आज़ाद यक़ींसे हो जायें अगर नज़रें
हर जगह वह मिलता है, काबा हो कि बुतख़ाना
क्या हूँ मै हक़ीक़तमें मालूम नही 'बेगम'
दीवाना समझ लीजे या जानिए फ़रज़ाना[7]



---

१. परिवर्त्तनके, २ न्योछावर, ३ आनन्द ४. रज और इच्छाओसे, ५ पूर्ण, ६ किस्सा, ७ दक्ष, बुद्धिमती ।

'मक़बूल'—सुश्री मक़बूल नसरीन

मिल गया मुझको अमानतका[1] वह पैग़ाम[2] तेरा
नामा[3] आया है मगर क्यों, यह मेरे नाम तेरा
यानी मुलज़िम[4] बनूँ और झेल लूँ इल्जाम तेरा
ले तेरे ख़तके एवज मुज़दहो-इनआम[5] तेरा
मैं तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान[6] बना जाऊँगी

नूरमें[7] डूबी हुई चाँदनी रातोंकी क़सम
शबनमीं[8] भीगी हुई सावनी रातोंकी क़सम
बर्फ़-सी सहमी हुई सुर्मयी रातोंकी क़सम
जगमगाते हुए तारोंकी बरातोंकी क़सम
मै तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान बना जाऊँगी

सर्द रातोंमें चमकते हुए तारोंकी क़सम
फूल बरसाती हुई मस्त बहारोंकी क़सम
सुबहे-बेदारके[9] शादाब[10] नजारोंकी क़सम
रोदेबानासके सरसब्ज़[11] किनारोंकी क़सम
मैं तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान बना जाऊँगी

---

१. धरोहरका, सुपुर्दगीका, २ सन्देश, ३ पत्र, ४. अपराधी, ५ खुशखबरी और उपहार, ६. निराशाका शीर्षक, अपनी असफलताओंकी स्मृति, ७ प्रकाशमें, ८. ओसमें, ९. जागृत प्रातःकालके, १०. प्रफुल्ल दृश्योंकी, ११. नदीके हरे-भरे।

मए-गुल रंगके[1] अनवारे-गुलाबीकी[2] क़सम
इत्रमें डूबे हुए जिस्मे-शहाबीकी[3] क़सम
नफ़से-तेज़की आवाज़े-रुबाबीकी[4] क़सम
वस्लमें[5] शर्मके अन्दाजे-हिजाबीकी[6] क़सम
मै तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान बना जाऊँगी
जल्वए-हुस्नकी[7] हर शाने-जमालीकी[8] क़सम
इश्क़में ज़ब्तकी आदाते-मिसालीकी[9] क़सम
बे नियाज़ीके[10] हर अन्दाज़े-जमालीकी[11] क़सम
अर्शे-आज़मके[12] फसूँ साज कमालीकी[13] क़सम
मै तेरे ग़मसे बहुत दूर चली जाऊँगी
तुझको इक यासका उनवान बना जाऊँगी



१. लाल रगकी मदिराके, २ गुलावी चमककी, ३ रक्तवर्ण शरीरकी, ४. हृदय-वीणाकी, ५. सम्भोगमे, ६. शर्मीलेपनकी, ७ सौन्दर्यके चमत्कारकी, ८ रूपके शानकी, ९ सब्र करनेकी, आदर्श आदतकी, १०. नि स्वार्थके, ११ महान् आदर्शकी, १२. उन्नत्त आकाशके, १३ जादू भरे कमालकी।

'मख़्फ़ी'[1]—सुश्री सैयद: जहाँ मख़्फ़ी

ग़ज़ल

चश्मे[2]-तर ! देख ग़मे-दिल न नुमायाँ[3] हो जाय
इश्क़के सामने और हुस्न पशेमाँ[4] हो जाय

जानता हूँ मै तमन्नाको[5] गुनाहे-उल्फ़त[6]
इश्क़ वह है जो निहाँ[7] रहके नुमायाँ हो जाय

अपनी मजबूरिए-उल्फ़तका फ़साना[8] कहकर
डर रहा हूँ कि कहीं वह न पशेमाँ हो जाय

दाग़े-उल्फ़तकी तजल्ली जो नुमायाँ हो जाय
शोलए-तूर[9] भी इक बार पशेमाँ हो जाय

ज़ब्ते-ग़मसे[10] नहीं याराए-खमोशी मुझको
तुम जो कुछ पूछो तो मुश्किल मेरी आसाँ हो जाय

काश यूँ बर्क़ गिरे खिरमने-दिलपर[11] 'मख़्फ़ी'
ज़र्रा-ज़र्रा[12] मेरी हस्तीका फ़रोज़ाँ[13] हो जाय



---

१ छिपा हुआ, २. अश्रुपूर्ण नेत्र, ३. प्रकट, ४. शर्मिन्दा, ५. आकाक्षाको, ६ प्रेम-दोप, ७. अप्रकट, ८. कहानी, ९ पर्वत-अग्नि, १०. दुःखके जब्तसे, ११. दिलरूपी खलियानपर, १२ कण-कण, १३. प्रकाशवान् ।

'मीना'—सुश्री मीना क़ाज़ी

उनकी तस्वीर जब आँखोंमें उतर आई है
मैने तारीक फज़ाओंमें[1] ज़िया[2] पाई है

हुस्न जब होने लगा माइले-इल्फातो-करम[3]
इश्क़की जान पै कुछ और भी बन आई है

आज तक मेरी निगाहोंको मयस्सर[4] न हुई
लोग कहते हैं कि गुलशनमें बहार आई है

अब ज़मानेकी ख़बर है न खुद अपना ही पता
मेरी वहशत[5] मुझे क्या जाने कहाँ लाई है

ऐ निगाहे-ग़लत अन्दाज़ तेरी उम्र दराज़[6]
ज़िन्दगी अब ग़म-ओ-आलामकी शैदाई[7] है

अब तो आ जा ग़मे-हस्तीके मिटाने वाले
बस तेरी याद है मैं हूँ शबे-तन्हाई[8] है

मैं शबो-रोज़[9] पिया करती हूँ अक्सर 'मीना'
मेरे साग़रमें निहाँ[10] बादए-मीनाई है



---

१. अँधेरी दिशाओंमे, २ रौशनी, ३ कृपा करनेको उद्यत, ४. नसीब, ५ दीवानगी, ६ उम्र बढे, ७ दुःख-व्यथाकी इच्छुक, ८ विरह-रात्रि, ९ दिन-रात, १० छिपी हुई।

'मुज़मिर'—सुश्री रफ़िया बानो मुज़मिर रज़ूयः

क़ते

चाँदनी, तारे, समन्दर, फ़स्ले-गुल[1], कैफ़े-बहार[2]
उफ़ यह अम्बोहे-तजम्मुल[3], यह हुजूमे-रंगो-बू
इस तरफ़ ज़ानू पै मेरे उनका रूए-नाज़नी[4]
हाँ यक़ीनन आज मैं हूँ कामयाबे - आज़ू[5]
ऐ सितारो ! चश्मे-शाइरके चमकते आँसुओ !
जागकर रोते हो तुम रातोंको क्यों आखिर लहू ?
देखते रहते हो क्यों हसरतसे शाइरकी तरफ़
इसके दामनमें मचलनेकी है फिर क्या आज़ू ?

सितारे

जो चर्ख़पर सीमीं सितारे[6] इस तरह हैं मुन्तशिर[7]
जैसे हूराने - बहिश्तीकी[8] रदाए-नूरसे[9]
गिर पड़े हों चन्द ग़ुञ्चे[10] टूटकर हँसते हुए
या हवादिससे[11] फ़रिश्ते जब असर लेने लगे
रोशनो-बेताब आँसू उनकी आँखोंसे गिरे
या फ़रोग़े - नक्तबो - नाशादकामी[12] देखके
आस्मानोंकी जबींनोंपर[13] पसीने आ गये

---

१. फूलोका मौसम, २. मस्ती भरी बहारे, ३ सौन्दर्य्य-वैभव, ४ कोमल मुख, सर, ५. सफल, ६ रुपहले नक्षत्र, ७ बिखरे हुए, ८. जन्नतकी सुन्दरियोके, ९. प्रकाशवान ओन्ने (चादर) से, १० कली, ११. दुर्घटनाओसे, १२ दरिद्रता और अकुशलताका परिणाम, १३ मस्तकोपर ।

गजलके शेर

जज़्बात[1] उलट देंगे चेहरेसे नक़ाब आखिर
इक चश्मे-तमाशासे[2] कब तक यह हिजाबें[3] आख़िर
दुनियाकी खबर भी है ओ महवे-जफ़ाकोशी[4]
कब तक यह बहारें है कब तक यह शबाबें[5] आखिर

एक मैं हूँ बाइसे-रुसवाई[6] उनके वास्ते
एक वे है ज़िन्दगीका आसरा मेरे लिए

अज्म (संकल्प)

बदल दूँगी निज़ामे-जिन्दगीको[7] सइए-पैहमसे[8]
ज़माना काँप उट्ठेगा मेरे अज़्मे - मुसम्मिमसे[9]
यह खाको-ख़ूनमें लिथड़े हुए अफ़कारे-इन्सानी[10]
यह महकूमीकी[11] क़ुर्बा गाहपर[12] ज़ेहनोंकी[13] क़ुर्बानी
यह ख़ूनी आँसुओंपर हँसनेवाली संगदिल[14] बस्ती
क़दामतके[15] खुमारे-सरगिराँसे[16] मुज़महिल[17] बस्ती
यह बस्ती जिसने वीराँ कर दिया आबाद रूहोंको[18]
किया है क़ैदे-ज़ंजीरे-जुनूँ[19] आज़ाद रूहोंको

---

१ मनोभाव, २ प्रेमीसे, ३ पर्दा, ४. अत्याचार करनेमे लीन, ५. यौवन, ६ बदनामीकी कारण, ७ जीवन-व्यवस्था, ८ लगातार प्रयत्नोसे, ९. दृढ निश्चयसे, १०. मानव चिन्ताएँ, ११ शासनकी, १२ बलिदान-स्थलपर, १३ विचारोकी, बुद्धिकी, १४ कठोर, १५ प्राचीनताके, १६ अप्रसन्नतारूपी उतरे हुए नशेसे, १७ क्लान्त, १८. जीते-जागते जीवनको, १९. उन्मादकी जजीरोमे कैद ।

जहाँ इन्सानियतके वलवलोंका[1] खून होता है
जफ़ा दस्तूर[2] होती है, सितम क़ानून होता है
जहाँ तहजीबकी बुनियाद है अश्कोंपर आहोंपर
जहाँ इख़लाककी[3] बुनियाद डाली है गुनाहोंपर
जहाँ इश्क़ो-मुहब्बतको जुनूँका नाम देते है
दरिन्दे[4] अम्नो-तस्कींका[5] जहाँ पैग़ाम[6] देते है
जहाँ पहरे लगाये हैं, निगाहोंपर ज़बानोंपर
बुढ़ापेकी हुकूमत है जहाँके नौजवानोंपर
जहाँ जुहलो-हविसका[7] नाम इल्मो-पारसाई[8] है
जहाँ बन्दोंपर इन्सानी खुदाओंकी खुदाई है
जहाँ दोशीज़गी ख़म है[9] हविसके आस्तानोंपर[10]
जहाँ मज़हब बिका करता है, तक़वाकी[11] दुकानोंपर
मैं इस दुनियाको 'मुज़मिर' अपने नारेसे हिला दूँगी
फ़रोग़े - सोज़े - ग़मसे[12] आग दुनियामें लगा दूँगी
उठूँगी मैं जलालो-अज़्मो-हिम्मतका अलम[13] लेकर
बढ़ूँगी मौतकी सूरत बग़ावतका अलम लेकर
मेरे बिगड़े हुए तेवरसे तूफ़ाँ दम - ब - ख़ुद होंगे
मेरे बिफ़रे हुए नारोंसे इन्साँ दम-ब-ख़ुद होंगे



---

१. उमंगोका, २. अत्याचार करनेका प्रचलन, ३ सदाचारकी, ४. हिसक पशु, ५ शान्ति-चैनका, ६ सन्देश, ७ मूर्खता और वासनाका, ८. ज्ञान और शील, ९. कौमार्य्यनत, १० वासनाओके आगे, ११. सयम-रूपी दुकानपर, इन्द्रिय निग्रहके नामपर, १२ व्यथाकी आगकी चमकसे, १३. महत्ता, दृढता और साहसका झडा लेकर।

'मैमूनः'[1]—सुश्री मैमूनः आरिफ़ा मुरादाबादी

मजबूरियाँ

टूटे दिलको जोड़ लिया है
हमने वफाका पास किया है
काश यह जाने आप कि हमने
हँसते-हँसते जहर पिया है

मेरी वफ़ाकी मजबूरी थी
जिसको जफाका रूप दिया है
काँटोंको सीनेसे लगाकर
चाक दिले-मग़मूम[2] सिया है

आप भी अपना हरज न कीजे
कौन किसीके ग़ममें जिया है
दिलकी क्या रूदाद[3] कहें हम
मौज हवा है और दिया है

आँखोंने 'मैमूनः' तुम्हारी
शबनम[4]का दिल जीत लिया है



---

१ शुभ, कल्याण, २ सन्तप्त विदीर्ण हृदय, ३ कहानी, ४. ओसका।

'यास्मीन'[1]—सुश्री तस्नीम यास्मीन

ग़जल

तल्खिए-ज़ीस्तने[2] हालत यह बनाई अपनी
चोट जब दिल पै लगी आँख भर आई अपनी
उनको पानेका जब इमकान[3] न पाया कोई
ज़िन्दगी हमने मुहब्बतमें गँवाई अपनी
किस क़दर हौसलए-शौक़ - तलब निकले है
न सही गर-कोई हसरत न बरआई[4] अपनी
माँग लेते हैं खुदासे जो हमें हो दरकार
बे-नियाज़[5] अहले करमसे[6] है, गदाई[7] अपनी
हुस्न[8] भी शेफ़्तए-इश्क़[9] है शायद कि मुझे
उनकी तस्वीरमें सूरत नज़र आई अपनी
बे सबब तो नहीं मानूसे-क़फ़स[10] दिल अपना
नज़र आती नहीं उम्मीदे - रिहाई अपनी
'यास्मीन' जबसे नसीब उनका हुआ है दीदार[11]
फिर कोई शक्ल न आँखोंमें समाई अपनी



---

१. चमेलीका फूल, नवमल्लिका, २ जीवनकी कटुताने, ३. उपाय, ४ पूर्ण हुई, ५. उपेक्षा भाव, ६ कृपालुओसे, ७. याचकवृत्ति, ८. रूप, ९ प्रेमका दीवाना, १०. पिंजरेकी ओर आकर्षित, ११. दर्शन ।

'रख़्शाँ' सुश्री रख़्शाँ रूही

कब आओगे

आराइशे - जमाल[1] दिखाने कब आओगे
प्यासी नज़रकी प्यास बुझाने कब आओगे ?
छाई हुई है कबसे घटाएँ निराशकी
आशाके दीप दिलमें जलाने कब आओगे ?
लेकर जलोमें[2] अपने हज़ारों तजल्लियाँ[3]
तारीकिए - हयात[4] मिटाने कब आओगे ?
शीराजए - हयात[5] परेशाँ है इन दिनों
आख़िर यह इन्तशार[6] मिटाने कब आओगे ?
बन - बनके मौजे-बादे नसीमे - सहर खराम[7]
गुञ्चा[8] दिले-हज़ींका[9] खिलाने कब आओगे ?
आई बसन्त लेके उमंगें नई - नई
बीते दिनोंकी याद मिटाने कब आओगे ?
कब तक रहूँ रहीने-सितम[10] हाये रोज़गार ?
बे - कैफिए - हयात[11] मिटाने कब आओगे ?
पैग़ामे-ज़िन्दगी[12] लिये ऐ जाने-ज़िन्दगी[13] !
'रख़्शाँ'[14] की खिल्वतोंको[15] लजाने कब आओगे ?

---

१ सज्जित रूप, २ बागडोरमे, अपनेमे, ३. चमत्कार, ४. जीवन-अँधेरा, ५. जिन्दगी, ६ अस्त-व्यस्तता, ७ प्रात.कालीन अलबेली मधुर चालवाली वायु, ८ कली, ९. निराश हृदयका, १०. अत्याचार पीड़ित, ११. निरानन्द जीवन, १२ जीवन-सन्देश, १३. जीवन सर्वस्व, १४ दीप्त, प्रकाशवान्, १५ एकान्तमे बिछी सेजको ।

ग़ज़ल

हँसनेका वक़्त है, यह हँसानेका वक्त है
यानी चमनमें फूल खिलानेका वक़्त है
आई है, फिर बहार ब-अन्दाज़े-दिलबरी
सरको हुज़ूरे - दोस्त झुकानेका वक्त है
माना, ख़िरद[1] है, शमए-रहे-ज़िन्दगी[2] मगर
ऐ बे-खबर ! यह होशमें आनेका वक़्त है
कबसे है इन्तज़ार नज़रको न पूछिए
काशानए - हयात[3] बसानेका वक़्त है
अब बन रही है, अपनी यह धरती ही आस्माँ
ख़ुर्शीदो - माहताब[4] उगानेका वक़्त है
छिटकी है फिर चमनमें बहारोंकी चाँदनी
तारीकए - हयात[5] मिटानेका वक्त है
लो आ गये हैं, बज़्ममें[6] मीना - बदोश[7] वह
हर-हर क़दम पै जाम लुँढ़ानेका वक़्त है
कब तक रहेगी ईद मुहर्रम बनी हुई
आओ कि जश्ने-शौक़[8] मनानेका वक़्त है
नज़रोंके साथ दिल भी करो फ़र्शे-राह तुम
'रख्शाँ' ! यह उनके बज़्ममें आनेका वक़्त है



---

१ बुद्धि, २. जीवन-मार्गका दीपक, ३. जीवन-कुटिया, ४ सूर्य्य-चन्द्र, ५. जीवन-अँधियारी, ६. महफिलमे, ७. मदिरा-सहित, ८ उत्सव ।

'राना'—सुश्री ज़ुबेदा रअ्ना

नई करवट

हर-इक दिल है मसायबका[1] निशाना
नई करवट बदलता है ज़माना
हक़ीक़त[2] ताड लेता है जमाना
निगाहोंसे निगाहोंको बचाना
अँधेरेमें हैं अहले-बज़्मके[3] दिल
चिरागे-बज़्मसे धोका न खाना
दिले-मुज़्तर[4] तड़प लेनेसे तेरे
पलट आयेगा क्या गुज़रा ज़माना
मगर अहले-चमन अब वह नहीं हैं
वही हम है, वही है आशियाना[5]
कहाँ जायें तेरे मैख़्वार[6] साक़ी !
कहीं मिलता नहीं कोई ठिकाना
कभी आयेगा ऐसा वक़्त 'रअ्ना[7]'
हमें पहचान लेगा ख़ुद ज़माना

---

१. मुसीबतोका, २ वास्तविकता, ३. महफिलवालोके, ४. बेचैन दिल, ५ नीड, ६ मद्यप, ७ रूपवान्, यह शब्द उर्दूमे ऐनसे लिखा जाता है, अत. यहाँ रानाके बजाये अधिक शुद्ध 'रअ्ना' लिखा है। जैसे शमा (शमअ्)।

है आखिरतका ख़ौफ़ ग़मे-दीनवीके बाद
इक और ज़िन्दगी भी है इस ज़िन्दगीके बाद

वाइज़ ! यह बन्दगी कहीं बेकार हो न जाय
तू बन्दगीपर नाज़ न कर बन्दगीके बाद

पिन्हाँ[1] हज़ार ग़म हैं, मसर्रतकी[2] ओटमें
आँसू कहीं तड़पके न निकलें हँसीके बाद

इंसाँको है ज़रूरते-अम्नो-अमाँ[3] मगर
पैग़ामे-अम्न[4] दीजे न इन्साँ-कशीके[5] बाद

क्या उनसे रहबरीकी[6] तवक्क़अ[7] रखे कोई
जो आ सकें न राह पै बे-रहरवीके[8] बाद

'रअना' हज़ार बातकी यह एक बात है
कुछ लुत्फ़ दोस्तीमें नहीं दुश्मनीके बाद



१ छिपे हुए, २. खुशियोंकी, ३. सुख-शान्ति, ४. सुलह-शान्तिका सन्देश, ५ मानव-हत्याके, ६. मार्गदिग्दर्शकताकी, ७ आशा, ८. मार्ग भटकनेके ।

'राना'—सुश्री सफ़िया सुल्तान 'रअ़ना'

तजल्लियाते-'रअ़ना'

हज़ार शुक्र कि रोने पै मुझको क़ाबू है
हजार चाहें हँसाना हँसा नहीं जाता
कुछ ऐसा अज़्मे-तमन्ना[1] निगहसे मिलता है
कभी-कभी जो ज़बाँसे कहा नहीं जाता
कुछ इस अदासे तवज्जह वह आप करते हैं
निगाहे-शौक़से अक्सर उठा नहीं जाता
शबे-फ़िराक़में[2] ऐसी भी मंज़िलें आईं
जहाँ पै अर्ज़े-तमन्ना किया नहीं जाता
नसीब क्या है, वह इंसान क्या है, ऐ 'रअ़ना'
कि जिससे ज़ख्मे-मुहब्बत सिया नहीं जाता

मुहब्बतमें कुछ कामराँ[3] और भी हैं
तेरे ग़मके कुछ राजदाँ[4] और भी हैं
सम्भलकर ज़रा जल्वए-तूरे-मूसा[5] !
हरीफ़े - रुखे - कहकशाँ[6] और भी हैं

---

१ विचारोंकी दृढता, २ विरह रात्रिमे, ३ सफल, कामयाब, ४. भेदो, जानकार, ५. मूसाको तूर पर्वतपर दिखाई देनेवाले चमत्कार, ६ मुख देखनेके स्पर्द्धी ।

क़मरको[1] है बेवजह क्यों नाज़ो-बेजा[2]
शबाबे - गुलो - गुलसिताँ[3] और भी हैं
अभी ना मुकम्मिल-सी बरबादियाँ हैं
निगाहोंमें कुछ बिजलियाँ और भी है
लबोंपर ही रक्साँ[4] नहीं गीत उनके
निगाहोंमें राज़े - निहाँ[5] और भी है
मयस्सर नहीं सर्फ़ेग़म[6] तुमको 'रअ़ना'!
तुम्हारे सिवा कामराँ और भी है

हिजाबे-मुहब्बत[7] उठाये गये है
बड़ी शानसे हम बुलाये गये हैं
जिन्हें माहो-अंजुम[8] न अपना सके थे
वह अक्सर मेरे दिलमें पाये गये हैं
जवानीकी ऋतुमें निगहकी ज़बानी
मुहब्बतके क़िस्से सुनाये गये है
वह ख़ुद ही इलाजे-मुहब्बत करेंगे
जो इक दर्द दिलमें उठाये गये है
वही अश्क थे हासिले-इश्क़ 'रअ़ना'
तेरी यादमें जो बहाये गये हैं



१. चन्द्रमाको, २. व्यर्थ गर्व, ३ उद्यान और फूल-जैसे रूपवान्, ४. थिरकते हुए, ५ छिपे भेद, ६ दु.ख प्रदान होना, ७ प्रेममे सकोचके पर्दे, ८ चन्द्र-नक्षत्र ।

'राबिअः'[1]—सुश्री राबिअः बेगम हैदराबादी

गजल

जुल्फ बरहम[2] थी मिज़ाजे-यार गर बरहम[3] न था
बख्त[4] यावर[5] था, दिले-वहशी[6] मगर[7] बेरम न था
०परदए - फ़क़्रो - ग़ना[8] जिस दम दरे - दिलसे[9] उठा
एक थे शाहो-गदा[10], कुछ रंज बेशो-कम न था
आये है किस वक्त यारब! वे मरीज़े-ग़मके पास
लबमें गोयाई[11] न थी, आँखोंमें बाक़ी दम न था
देख ऐ दिल! शाने - इस्तग़नाए - तर्के - आर्ज़ू[12]
ऐश कोई चीज, कोई माले - जामे - जम[13] न था
हम है वे दरमान्दए - सामाने - राहत[14] हाय - हाय
अन्दमाले - जख्मके[15] भी वास्ते मरहम न था
०कौन-सा दिल था इलाही! जो अलम अफ़जा[16] न था
कब हमारे वास्ते ख़ारे - ग़मे - पैहम[17] - न था
०'आयसः'[18]! जबसे तबीअत ख़ूगरे - हरमाँ[19] हुई
था हुजूमे-यास[20] लेकिन दिल ब-बन्दे ग़म न था

---

१ साध्वी स्त्री, २ उलझी हुई, ३ आवेशमे, ४ भाग्य, ५ सहायक, ६ दिलरूपी हिरन, ७ दौडनेको तत्पर, ८ याचना और दानका भेद (पर्दा), ९ हृदय-द्वारसे, १० राजा-रक, ११ बोलनेकी शक्ति, १२ निष्काम भावनाकी गरिमा, १३ भोग एव सम्पदा व्यर्थ मालूम देने लगे, १४. साधन-हीन, १५ जख्मके इलाजको, १६ दु खपूर्ण, १७ लगातार दु खके कॉटे, १८ आप इस उपनामसे भी शेर कहती है, १९ नैराश्यकी अभ्यस्त, २० निराशाओंकी भीड ।

'राहत'—सुश्री राहतुन्निसा बेगम हैदराबादी

ग़जल

उठते-उठते ही ज़मानेको बदलने वाले !
दूसरा नाम क़यामत, तेरी अँगड़ाई है
रंग इक बोलता जादू है अरे क्या कहना
तुझसे बढ़कर तेरी तसवीरमें गोयाई[1] है
फिर मेरी यूसिफ़े-[2]खूबीके हैं जल्वे रौशन[3]
फिर मेरी आँखमें याक़ूबकी[4] बीनाई है
साज़ सद् गर्मिए-हंगामा है यह ऐ 'राहत' !
कि उम्मीदोंसे मेरी अंजुमन आराई है

दोरंगिए-जहाँसे ले दर्स[5] गर है आक़िल
इकजा है सीनाकोबी[6], इकजा हैं शादियाने[7]
हाँ अब समन्दे-हिम्मत[8] आगे बढाके देखो
खाते रहोगे कब तक जि़ल्लतके ताज़ियाने[9]
करना है जो वह करलो क्या जीस्तका[10] भरोसा
फिर क्या करोगे जिस दम आई क़ज़ा[11] बुलाने



१ बोलनेकी शक्ति, २. रूपके, ३ चमत्कार प्रकट हो रहे है, ४. हजरत यूसुफके पिताकी जैसी, ५ पाठ, ६ छाती कूटना, ७. नक्कारे बज रहे है, ८ साहसरूपी अश्व, ९ हण्टर, १०. जिन्दगीका, ११. मृत्यु ।

'रुही'—सुश्री रुही देहलवी

हम मुहब्बतमें आह करते है
जैसे कोई गुनाह[1] करते है
वोह जिधर भी निगाह करते है
एक आलम[2] तबाह करते है
खा चुके है, फ़रेब[3] दुनियाके
फिर भी दुनियाकी चाह करते है
हम मिजाजे-गुलो-समन[4] पाकर
खारो-खससे[5] निबाह करते है
दिलको भी कुछ ख़बर नहीं होती
दिलमें कुछ यूँ वह राह करते है
हम फ़रिश्ते[6]-नही है ऐ वाइज़[7] !
आदमी है गुनाह करते है

यह तुम जानो कि तुम फूलोंपर इतने महर्बां क्यों हो ?
मगर यह तो कहो कॉटोंसे इतने सरगिराँ[8] क्यों हो ?
चमनमें और भी तो आशियाने[9] है बुलन्दीपर
मेरा ही आशियॉ बर्बाद ऐ बर्क़े-तपॉ[10] क्यों हो ?

---

१ भूल, अपराध, २. दुनिया, ३ धोके, ४ फूल और चमेलीका स्वभाव, ५ काँटों और तिनकोसे, ६ देवता, ७ उपदेशक, ८ अप्रसन्न, ९ नीड, १० क्रुद्ध बिजली ।

हमें लुटना था राहे-ज़िन्दगीमें लुट गये हम तो
मगर अब तुम पशेमाँ[१] ऐ अमीरे-कारवाँ[२] क्यों हो?

मुहब्बत दो दिलोंका एक पाकीज़ा ताअल्लुक़ है
यह रब्ते-बाहमी[३] आलूदए-लफ़्ज़ो-बयाँ[४] क्यों हो?

अजलकी[५] राहमें एक मुख्तसर[६] वक्फ़ा[७] सही, हस्ती[८]
मगर यह मुख्तसर वक्फ़ा भी 'रूही' रायगाँ[९] क्यों हो?

हर नफ़स[१०] मौतका इशारा है
ज़िन्दगी आँसुओंका धारा है

हमने अपनी लहूकी सुर्ख़ीसे
चहरए-ज़िन्दगी निखारा है

आज गुलशनमें खारो-खसने[११] भी
लाल-ओ-गुलका रूप धारा है

दिल धड़कता है इस तरह जैसे
कोई टूटा हुआ सितारा है

ज़िन्दगीके उदास लमहोंमें[१२]
अब तेरे नामका सहारा है

---

१. शर्मिन्दा, २. यात्री सघका सर्दार, ३. परस्परका सम्बन्ध, ४ वाणी या लेखनीका बन्दी, ५. मृत्युकी, ६. सक्षिप्त, ७. विराम, ठहराव, ८. जिन्दगी, ९ व्यर्थ, १०. श्वास, ११ काँटो और तिनकोने, १२ क्षणोमे।

हमने इस ज़िन्दगीसे घबराकर
बारहा[1] मौतको पुकारा है
०जबसे वह है शरीके-ग़म 'रूही'
हर ग़मे-ज़िन्दगी गवारा है

इस दिलकी कायनात[2] है तेरी नज़रके साथ
ग़ुंचेकी[3] ज़िन्दगी है नसीमे-सहरके[4] साथ
०आयेगी हाथ मंज़िले-मक़सूद[5] खुद-ब-खुद
देखो तो चलके चार क़दम राहबरके[6] साथ
हम जानते हैं गर्दिशे-शामो-सहरका[7] हाल
गुज़री है उम्र गर्दिशे-शामो सहरके साथ
ऐ रहमते-तमाम! तेरी शानके निसार[8]
दामो-क़फ़स[9] भी बख्श दिये बालो-परके साथ
'रूही' किसीकी याद है इस दिलमें जोफ़गन[10]
इक फूल खिल रहा है, तुलूए-सहरके[11] साथ

---

१ अक्सर, बार-बार, २. दुनिया, ३ कलीकी, ४. प्रात.कालीन वायुके, ५ अभिलषित यात्रा स्थल, ६ मार्ग-दिग्दर्शकके, ७ सन्ध्या और प्रात कालकी परेशानियाँ, ८ कुर्बान, न्योछावर, ९ जाल और पींजरे, १० प्रकाशमान, ११. सूर्योदयके।

वह शमए - दिल, वह रोशनीए - आरज़ू कहाँ
वह गुल कहाँ, वह अंजुमने - रंगो - बू कहाँ
नज़रोंका बार - बार वह मिलना तपाकसे
ख़ामोश - सी दिलोंकी वह अब गुफ़्तगू कहाँ
मंज़िलमें लाख हुस्ने - बहिश्ते - तरब सही
लेकिन वह दिल कशीए - ग़मे - जुस्तजू कहाँ
आदाबे - मैकदा है उसी तरह आज भी
लेकिन वोह बादानोश वह जामो - सुबू कहाँ
'रूही' निगाहे - दोस्तसे बरगश्ता इन दिनों
ले जाऊँ चाके - दिलको बराए - रफ़ू कहाँ

'शफ़क़'—सुश्री शफ़ीक़ बानो 'शफ़क़'

गजल

वारहा[२] मैं अपनी तासीरे-फ़ुग़ाँ देखा किया
वारहा बरहम निज़ामे-दो जहाँ[४] देखा किया
फिर रही थी कल जिन आँखोंमे बहारे-आशियाँ[५]
आज उन्हीं आँखोंसे ख़ाके-आशियाँ देखा किया
नामाबरको[६] शक हुआ उस वक़्त मेरी ज़ीस्तपर[७]
देर तक जब वह मेरा तर्ज़े-बयाँ[८] देखा किया
इक निगाहे-महर[९] जिन ज़र्रों पै[१०] उनकी पड़ गई
मै ज़मीपर उनको शक्ले-आसमाँ देखा किया
मिस्ले-ग़ुंचा[११] खिल गये मेरे दिले-पुर ग़मके दाग़[१२]
बैठकर घरमें बहारे-गुलसिताँ[१३] देखा किया
बूए-गुलकी तरह मै आवारगाने - इश्क़का[१४]
दोशपर[१५] बादे-सबाके[१६] आशियाँ देखा किया
ऐ 'शफ़क़' हमदर्दिए-उल्फ़त पै उसकी मै निसार[१७]
नज़अमें[१८] वह मेरे मरनेका समाँ देखा किया



---

१. उषा, २ वार-बार, अनेकबार, ३. आहोंका प्रभाव, ४. लोक-परलोकके प्रबन्धकी अव्यवस्था, ५. घोसलेका सौन्दर्य, ६. पत्र-वाहकको, ७ जीनेपर, ८ बोलनेका ढंग, ९ कृपा-दृष्टि, १० कणो पै, ११ कलीके समान, १२ दुःखी दिलके दाग, १३ उद्यानकी बहार, १४ प्रेममे आवारा, १५ कन्धेपर, १६. हवाके, १७ न्योछावर, १८ मृत्युके क्षणोमे ।

'शफ़ीक़'[1]—सुश्री शफ़ीक़ फ़ातमा शेरी

बुलन्द निगाही

मैं खुद फ़रेब[2] सही, दिल उम्मीदवार[3] तो है
वफ़ा हो, या न हो वादे-पै ऐतबार[4] तो है
बलासे पायें न मंज़िल मगर यह क्या कम है०
भटकते फिरनेमें इस दिलको कुछ क़रार[5] तो है
गुमाने-तर्के-तअ़ल्लुक़[6] न कीजियो नासेह[7] ?
जो उसकी बज़्म[8] नहीं, उसकी रहगुज़ार[9] तो है
गिला[10] नहीं मुझे बे-कैफ़िए-हयातका[11] अब
खटकते रहनेको सीनेमें कोई ख़ार[12] तो है
विदाए-मौसमे-गुलका न ग़म कर ऐ बुलबुल !
वह इक नवा[13] कि जो है रूकशे-बहार[14] तो है
०चमकके कहती है, ज़ुल्मतसे[15] इक यक़ींकी[16] किरन०
सहर[17] न आई तो क्या, उसका इन्तज़ार तो है
हुए जो अश्क रवाँ[18] उन पै इख़्तियार न था ०
पै उनको तुझसे छुपाने पै इख़्तियार तो है

---

१. कृपालु, मित्र, २. स्वयं धोका खानेवाली, ३. आशावान्, ४ विश्वास, ५. चैन, सन्तोष, ६. सम्बन्ध-विच्छेदका विश्वास, ७ नसीहत-कार, ८. महफिल, ९. मार्ग, आने-जानेका रास्ता, १० शिकायत, ११ आनन्द रहित जिन्दगीका, १२ काँटा, १३ तान, आवाज, १४. बहारके मुकाबिल, १५ अँधेरीसे, १६. विश्वासकी, १७. सुबह, १८. प्रवाहित, जारी ।

कोई समझ न सका गर उसे तो क्या शिकवा[1]
इसीमें ख़ुश है मेरा दिल कि ख़ुद अयार[2] तो है
ब-चश्मे-कम मेरी पस्तीको देखने वाले!
मेरी बुलन्द निगाहोंका तू शिकार तो है
०फ़लकसे[3] कह दो कि सारे जहाँ पै छाजाये
जो मै नहीं रही बाक़ी मेरा ग़ुबार तो है

सीता

तेरा नाम लेकर सहर[4] जागती है
तेरे गीत गाती है तारोंकी महफ़िल
तेरी ख़ाक या हिन्दका राज़े-अज़मत[5]
तेरी ज़िन्दगी मेरे ख़्वाबोंकी मंज़िल
कहानी तेरी सुनके थर्रा उठी मै
धड़कने लगा धीरे-धीरे मेरा दिल

छुपाये है सीनेमें कुछ राज़[6] अपने
दकनके कुहस्ताँकी[7] तपती चटानें
मुसाफिर कुछ आये थे उन जंगलोंमें
फज़ाँमें[8] है बिखरी हुई दास्तानें[9]
वह हम दर्द आँखें, वह बातोंमें जादू
वह मज़बूत बाज़ू वह भारी कमानें

---

१ शिकायत, २ परखनेकी कसौटी, ३ आकाशसे, ४. सुबह, ५ प्रतिष्ठा का भेद, ६ भेद, ७. पर्वतोंकी, ८. वहारोमे, दिशाओमे, ९ कहानियाँ।

वह इक खुद-फ़रामोश[1] पीकी पुजारन
कुटी पत्तियोंकी नदीका किनारा
निगाहोंसे छनता हुआ नूरे-उल्फ़त[2]
जबींपर[3] फ़रोज़ाँ[4] वफ़ाका सितारा[5]
बरसते हुए फूल ख़ुशियोंके हर-सू[6]
ज़माना भी था रुकके महवे-नज़ारा[7]

वह पैहम[8] सफ़र, वह हवादसके[9] तूफ़ाँ
वह पैरोंमें छाले, वह हँसती निगाहें
कभी दिलको ग़ुरबतमें[10] बहलाये रखना
कभी देसकी यादमें सर्द आहें
रही साल-हा-साल तू जादा पैमा[11]
यह धुन थी कि तै हों रियाज़तकी[12] राहें

मगर आज़माइश थी कुछ और बाक़ी
अभी सामने और भी इम्तहाँ थे
असीरी[13] फिर इक राकशसकी असीरी
बहुत दूर तुझसे तेरे पासबाँ[14] थे
तेरी पाक फ़ितरत[15] मगर इक सिपर[16] थी
तेरे सामने राकशस नातवाँ[17] थे

१. अहम्से रहित, अपनापन भूली हुई, २. प्रेम-प्रकाश, ३. मस्तकपर, ४ प्रकाशमान्, ५ नेकियोका नक्षत्र, ६ चारो तरफ, ७ देखनेमे लीन, ८ लगातार ९ मुसीबतोके, १०. परदेशमे, ११ पथिक, राहगीर, १२ तपस्याके दिन, १३ बन्दी जीवन, १४. रक्षक, १५ पवित्र स्वभाव, १६ ढाल, १७. राक्षस, दुर्बल।

उठे फिर तेरा नाम लेकर जवाँ कुछ
जरी हौसलामन्द[1] सच्चे जयाले
हिला डाले ईवान[2] इक सल्तनतके
तेरे पासबाँ[3] थे बड़ी आन वाले
तेरी वापसी कर रही थी यह एलाँ[4]
न हारेंगे बातिलसे[5] टकराने वाले

सहे जो सितम बन गये सब फ़साना[6]
तलाफीका[7] अब आ रहा था ज़माना
हुई आह लेकिन यह कैसी तलाफ़ी !
दुबारा मिला जंगलोंमें ठिकाना
भटकती रही दिल शिकस्ता-ओ-तन्हा[8]
कि लाजिम था बारे-अमूमत उठाना

अजब है, यह इसरारे-वस्लो-जुदाई[9]
कि मंज़िलको पाकर भी मंज़िल न पाई
यह कैसा सितम है कि इज़्ज़तकी देवी
सबूत अपनी इज़्ज़तका देनेको आई
वह शोलेकी मानिन्द शोलोंसे[10] गुज़री
वह बिजली-सी बनकर ज़मींमें समाई

---

१ वीर उत्साही, २ महल, ३ रक्षक, ४. एलान, ५. आधिभौतिकवादसे, ६ इतिहास, ७ क्षयपूर्तिका, ८. भग्न हृदय और अकेली, ९ मिलन-विरहकी बात, १० आग ।

दुःखी माँ ! यही ज़िन्दगी है वह विरसा[1]
तेरी बेटियाँ जिसको पाती रही है
यूँ-ही राकशसे[2] वार करते रहे है
यूँ ही आगमें वह नहाती रही है
वह इज़्ज़तकी ख़ातिर तरसती रही हैं
वह सदियोंके सद्मे उठाती रही हैं

सती माँ ! कठिन है बहुत ज़िन्दगानी
बड़ा जुर्म है दहरमें[3] नातवानी[4]
दुकानोंमें होता है बे खौफ सौदा
तड़पती है हर बेसहारा जवानी
ग़ुलामी है तक़दीर उन बेबसोंकी
न ख़ुद कर सकें अपनी जो पासबानी[5]

तेरा नाम लेकर अब उठना ही होगा
मिटाये नहीं मिटती बेताबए-दिल
पयाम[6] इक नया आज लाई हैं, किरनें
नमी आँसुओंकी हवामें है शामिल
तेरे सोज़े-दिलसे है जो शमअ़ रोशन
उसीके उजालेमें ढूँढेंगे मंज़िल



१. उत्तराधिकार, २. राक्षस, ३. संसारमे, ४. निर्बल होना, ५. रक्षा, ६. सन्देश।

'शबनम'[1]—सुश्री सैयद: ख़ुर्शीद 'शबनम' ओपाली

धनक

इश्क़के अफ़साने लबपर थरथराकर रह गये
उनकी पलकोंपर सितारे झिलमिलाकर रह गये
क्या कहूँ आग़ाज़े-उल्फ़त सिर्फ़ इतना याद है
आँख मिलना थी कि वह दिलमें समाकर रह गये
रूठकर जाना किसीका इक क़यामत हो गया
साज़े-दिलके तार[2] जैसे झनझनाकर रह गये
वह मुहब्बत, वह ज़माना, वह खुशी, वह ज़िन्दगी
आज कितने ही फ़साने याद आकर रह गये
यूँ तो उनको आर थी 'शबनम'से मिलनेमें मगर
सामना जब हो गया तो मुसकराकर रह गये

नग़मए-बहार

खिलाओ फूल तबस्सुमसे[3] गुलसिताँ[4] बन जाओ
गुलोंका नग़मा[5] बहारोंकी दास्ताँ बन जाओ
नज़र - नज़रमें सितारोंकी ताबिशें[6] भर दो
हमारी अंजुमने - दिलमें कहकशाँ[7] बन जाओ

---

१ ओस, २ हृदय-वीणाके तार, ३. मुसकानसे, ४. वाटिका, ५ सगीत, ६. चमक, ७ आकाशगगा ।

भटक रहा है, अँधेरोंमें कारवाने-हयात
उठाओ पर्दए-रुख़ माहे ज़ौ-फ़िशाँ[1] बन जाओ
दिले-तबाहको तसकी तो हो किसी सूरत
सितमसे बाज़ न आओ तो महर्बां बन जाओ
निबाहो रस्मे-मुहब्बत तुम अपनी 'शबनम'से
नज़रसे दिलमें समा जाओ राज़दाँ बन जाओ

शबनम-ओ-गुल

इक निगाहे-तबस्सुम[2] असर मिल गई
रोशनीए-बहारे-सहर[3] मिल गई
जब चमक दर्दकी कुछ सिवा हो गई
अपने ही दिलसे उनकी खबर मिल गई
वह समुन्दरकी वुसअतको[4] समझें भी क्या
जिनको मौजे-सदफ़[5] सतहपर[6] मिल गई
जब फ़रोज़ाँ[7] हुए अपने दाग़े-जिगर
शामे-ग़मको नवेदे-सहर[8] मिल गई
मरहबा[9]! अज़्मे-नौ रहरवे-शौक़को[10]
ज़िन्दगीकी नई रहगुज़र[11] मिल गई
नग़मए-जा फ़िज़ा[12] छेड़ ऐ मुतरिबा[13]!
आज 'शबनम' की गुलसे नज़र मिल गई

---

१. चमकीला चाँद, २ मुसकराती नजर, ३ सुबहकी बहारकी रोशनी, ४. विस्तीर्णताको, ५. मोतियोकी लहर, ६ किनारेपर, ७. दीप्त, ८ सुबहका निमन्त्रण, ९ शाबास, १० यात्राके नवीन शौकीनकी दृढताको, ११ मार्ग, राह, १२ प्राण-संचारक सगीत, १३ गानेवाली ।

'शमा'—सुश्री अज़मत इक़बाल शमत्र्

दिलमें जब बेचैनियोंकी लज़्ज़तें पाती हूँ मैं
होशकी मंज़िलसे कोसों दूर हो जाती हूँ मैं

यह घटाएँ, यह बहारें, यह हवाएँ, यह फ़ज़ाँ
हर गुले-नज़्ज़ारामें[1] फ़ितरतकी[2] बू पाती हूँ मैं

इक कशा-कश[3] हर क़दम, हर लहजा पेश इक इम्तहाँ[4]
हर नफस[5] बरहम[6] निज़ामे-ज़िन्दगी[7] पाती हूँ मैं

कार फरमाँ[8] कौन-सी क़ूवत[9] दिले-महज़ूँ में[10] है
जी में क्या कुछ है, मगर कहने नहीं पाती हूँ मैं

हर तबस्सुम[11] भी मेरा इक दास्ताने-दर्द है
मुसकराती हूँ तो अश्क आँखोंमें भर लाती हूँ मैं

जब्ते-ग़मकी चाराफ़रमाईको[12] गुज़रीं मुद्दतें
जिन्दगीकी कश-म-कशसे[13] अब तो घबराती हूँ मैं

साज़े-खामोशीमें[14] भी है, ग़मके नग़मे[15] सदहजार[16]
आश्कारा[17] है वोह जिसको राज[18] बतलाती हूँ मैं

---

१. दर्शनीय फूलोमे, २. प्रकृतिकी, ३ खीचातानी, बेचैनी, ४ प्रत्येक क्षण-परीक्षा, ५ हर श्वासमे, ६. अव्यवस्थित, ७. जीवन-व्यवस्था, ८ आज्ञा देनेवाली, ९. शक्ति, १० शोकग्रस्त हृदयमे, ११ मुसकान, १२. चिकित्साके प्रयत्नको, १३. झंझटोसे, १४. मौन वाद्यमे, १५. व्यथा-गीत, १६ हजारो, १७. प्रकट, १८. भेद, गुप्त ।

कितनी ला-महदूद[1] हैं, उस बेखुदीकी[2] वुसअतें[3]
मंज़िले-इद्राकसे[4] आगे बढ़ी जाती हूँ मै
नज़्मे-ग़म साकित[5] है, और नज़्मे-फ़ितरत[6] है ख़मोश
जैसे इक खोई हुई शै आज फिर पाती हूँ मैं
गरचे 'शमअ्' जलबुझी शमए-शबिस्ताने-उम्मीद[7]
दिलके ख़ाकिस्तरमें[8] कुछ अपनी शरर[9] पाती हूँ मैं

जुस्तजू-ए-राह बाक़ी है न मंज़िलकी तलाश
मुझको खुद है अब मेरे खोये हुए दिलकी तलाश
रोक ऐ हमदम! न मेरी अश्क-अफ़शानीको तू
महफ़िले-हस्तीको है इक शम-ए-महफ़िलकी तलाश
अब नज़र आये जहाँ अपने सिवा कोई न हो
दिलको राहे-शौक़में है ऐसी मंजिलकी तलाश
दीदए-ज़ाहिरसे कब तक देखिए अन्दाज़े-दोस्त
कीजिए ऐ 'शमअ्'! अब इक़ दीदए-दिलकी तलाश



१. असीमित, २ तन्मयताकी, ३. विस्तीर्णता, ४. अक्लके मार्गसे, ५. सहमी हुई, ६ विधाता, ७. आशा रूपी महफिलकी शमा, ८ राखके ढेरमे, ९. चिनगारी।

'शम्सी'[1]—सुश्री नवाब बेगम शम्सी

दास्ताने-हयात

दास्ताने-हयात[2] कुछ तो हो
सूरते-वाकियात कुछ तो हो

ग़लत अन्दाज ही सही लेकिन
निगहे-इल्तफात[3] कुछ तो हो

न सही इशरते-हयात[4] मगर
फ़र्क़े-मौतो-हयात[5] कुछ तो हो

हस्तीए-बेसबात[6] कुछ भी नही
हस्तीए-बेसबात कुछ तो हो

महर्बानी ही महर्बानी क्या
महर्बानीमें बात कुछ तो हो

दौलते-दर्द मिल गई 'शम्सी'!
हासिले-कायनात[7] कुछ तो हो

---

१. सूर्य्य सम्बन्धी, २ जीवन-कथा, ३ कृपादृष्टि, ४. जीवन-सुख, ५ मृत्यु-जीवनमे अन्तर, ६ नाशवान् जीवन, ७. दुनियासे लाभ।

जज़्बए-इश्क़

किस क़दर दूर हूँ
सख़्त मजबूर हूँ
जज़्बए - इश्क़से[1]
शोलए - तूर[2] हूँ
कोई पर्दा नहीं
फिर भी मस्तूर[3] हूँ
हँस रही हूँ मगर
रंजसे चूर हूँ
तेरा शिकवा नहीं
ख़ुद ही मजबूर हूँ
है तुम्हारा करम[4]
मैं जो मशहूर हूँ

नग़मए-शौक़

साज़े - उम्मीद बजा
नग़मए - शौक़ सुना
तीर इक और लगा
दर्दे-दिल और बढ़ा

---

१. प्रेम-भावनासे, २. पर्वतकी आग, ३. छिपी हुई, ४. कृपा।

देख ले आज फ़ज़ा
साग़रे - शौक़ उठा
कलियाँ उम्मीदकी चुन
दामने - दिलको सजा
मेरा ग़म कुछ भी न कर
अपना अफसाना सुना
आज ग़मगीन है दिल
मेरे ज़ख्मोंको हँसा
कुछ बता भी तो मुझे
क्यों हुआ मुझसे खफ़ा

'शमीम'[1]—सुश्री सफ़ीयः शमीम मलीहाबादी

कब तक रहूँ सरगश्तः - ओ-आलाम रसीदः[2]
आ सूरते - ताबीरमें[3] ऐ ख़्वाबे - नादीदः[4]
आ जा कि है अब दामने-उम्मीद बुरीदः[5]
बे - महरिए-एहबाब[6] है, क़िस्मत है कशीदः[7]
फिर सायेमें काकुलके[8] चमक ऐ रुखे-रंगीं[9]!
फिर अब्रकी[10] छाओंमें तड़प बर्क़े - रमीदः[11]
यह मौजे-तबस्सुम[12] यह जबीने-अरक़ आलूद[13]
गोया सरे - शबनम असरे - सुबहे - दमीदः[14]
बे चैन है दिल, मुन्तज़िरे - दीद[15] हैं नज़रें
ज़ुल्मातके[16] परदेसे निकल हुस्ने - रसीदः[17]
रोशन है तेरी यादसे फ़ानूसे - तख़ैय्युल[18]
ऐ जल्वए - सदरंग[19], चराग़े - दिलो - दीदः[20]
बस इक निगहे-महर जमाले-चमन अफ़रोज़[21]
हर फूल है गुलशनमें गरेबान दरीदः[22]

---

१ सुगन्ध, २ उद्विग्नताओ और दुःखोसे घिरी, ३-४ अनदेखे स्वप्नके परिणाममे, ५. आशाओकी चादर फटी हुई, ६. इष्ट-मित्रोकी उपेक्षा, ७. भाग्य विपरीत, ८ जुल्फोके, ९. रंगीनमुख, १०. बादलकी, ११. पलायन की गई बिजली, १२. हँसीकी लहर, १३ मस्तक पसीनेसे भीगा हुआ, १४. सुबहकी ओसका प्रभाव, १५. देखनेकी इच्छुक, १६ अँधेरोके, १७. महान् सौन्दर्य्य, १८. कल्पनाओका झाड-फानूस, १९ पूर्णरूपेण सौन्दर्य्य-प्रकाश, २० दिल और आँखोकी रोशनी, २१. उद्यानको विकसित करनेवाली सूर्य्य-दृष्टि, २२ गरेबान फाडे हुए ।

ऐ शिद्दते-अन्दोह[1] ठहर, देख कि दिलसे
होने ही पै है रिश्तए - एहसासे - बुरीदः[2]
अब कश-म-कशे-यास[3] है बस याद है इतनी
देखा था कभी हमने भी इक ख्वाबे-दमीदः[4]
मुमकिन हो तो अब पर्दए - इसरार[5] उठा दे
ऐ गुंचए - मस्तूर[6], 'शमीमे' - नाशुनीदः[7]

चमनमें जश्ने - उरूसे - बहार[8] है आ जा
उरूसे-नग़्मा[9] सरे-आबशार[10] है आ जा
हर-एक जुम्बिशे गुलमें[11] हज़ार नग़मे हैं
हर-इक नसीमका[12] झोंका बहार है आ जा
सरूरबख़्श[13] घटाओंके मस्त सायेमें
जमाले-लाल-ओ-गुल[14] ताबदार[15] है आ जा
रविश-रविश पै छिड़ी है हदीसे-लाल-ओ-गुल
कली-कलीको तेरा इन्तज़ार है आ जा
तुझे खबर भी है इस मौसमे-बहारमें भी
'शमीम' नावके-ग़मका[16] शिकार है आ जा

१ दु खकी अधिकता, २. भावनाओकी चादर फटनेवाली है, ३. निराशाओसे छेडछाड, ४. उगता हुआ, ५. गोपनीय पर्दे, ६. छिपी कली, ७ नही सुनी हुई, ८ वहारकी दुल्हनका उत्सव, ९ सगीतकी दुल्हन, १०. झरनेके समीप, ११ फूलोकी हलन-चलनमे, १२. हवाका, १३ आनन्द-प्रद, १४. लालफूल और अन्य फूलोका सौन्दर्य्य, १५ आभायुक्त, १६ दु खरूपी तीरोकी ।

यह किसके फ़रेब खा रहे हैं
अरमानोंसे दिल बसा रहे है
रह-रहके उमड़ रहे हैं आँसू
यह दिलसे किसे भुला रहे है
बेचैन हैं बिजलियाँ फ़लकपर[1]
गुलशन हैं कि मुसकरा रहे हैं
हो ख़ैर चिराग़े - बज़्मे - हसरत[2]
क्यों शामसे झिलमिला रहे हैं
सावनके 'शमीम' मस्त बादल
क्या जानिए क्यों रुला रहे हैं

कुछ ख़बर हो सकी न तेरे बग़ैर
कब बहार आई, कब खिज़ाँ आई

ख़िज़ाने[3] ख़ाक उड़ाई हज़ार गुलशनमें
चमनमें फूल मगर मुसकराये जाते है

जहाँ उजड़ा, वहीं तामीर[4] होगा आशियाँ[5] अपना
तड़पती बिजलियोंपर हँस रहा है गुलसिताँ[6] अपना

---

१. आस्मानपर, २ अभिलाषाओंकी महफिलके चिराग, ३. पतझडने, ४. निर्माण, ५ नीड़, ६. उद्यान।

०वे तसव्वुरमें[1] यकायक आ गये
हिज्रकी[2] सूरत बदलकर रह गई

यह किसके अश्क थे, जो बन गये तबस्सुमे-गुल[3] ?
यह किसके दिलकी तमन्ना बहार होके रही ?

० जल बुझी शम-ए-आर्ज़ू[4], लेकिन—
इक धुआँ-सा ज़रूर उठता है

क्या क़यामत थी परदादारिए-ग़म
मुसकराते ही आ गये आँसू

बेख़बर ! मंज़िले-मक़सूद[5] नही दूर, मगर—
आलमे-होशसे हस्तीको गुज़र जाने दो

उनकी नजरको जुरअते-पुरसिश[6] न हो सकी
दिल ग़मपै इस क़दर हुआ नाजाँ[7] कभी-कभी

---

१. ध्यानमे, २. विरहकी, ३ फूलकी मुसकान, ४. अभिलाषा-दीप ५ लक्ष्य केन्द्र, ६. हालचाल पूछनेकी हिम्मत, ७. गर्वीला ।

उठो कि शबमें[१] जमाले-सहर[२] तलाश करें
हुजूमे-खारमें[3] गुलहाये - तर[४] तलाश करें

लवाए-अब्रमें[५] ढूँढें फ़रोग़े-माहो-नजूम[६]
रिदाए-ख़ाकमें लालो-गुहर[८] तलाश करें

हरीमे-ज़हनके[९] सब झिलमिला रहे हैं चिराग़
चलो तजल्लिए-शम्सो-क़मर[१०] तलाश करें

रबाबे - वक्त़ पै छेड़े तरानए - अबदी[११]
दयारे-मर्गमें[१२] उम्रे-ख़िज़र तलाश[१३] करें

फिर आओ तनतनए-खुसरवीकी[१४] डालें तरह
फिर आओ ताबिशे-ताजो-क़मर[१५] तलाश करें

तवहम्मातकी अफ़सुर्दावादियोंमें[१६] 'शमीम'
दमाग़े-गर्मो-दि़ले मअ़तबर[१७] तलाश करें

---

१. रातमे, २. प्रातःकालीन सौन्दर्य्य, ३. काँटोकी झाड़ियोमे, ४. ताजे फूल, विकसित कुसुम, ५. बादलोकी लौमे, ६. चन्द्र-नक्षत्रोका प्रकाश, ७. धूल रूपी चादरमे, ८. लाल-मोती, ९. मस्तिष्क-परिधिके, १०. सूर्य्य, चन्द्रका प्रकाश, ११. युगानुकूल रूपी वाद्यपर अमर संगीत गायें, १२ मृत्यु-पथमे, १३. खिजरकी स्थायी आयु, १४. बादशाही रोब-दाबकी नीव, १५. राज्य-मुकुट और चन्द्रमाकी चमक, १६. बुराइयोंकी उजाड घाटियोमे, १७. विश्वस्त हृदय और ओजस्वी मस्तक ।

एजाजे-नग़मा

अगर मै तिलस्मे-तकल्लुम[१] दिखा दूँ
तरानोंसे बज़्मे-सुरैया[२] बना दूँ
तरब-आशना[३] तल्ख[४] आहोंको कर दूँ
क़बाए-हवादसके[५] पुर्ज़े उड़ा दूँ
अगर चर्खको[६] अज़्म[७] दूँ बन्दगीका
दरे-खाकपर माहे-ताबाँ[८] झुका दूँ
अगर नग़मए-सरमदी[९] छेड़ दूँ मै
खिज़ाँमें गुलोंको महकना सिखा दूँ
अजल भी मेरे ग़म पै आँसू बहाये
अगर नालए-ज़िन्दगानी सुना दूँ
अगर छेड़ दूँ साज़ खिलवतमें[१०] तेरी
चिराग़ोंको ताक़े-हरमसे[११] गिरा दूँ
कहो तो बदल दूँ निज़ामे-दो आलम
जहन्नुममें फूलोंकी जन्नत बसा दूँ
गुलिस्ताँका हर फूल दिल बनके महके
अगर एक अश्के-तमन्ना गिरा दूँ
'शमीम' आह कर दूँ तो लौ दे ज़माना
फजा मुसकरा दे अगर मुसकरा दूँ

---

१. वार्तालापका तिलिस्म, २. एक नक्षत्रका नाम, ३. आनन्दसे परिचित, ४ कडवी, ५ मुसीबत रूपी परिधानके, ६ आकाशको, ७. निश्चयका, इच्छाका सकेत, ८ चन्द्रमा, ९ नित्यताका सन्देश, १० एकान्तमे, ११. मसजिदके आलेसे ।

रूबाइयाँ

शर्मिन्दा कभी न रूहे-महनत[1] होगी
हिम्मत है तो हर गाम[2] पै नुसरत[3] होगी
इस वक़्त अगर तुझसे गुरेज़ाँ[4] है तो हो
कल वक़्तको खुद तेरी ज़रूरत होगी

कुछ भी नहीं ज़िन्दगीमें ख़िदमतके सिवा
सोजे-दिलो-दर्द आदमीयतके[5] सिवा
औरंगो[6]-निशानो[7]-चतरो[8]-मुहरो[9]-दीहीम[10]
सब हेच[11] हैं, सब हेच हैं, मुहब्बतके सिवा

किस तौरसे देख जी रहा है, इंसाँ
खुद अपने कफ़नको सी रहा है इंसाँ
कुछ तुझको भी मालूम है ऐ रब्बे-जलील!
इंसानका ख़ून पी रहा है इंसाँ

---

१. दिली श्रम, मनसे किया हुआ काम, २ पग-पग पै, ३. विजय, सफलता, ४. उपेक्षाका भाव लिये हुए है, ५. मानवताके दुःख-दर्दके सिवा, ६. राज्य-सिंहासन, ७. राज्य-पताका, ८. छतर, ९ राजकीय मुहर, १०. कलगी, राज्य-मुकुट, ११ तुच्छ।

गुलशनकी हर इक कली चटक जाती है
पेशानिए-आफ़ाक़[1] दमक जाती है
जब नाज़से वोह कुछ मुसकरा देते हैं
गुलज़ारमें चाँदनी छिटक जाती है

तूफ़ानमें किश्तीको बढ़ाऊँ कैसे ?
आँधीमें चिराग़े-दिल जलाऊँ कैसे ?
यह क़हर[2], हवादिस[3] यह हुजूमे-आलाम[4]
अल्लह यह बारे-ग़म[5] उठाऊँ कैसे ?

बेज़ार तसन्नअ[6] हूँ सदाक़तकी[7] क़सम
बारफ़्तए-नफ़रत[8] हूँ मुहब्बतकी क़सम
अब तालिबे-ज़ुल्मत[9] हूँ तजल्ली[10] कैसी
सरशार[11] मए-ग़म[12] हूँ मसर्रतकी[13] क़सम



---

१ विश्व-मस्तक, २. जुल्म, ३ मुसीबतें, ४. दु:खोंकी भीड़, ५. दु:खोंका बोझ, ६. बनावटसे परेशान, ७. सत्यकी, ८. शिथिल घृणा, ९. अँधेरोंकी इच्छुक, १०. प्रकाशकी, ११ मस्त, नशेमे, १२. दु:ख रूपी मदिरा पीकर, १३ आनन्दकी सौगन्ध।

'शमीम'[1]—सुश्री किशोर शमीम कैलाशपुरी

प्रेम बड़ा आजार[2]

प्रेमके राग न गाना पगले
प्रेम-नगर मत जाना पगले
राह यह है पुरखार[3], पगले
प्रेम बड़ा आज़ार

प्रेममें रोना ही होता है
जीवन खोना ही होता है
जीत हो या कि हार, पगले
प्रेम बड़ा आज़ार

इस संसारमें प्रीति नहीं है
कोई किसीका मीत नहीं है
झूठा जगका प्यार, पगले
प्रेम बड़ा आज़ार

तू ही बता क्या पाया आख़िर
प्रीति किये पछताया आखिर
अब रोना बेकार, पगले
प्रेम बड़ा आज़ार



१. सुगन्ध, २. दुःखदायी, ३. कण्टकाकीर्ण ।

'शमीम'—सुश्री सलमा 'शमीम'

शिकायत

अपने क़रारो - क़ौल भुलाये हुए हो तुम
नक़्शे - वफ़ाको दिलसे मिटाये हुए हो तुम
पहले मेरी हँसीमें रहा करते थे शरीक
अब मेरे आँसुओंमें समाये हुए हो तुम
अव्वल मेरी वफ़ाओंके अरमान थे तुम्हें
अब-ख़ुद वफ़ासे हाथ उठाये हुए हो तुम
बाज़ी थी जिस बिसातपर अपनी जमी हुई
नक़्शा कुछ और उस पै जमाये हुए हो तुम
ग़ैरोंका क्या गिला[1] कि वह कम्बख़्त ग़ैर हैं
अफसोस अपने होके पराये हुए हो तुम
खुलता नहीं यह हाल कि क्या हो गया तुम्हें
क्यों अब यह हाल अपना बनाये हुए हो तुम
पोशीदा[2] क्या नज़रमें कोई राज़[3] है नया
मेरी तरफसे आँख चुराये हुए हो तुम
रहने लगे हो सामने मेरे कुछ इस तरह
जैसे किसीको मुझसे छुपाये हुए हो तुम
बाँ ई-हमा वह चीज़ है जानो - दिले-'शमीम'[4]
जिस चीज़पर निगाह जमाये हुए हो तुम

---

१. शिकायत, २. छिपा हुआ, ३ भेद। ४. सुगन्ध।

'शमीम'—सुश्री क़ैसर शमीम

आज मुझे कुछ गाने दो

रो-रोकर इक उम्र गँवाई, आज मुझे कुछ गाने दो
अपने बेकल, पागल मनको गीतोंसे बहलाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

जीवनके दुख-सुखकी कहानी कहते-कहते जुग बीते
आँखोंके झरनोंसे पानी बहते-बहते जुग बीते
बहते पानीकी धाराको आज ज़रा रुक जाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

नीले सागरमें इक किश्ती हौले-हौले बहती है
इस किश्तीमें चाँदकी रानी तारोंसे कुछ कहती है
जो कुछ कहती है वह रानी खुलके उसे कह जाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

अपने भूले-बिसरे सपने आज मुझे याद आते है
मेरे कोमल हृदयको फिर तड़पाते हैं बरमाते हैं
उन भूले-बिसरे सपनोंको और मुझे तड़पाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

उन नैनोंकी नीलाहटसे माँद हुआ जाता है गगन
उन होंटोंका मद पी-पीकर झूम रही है आज पवन
आज तो इस मतवाली पवनको अमृत रस छलकाने दो
आज मुझे कुछ गाने दो

'शमीयः'—सुश्री शमीयः शाहिद

ज़ीस्तको[1] पुर बहार[2] क्या करते
दिल ही था सोगवार[3] क्या करते

आपके ग़मकी बात है वर्ना
खुदको हम बेक़रार[4] क्या करते

आपका एतबार ही कब था
आपका इन्तज़ार क्या करते

थी हमें क्या बहारसे उम्मीद
हम उमीदे-बहार क्या करते

जीस्तपर कब हमें भरोसा था
आपपर एतबार क्या करते

८थे न जिनको अज़ीज़[5] ख़ारे-चमन[6]
वह भला गुलसे प्यार क्या करते

०'शमीयः' जब न शब[7] ही रास आई
सुबहका इन्तज़ार क्या करते



---

१ जिन्दगीको, २. बहारसे परिपूर्ण, ३. शोक-सन्तप्त, ४. बेचैन, ५ प्रिय, ६. बागके कांटे, ७ रात ।

'सलमा'—सुश्री सलमा बी० ए०

धड़कनें

उठाना मेरा साज़े-हस्ती[1] उठाना
बहुत देरसे मुन्तज़िर[2] है ज़माना
कभी मुसकराहट कभी चश्मे-पुरनम[3]
बस इतना-सा है ज़िन्दगीका फ़साना[4]
तेरे इक न होनेसे हैं बे-हक़ीक़त[5]
यह रंगीं फ़ज़ाएँ[6] यह मौसम सुहाना
शबे-ग़म[7] सितारे भी बुझने लगे हैं
मेरे दिलके दाग़ो ! कोई लौ बढ़ाना
मुझे आज भी याद है दुश्मने-जाँ !
वह आग़ाज़े-उल्फ़तका[8] रंगीं ज़माना
वजूदे - मुहब्बत[9] मआले-तमन्ना[10]
हक़ीक़त-हक़ीक़त, फ़साना-फ़साना
न तेरा गिला[11] है न दुनियाका शिकवा
लिखा है मुक़द्दरमें आँसू बहाना

---

१. जीवन-वाद्य, २ प्रतीक्षित, ३ अश्रुपूर्ण नेत्र, ४. इतिहास, ५. व्यर्थ, ६. बहारें, ७. दुःखकी रातोमे, ८. प्रेमकी शुरूआतका, ९. प्रेमका अस्तित्व, १०. इच्छाओका परिणाम, ११. शिकायत ।

कोई छेड़ दे नग़महाए-मुहब्बत[1]
बहुत ग़ौरसे सुन रहा है ज़माना
तेरी याद ही वजहे-तस्कीने-दिल[2] है
बड़ा ही करम[3] है, तेरा याद आना
मैं दुनियामें ग़मके भी क़ाबिल नहीं क्या
तेरा दर्द भी छीनता है ज़माना
नहीं ज़िन्दगानीसे मायूस 'सलमा'
तग़ैय्युर पसन्दी मज़ाजे-ज़माना

•

जेरे-लब

हुआ है जबसे ग़मे-दोस्त ! तुझसे प्यार मुझे
सकूने-दिल[4] भी गुज़रने लगा है बार[5] मुझे
मेरी तबाही पै इस तरह हाथ मल-मलकर
न कर खुदाके लिए और शर्मसार मुझे
तुम्हारी यादकी खुशबूके नर्म झोंकोंसे
उदास कर गई रंगीनिए-बहार मुझे
किया है बार-हा[6] महसूस मैंने शामे-फ़िराक[7]
कि जैसे करता हो छुप-छुपके कोई प्यार मुझे

---

१. प्रेमगीत, २ दिलके चैनका कारण, ३. कृपा, ४ दिलका चैन, ५. भार, ६ बार-बार, ७ विरह-सन्ध्या।

यूँ ज़ेरे-लब न सुना दास्ताने-उल्फ़त-ओ-शौक़
पुकारना है तो खुलकर ज़रा पुकार मुझे

ऐ इज़्तराबे-तमन्ना[1] ! तेरी हयात दराज[2]
कि हो चला है ग़मे-ज़िन्दगीसे प्यार मुझे

फ़रेब[3] खाये हैं, दिलने कुछ इस तरह 'सलमा'
नहीं रहा है किसी पर भी एतबार मुझे



१. अभिलाषाओंकी बेचैनी, २. उम्र बडी हो, ३. धोके ।

'सलमा'—सुश्री सलमा मन्सूर

धड़कनें

फ़रेबे - इश्क़[1] पैहम[2] खा रही हूँ
तेरी बातोंमें फिर भी आ रही हूँ
तुझे देखा है मैंने जिस घड़ीसे
मैं अपने-आपसे शर्मा रही हूँ
न समझी मैं यह अपना राज़[3] अबतक
तड़पती हूँ कि मैं तड़पा रही हूँ
बढ़ी जाती है मेरे दिलकी धड़कन
किसीको आज मैं याद आ रही हूँ
ख़ुदा जाने यह आ पहुँची कहाँ मैं
कि ख़ुदको अजनबी-सा पा रही हूँ
बसाया था जिसे सौ आर्ज़ूसे
उसी दुनियासे मैं अब जा रही हूँ
है 'सलमा' इब्तदा जिनकी क़यामत
मै उन क़िस्सोंको अब दुहरा रही हूँ



---

१. प्रेमके धोके, २. लगातार, ३ भेद।

'सलमा'—सुश्री सलमा अख़्तर

जख़्मे-दिल

जख़्मे-दिलपर दवा तो लग जाये
आँख मेरी ज़रा तो लग जाये

ख़ून हो-होके दिल टपकता है
इसके मुँहको मज़ा तो लग जाये

रक़्से-आलमको[1] यूँ ही रहने दो
दिल मिरा एक जा तो लग जाये

क्यों दरे-मैकदाको[2] बन्द करें
शैख़ गुज़रे हवा तो लग जाये

उसको दुनियामें ढूँढ़ ही लेंगे
अपने दिलका पता तो लग जाये

ख़ाक ही होके चैन पा जाऊँ
मुझको इक बद्दुआ तो लग जाये

तुझको मेरा पता लगाना है
मेरे आलममें[3] आ, तो लग जाये

लाख वह बेवफ़ा सही 'सलमा'
उसको मेरी वफ़ा तो लग जाये

---

१. दुनियाके चक्रको, २. मदिरालयके द्वारको, ३. दुनियामे, स्थितिमे।

सागरे - ग़म पिया, पिया ही क्यों
रोते - रोते जिया, जिया ही क्यों

अश्क ही पूँछे मेरी आँखोंसे
तुमने कुछ भी किया, किया ही क्यों

अब तो काँटे भी दे रहे है मज़ा
हाये अब गुल दिया, दिया ही क्यों

शब अँधेरी सही गुज़र जाती
तुमने बुझता दिया, दिया ही क्यों

चाके - दामन बहुत था सीनेको
ज़ख़्मे-'सलमा' सिया, सिया ही क्यों

❁

'सहर'—सुश्री तबस्सुम 'सहर'

समझी नहीं हयातकी[1] शामो-सहरको[2] मैं
हैरतसे देखती रही शम्सो-क़मरको[3] मैं
यह कौन ग़ायबाना[4] है, जल्वे दिखा रहा
बेताब पा रही हूँ जो अपनी नज़रको मैं
मंज़िलका होश है, न है अपनी ख़बर मुझे
मुद्दतसे तक रही हूँ तेरी रहगुज़रको[5] मैं
दिलकी कली कभी न खिली फिर भी आज तक
हसरतसे[6] तक रही हूँ नसीमे-सहरको[7] मैं
मेरे जनूने-शौक़का आलम[8] तो देखिए
सज्दे[9] भी कर रही हूँ तो अपने ही दरको[10] मैं
मुड़-मुड़के देखने पर वह मजबूर हो गये
अब कामियाब पाती हूँ अपनी नज़रको मैं
यह किसके नक़्शे-पा[11] ने है थामे मेरे क़दम
मंज़िल समझकर बैठ गई रहगुज़रको मैं
माना नहीं है कोई तबस्सुम-नवाज़ आज
फिर भी परख रही हूँ किसीकी नज़रको मैं

---

१. जिन्दगीकी, २. सन्ध्या और प्रात:कालको, दिन-रातको, ३. सूर्य-चन्द्रको, ४. छिपे-छिपे, ५. रास्तेको, ६ ललचाई नजरोंसे, ७. प्रातः-कालीन वायुको, ८ प्रेमोन्मादकी अवस्था, ९ मस्तक झुका रही हूँ, १०. द्वारको, ११. चरण-चिह्नोंने।

'सहाब'—सुश्री सहाब क़िज़लबाश देहलवी

ग़ज़ल

हज़ार बातें है दिलमें अभी बतानेको
मगर ज़बाँ नही मिलती हमें सुनानेको

हम अहले-ज़र्फ़ अभी तक हैं एक जिंसे लतीफ़
जिन्हें कुचल दिया दुनियाने आज़मानेको

वह आँखें आज सितारे तराशती देखीं
जिन्होंने रंगे-तबस्सुम दिया ज़मानेको

हमारे फूल, हमारा चमन, हमारी बहार
हमींको जा नहीं मिलती है आशियानेको

लरजके रख दिया जिस बारको फ़रिश्तोंने
वह हमको बख्श दिया तुमने आज़मानेको

'सहाब' इतने तग़ैय्युर-नवाज़ है हम भी
कि अपने नग़मोंने चौंका दिया ज़मानेको



---

१. मेघ, अभ्र ।

'साहिरः'[1] — सुश्री साहिरः इटावी

जब कली कोई मुसकराती है
मेरी आँख अश्कसे भर आती है
दूर बजती हो जैसे शहनाई ०
इस तरह उनकी याद आती है

दिलकी किश्ती निकलके तूफ़ाँसे
आके साहिल पै[2] डूब जाती है
जैसे जमनामें अक्से-ताज महल ०
दिलमें यूँ उनकी याद आती है

सुबहे-नौकी[3] किरन उफ़क़के[4] क़रीब
सुर्ख़ घूँघटमें मुसकराती है
जब नया आशियाँ बनाती हूँ
दिलमें बिजली-सी कौंद जाती है

तेरी ख़ातिर जो मर मिटे ऐ दोस्त! ०
क्या तुझे उनकी याद आती है
साज़े-दिल सुनके 'साहिरा' अक्सर
आर्ज़ूओंको नींद आती है

---

१. मायाविनी, जादूगरनी, २. किनारे पै, ३. सूर्य्यकी, ४. ऊषाके।

मुझको दिलसोज़ नज़ारोंका[1] ख़्याल आता है
उजड़े गुलशनकी बहारोंका ख्याल आता है

बज़्मे - इशरतमें[2] बहारोंसे खेलनेवाले
क्या तुझे ग़मके भी मारोंका ख़्याल आता है

जब कोई गीत मचलता है मेरे होंठोंपर
दिलके टूटे हुए तारोंका ख्याल आता है

डूब जाते हैं वही ज़ोरे - तलातुममें[3] नदीम[4] !
जिनको तूफाँ में कनारोंका ख़्याल आता है

उनको ऐ 'साहिरा' मिलती नहीं मंज़िल अपनी
जिनको तूफाँ में सहारोंका ख्याल आता है



१. दग्ध - हृदयके दृश्योंका, २. सुख-वैभवकी गोदमे खेलनेवाले, ३. तूफानोंके वेगमे, ४ मित्र ।

'सुरूर'[1]—सुश्री बेगम सुरूर

हमने तेरे नज़रके इशारे जो पा लिये
जितने भी ग़म मिले वह ख़ुशीसे उठा लिये
अब तो ख़ुशीके नामसे डरने लगा है दिल
रोये हैं मुद्दतों जो, ज़रा मुसकरा लिये
यूँ-ही ज़रा ख़मोश जो रहने लगे हैं हम
लोगोंने कैसे - कैसे फ़साने बना लिये
कहला रहे हैं करके वफ़ा बे-वफ़ा हमीं
अच्छा हुआ यह ग़म भी हमींने उठा लिये
हम भी यह चाहते हैं जियें और ख़ुश रहें
यह आरज़ू हमारे भी दिलसे निकालिये
मैं हूँ तेरे करमसे[2] जो महरूम[3] हूँ अभी
लोगोंने अपने-अपने मुक़द्दर बना लिये
अपनी तो आरज़ू कोई पूरी न हो सकी
सारे जहाँमें फिरते रहे मुद्दआ लिये
शाने-करम पै हर्फ़ न आ जाये ऐ ख़ुदा
हमने अगर दुआके लिए हाथ उठा लिये
सौ मुँह हज़ार बाते हैं, दुनियामें ऐ 'सुरूर'!
अल्लाह आप अपनी निगाहें सँभालिये



---

१. हर्ष, हलका नशा, २. कृपासे, ३. वंचित।

'सोज़'¹—सुश्री नसीम : 'सोज़'

जहाने-आर्ज़ू

आँसुओंको खुश्क करके मुसकराये थे मगर
हाले - दिल अपनी निगाहोंसे नुमायाँ² हो गया
नग़्मःज़न³ है फिर मेरे रंगीं तसव्वुरमें⁴ कोई
फिर रबाबे - ज़िन्दगीका⁵ तार लरज़ाँ हो गया
क्या तुम्हें भी अहदे-रफ़्ता⁶ याद आता है कभी ?
या तुम्हारे वास्ते ख्वाबे - परेशाँ हो गया ?
फिर नवेदे - जाँ फ़ज़ाँ⁷ देने लगी बादे-सबा⁸
फिर जहाने - आर्ज़ू जन्नत - बदामा हो गया

चाँदनी

चाँदनी रातमें मेरे हमदम !
कोई मल्लाह गीत गाता है
बाँसुरीकी लतीफ़ तानोंमें
अपना क़िस्सा कोई सुनाता है
चाँदनीकी हसीन रातोंमें
दूर जो सैरको मै जाती हूँ
सारी दुनियाके ज़र्रे - ज़र्रेपर
मुसकराहट ख़ुशीकी पाती हूँ

---

१. जलन, तपिश, २ प्रकट, जाहिर, ३. गा रहा है, ४ ध्यानमे,
५. जीवन-वीणाकी, ६ बीता जमाना, ७ प्राण-संचारक सन्देश, ८. वायु ।

डर है, मुझको मेरी निगाहोंसे
क़िस्सए-दिल बयाँ न हो जाये
फिर तमन्ना है उनसे मिलनेकी
फिर तमन्ना रायगाँ[1] न हो जाये
फिर जफ़ा-कैशसे[2] शिकायत है
फिर मुख़ालिफ़[3] जहाँ न हो जाये
दामने-सब्र छूटा जाता है
दिल कहीं नौहाख्वाँ[4] न हो जाये

साजनसे

कोयलिया जब बनमें गाये
भूली बिसरी याद दिलाये
आँखोंमें आँसू भर आये
धीरे-धीरे लब पै आये
हाये मनवा हाये!

प्रीतिका नाता जोड़के साजन
मन-मूरखको तोड़के साजन
मुझको रोता छोड़के साजन
किस नगरीको जाये!
हाये मनवा हाये!

---

१. व्यर्थ, २ अत्याचार स्वभावीसे, ३. विरुद्ध, ४. शोकाकुल।

जैसे कोई पंछी आके
फूलको अपना मीत बनाके
फिर उड़ जाये गीत सुनाके
ऐसे तुम भी आये
हाये मनवा हाये !

दुखिया मन कैसे बहलाऊँ !
नयनोंसे मै नीर बहाऊँ
सपनोंमें तुमको पा जाऊँ
फिर नैना खुल जाये
हाये मनवा हाये !

आओ

तुम बिन मोरी दुनिया सूनी
मन है सूना नैन है सूनी
आओ मन-मन्दिरमें आओ
आओ और नज़रोंमें समाओ
यह ऊदी-ऊदी बरखायें
महकी-सी यह प्यारी फ़ज़ायें
आओ मन-मन्दिरमें आओ
दर्शनको न अब तरसाओ

बादल जब कि हवा पै झूले
दिल भी धड़के हौले-हौले
आओ मन-मन्दिरमें आओ
व्याकुल जीको चैन दिलाओ
भूल रही हूँ अपना राग
बुझ रही है आशाकी आग
आओ मन-मन्दिरमें आओ
नैनोंका सपना बन जाओ

आती हैं मौजें मुँह खोले
प्रीतकी नैया डग-मग डोले
आओ मन-मन्दिरमें आओ
नैया अपनी पार लगाओ

'हज़ीं'—सुश्री आमिना नफ़ासत 'हज़ीं'

हालते-दिल अयाँ[1] हो गई
ख़ामुशी तरजुमाँ[2] हो गई
हालते-ज़िन्दगीका बयाँ[3]
दुख-भरी दास्ताँ हो गई
कोशिशे - इल्तफ़ातो - करम[4]
कोशिशे-रायगाँ[5] हो गई
दास्ताने - ग़मे - आर्ज़ू[6]
जब बढी बेकराँ[7] हो गई
खुल गया ज़िन्दगीका भरम
हर नफ़स[8] इम्तहाँ हो गई
आजके दौरमें आबरू
आशिक़ोंका जहाँ हो गई
तुमने हँसकर जो देखा मुझे
ज़िन्दगी नग़मा-ख़्वाँ[9] हो गई
रखके नामे-वफ़ा दुश्मनी
आदते-दोस्ताँ हो गई
तुमको उसका बहुत पास था
लो 'हज़ीं'[10] शादमाँ हो गई

---

१ प्रकट, जाहिर, २ मौन रहनेसे ही सब भाँप गये, ३. कथन, ४. कृपाओंकी कोशिश, ५ व्यर्थ, ६ इच्छाओंके गमकी कहानी, ७. असीम, ८ श्वास, साँस, ९ गायक, १०. पीड़ित, दुःखी ।

'हबीब'—सुश्री सफीयः हबीब

सितम इक जहाँके सहे जा रहे हैं
हमारा ही दिल है जिये जा रहे हैं
किया ग़र्क़[1] लाकर हमें बहरे-ग़ममें[2]
दुआ नाखुदाको[3] दिये जा रहे हैं
अजब कश-म-कशमें है यह ज़िन्दगानी
मरे जा रहे है, जिये जा रहे हैं
नहीं है जहाँमें कोई जब कि अपना
तो किसके लिए हम जिये जा रहे हैं
नहीं सख़्त जाँ कोई हम-सा 'हबीब'[4] अब
कि मर-मरके हर दम जिये जा रहे हैं



---

१. डुबाया, २. दुःख-समुद्रमे, ३. मल्लाहको, ४. प्रियतमा, प्यारा।

'हया'—सुश्री कनीज़ फ़ात्मा हया लखनवी

ऐसेमे

सहरके[1] झुटपुटेमें जब परिन्दे चहचहाते है
मनाज़िर[2] सुबहके जिसदम रसीले राग गाते है
बहारोंके जिलौमें[3] दिलरुबा नग़मे[4] लुटाते है
हसीं ग़ुंचे[5] चमनमें सुबह दम जब मुसकराते है
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख्ता क्यों याद आते हो ?
शफ़क़[6] जब झाँकती है दामनोंसे कोहसारोंके[7]
फ़ज़ामें[8] थरथराते हैं तराने आबशारोंके[9]
हवामें तैरने लगते है नक्शे जूए - बारोंके[10]
बयाबाँ[11] जब बदल लेते है चोले सब्ज़ाज़ारोंके[12]
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख्ता क्यों याद आते हो ?
परी क़ौसे-क़ुज़ाकी[13] आस्माँपर जब सँवरती है
अदाए-दिलबरीसे रंगके साँचोंमें ढलती है
सबाके मुश्कबू[14] झोंकोंसे निकहत[15] टूट पड़ती है
बहार आकर चमनकी जब गुलोंसे माँग भरती है
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख्ता क्यों याद आते हो ?

---

१. सुबहके, २ दृश्य, ३. नेतृत्वमे, बागडोरमे, ४ चित्ताकर्षक संगीत, ५ सुन्दर फूल, ६ उषा, ७ पर्वतोसे, ८. वातावरणमे, दृश्यावलिमे, ९ झरनोके, १०. पानीकी बूँदोके, ११ रेगिस्तान, १२ जंगलोके, वनोके, १३ इन्द्र-धनुषकी, १४. सुगन्धित, १५ सुवास ।

कनारे-आब[1]का नज़्ज़ारा जब मदहोश होता है
दरख़्शाँ[2] रेतका मैदान जब ज़रपोश[3] होता है
कँवल आबे-रवाँकी ज़ीनते-आग़ोश[4] होता है
हसीं लहरोंके दिलमें जज़्बए-पुरजोश[5] होता है
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख़्ता क्यों याद आते हो ?
ख़ुनक रातोंकी भीनी-भीनी जब महकार होती है
सितारोंकी नज़र जब वाक़िफ़े - इसरार[6] होती है
किसी शाइरकी चश्मे-रूह[7] जब बेदार[8] होती है
मेरे पिन्दारके[9] तारोंमें जब झंकार होती है
तुम ऐसेमें मुझे बेसाख़्ता क्यों याद आते हो ?

शमीम ताज़ा

यह मस्त फ़ज़ाएँ किसने अनोखी ख़ुशबूसे महकाई है ?
यह कैसी बहिश्तें उल्फ़तकी हर नख़्लो-शजर[10] पर छाई हैं ?
क्यों आज बहारोंकी परियाँ पैग़ामे-मसर्रत[11] लाई हैं
फिर आज तुम्हें शायद छू कर यह मस्त हवाएँ आई हैं

---

१. नदी किनारेका, २. चमकीला, ३. चाँदी-जैसा चमकता है, ४. लहरोंकी गोदकी शोभा, ५. भावनाओंका प्रबल वेग, ६. भेदोंसे परिचित, ७ हृदयकी आँखे, ८. जागृत, ९ गर्वके, १०. पेड़ोपर, ११. आनन्द-समाचार।

दुनिया पे है तारी[1] रंग नया, आलमने[2] भी बदले हैं चोले
यह किसने अदाए-ख़ासमे फिर रुख़सारे-महो-अंजुम[3] खोले
और एक हसीन अँगड़ाईकी हर जुम्बिशमें शोले शोले
फिर आज तुम्हें शायद छूकर यह मस्त हवाएँ आई हैं

कुछ दर्द-सा है दिल वालोंमें, कुछ सोज़[4] भी है अफ़सानोंमें
एहसासे-ग़मे-महरूमी[5] ले बेदार[6] हुआ दीवानोंमें
इक लग़ज़िशे-पैहम[7] होने लगी फ़ितरतके हसीं ऐवानोंमें[8]
फिर आज तुम्हें शायद छूकर यह मस्त हवाएँ आई हैं

हर ज़र्रए-आलम[9] रक़्साँ है, मुश्शातिए-फ़ितरत[10] जोशमें है
इक होशकी दुनिया मुज़तर-सी[11] हस्तीके दिले-बदहोशमें है
थी जिसकी तमन्ना मुद्दतसे जैसे कि वही आग़ोशमें[12] है
फिर आज तुम्हें शायद छूकर यह मस्त हवाएँ आई हैं

है चाक गरेबाँ[13] ग़ुंच-ओ-गुल[14] खन्दाँ है गुलिस्ताँ[15] एक तरफ़
आकाश तले है शैखो-बरहमन ख़ुल्दे-बदामा[16] एक तरफ़
और आलमे-सरशारीमें ‘हया’ है आज ग़ज़ल ख़्वाँ एक तरफ़
फिर आज तुम्हें शायद छूकर यह मस्त हवाएँ आई हैं

---

१. छाया हुआ, २. दुनियाने, ३. चन्द्र और नक्षत्रके मुख, ४. उत्ताप, ५. दुःखसे वंचित होनेका आभास, ६, जागृत, ७ लगातार भूल, कंपन, ८. प्रकृतिके सुन्दर महलोंमे, ९ विश्वका प्रत्येक अणु नृत्यमे लीन, १० प्रकृतिका कङ्घा, ११ बेचैन-सी, १२. गोदमे, १३. गला फाडे हुए, १४ कली और फूल, १५ उद्यान, १६ जन्नत।

हम-तुम

है अब भी इत्तिसाले-दिल[1] अगर्चे दूर हैं हम-तुम
यह है इक राज़[2] इस दूरी पै भी मसरूर[3] हैं हम-तुम
यह माना तल्खिए-इंकारसे[4] रंजूर[5] है हम-तुम
मगर शिकवा[6] नहीं गोया लबे-मजबूर[7] हैं हम-तुम
बज़ाहिर नौ जवानीकी शबे-महजूर[8] हैं हम-तुम
हक़ीक़तमें इन्हीं राज़ोंका[9] जर्रीं नूर[10] हैं हम-तुम

चलें अब वादिए-ग़ुरबतमें[11] इक दुनिया बसायें हम
ग़रूरो-कब्रो-नखवतके[12] जहाँ टुकड़े उड़ायें हम
जहाँ फ़िक्रो-हवादसके फ़साने[13] भूल जायें हम
जहाँ तख़्लीक़के[14] रंगीन गुल बूटे खिलायें हम
हों उन अंजुम फ़िशाँ[15] नौरस शगूफ़ोंके मकीं[16] हम-तुम
नज़र आयें जहाँसे आस्मानोंके नगीं हम-तुम

ज़माने भरमें इख़लासो-वफ़ाकी[17] खू[18] नहीं मिलती
कि इंसानोंमें कुछ इंसानियतकी बू नहीं मिलती

---

१. एकत्र, २ भेद, ३ प्रसन्न, ४. अस्वीकृतिकी कटुतासे, ५. रजीदा, ६. शिकायत, ७. ओठ सीये हुए, ८. विरहकी रात, ९. भेदोका, १०. चमकीला प्रकाश, ११. परदेशमे, १२. ईर्ष्या-द्वेष, घृणाके, १३. मुसीबतोकी चिन्ताओके किस्से, १४. निर्माणके, १५. नक्षत्र-मण्डलके, १६. उद्यान-निवासी, १७. सद्व्यवहार एव स्नेहकी, १८. स्वभाव, आदत।

जहाने-इश्क़में तबए-हक़ीक़त[1] जो नहीं मिलती
निगाहोंको कोई सूरत सदाक़त-रौ[2] नहीं मिलती
मुहब्बतका लिबासे-नौ[3] करें अब ज़ेबे-जाँ[4] हम-तुम
बनें आओ उखव्वतका[5] पयामे-जाविदाँ[6] हम-तुम

यह किस अन्दाज़से फिर तल्खे-बेदारीकी[7] शाम आई
बुझी जाती है मेरी शमअ सोज़े-दर्दे-तनहाई[8]
न छुप जाये कहीं हेजानमें[9] अश्कोंकी[10] सच्चाई
सवादे-शबमें[11] खो जायें तखैय्युलकी[12] न बीनाई[13]
तुम आओ तो क़मरसे[14] छीन लें ताबिन्दगी[15] हम-तुम
फ़लकसे[16] लूट लें रूहानियतकी[17] ज़िन्दगी हम-तुम

बहारोंकी हसीं परियाँ हमें कबसे बुलाती है
हमारे खैर-मक़दमके[18] लिए आँखें बिछाती हैं
तसव्वुरसे[19] हमारे उनकी नजरें मुसकराती हैं
हमें तारोंके रोज़नसे[20] हर-इक दिन झाँक जाती है
चलें उस नूरकी[21] बस्तीमें बस जायें 'हया' हम-तुम
रहें तारीक[22] दुनियाकी नजरसे मावरा[23] हम-तुम

---

१ सच्ची तबीयतें, २ सत्यनिष्ठ, ३. नवीन परिधान, ४. सुशोभित, ५ संगठनका, एकताका, ६ अमर सन्देश ७ जागरणकी कटुताकी सन्ध्या, ८ एकान्तकी व्यथाका उत्ताप, ९. बेचैनीमे, आवेशमे, १० आँसुओंकी, ११ दुःखोंकी कालिमामे, १२. विचारोकी, १३. दृष्टि, १४ चाँदसे, १५ चमक, प्रकाश, १६ आकाशसे, १७ आत्माओंकी, १८ स्वागतके, १९ ध्यानसे, २० छिद्रोंमे, २१ प्रकाशकी, २२. अँधेरी, २३ परे।

इशारात

फूलोंकी तरफ़, उनकी क़तारोंकी तरफ़ देख
महके हुए सरशार नज़ारोंकी तरफ़ देख

है कश-म-कश इश्क़की हर गाम पै दावत
बहकी हुई बदमस्त बहारोंकी तरफ़ देख

कुन्दनकी तरह निखरी हुई चाँदनी रातें
बिखरे हुए मदहोश सितारोंकी तरफ़ देख

यह सहने-चमन कर-मके-शबताबकी[1] परवाज़[2]
उड़ते हुए बेचैन शरारोंकी[3] तरफ़ देख

गुज़री हुई उल्फ़तकी जो कुछ याद दिलायें
बहते हुए दरियाके किनारोंकी तरफ़ देख

बसती है यहाँ एक ख़यालातकी दुनिया
चश्मोंके लहकते हुए धारोंकी तरफ़ देख

यह गरदिशे-गरदूँका[4] धड़कता हुआ सीना
कुछ मादरे-गेतीके फ़िशारोंकी[5] तरफ़ देख

कुछ खाकके रौंदे हुए ज़र्रों पै नज़र कर
आलमके भी रंगीन मिनारोंकी तरफ़ देख

---

१. जुगनूँकी, २. उडान, ३. चिन्गारियोकी, ४. चक्कर खाते हुए आकाशका, ५. मातृभूमिके गड्ढोकी तरफ (जख्मोसे अभिप्राय है)।

दुनिया यह अगर्चे तरब - अंगेज़[1] है लेकिन
भूलेसे कभी दर्दके मारोंकी तरफ़ देख

कहता था 'हया' सुबहका टूटा हुआ तारा
"कुछ तू भी मशैयतके[2] इशारोंकी तरफ़ देख"

इक़रारे-मुहब्बत

–६ बन्दमेंसे २–

जीमें हसरत है सुनायें उन्हें अफ़सानए - ग़म
कभी मौक़ा मिले सब कुछ कहें उनकी ही क़सम
लेकिन आते नहीं सुनते नहीं रूदादे - अलम[3]
कितने मजबूर है बतलायें यह है कैसा सितम
इस पै तुर्रा है कि उल्फ़तका भी इक़रार करो
हमको पूजो, हमें चाहो, हमें तुम प्यार करो

ऐसे बेरहम है, इंसाफ़का भी पास नही
महरकी[4] ज़र्रा बराबर भी तो बू - बास नही
ऐसी बेमहरीपै[5] भी दिलके मेरे पास नहीं
अब भी आ जायें कि जीनेकी कोई आस नही
और खुद आके कहें इश्क़का इज़हार करो
हमको पूजो, हमें चाहो, हमें तुम प्यार करो

१. आनन्दवर्द्धक, २. दुनियाके, ३ व्यथा-कहानी, ४ दया, कृपाकी, ५ स्थितिमे ।

शिकायत

–१२ मेंसे ६–

तुम्हींने की थी मुहब्बतकी इब्तदा[1] कि नहीं ?
तुम्हींने दर्से - ग़मे - दिल[2] हमें दिया कि नहीं ?

हमारा तिफ़्ले - दिल[3] आगाह[4] था न हसरतसे[5]
लुभा - लुभाके निगाहोंसे जुल[6] दिया कि नहीं ?

यह बेनियाज़ियाँ[7] अब किसलिए बताओ तो
फ़सानए - ग़मे - उल्फ़त मेरा सुना कि नहीं ?

तमाम लुत्फ़े - मुहब्बतकी यादगारोंको
बस इक ज़रा-सी 'नहीं'में मिटा दिया कि नहीं ?

निगाह मिलते ही रूहोंका एक हो जाना
वह वक़्त आह तुम्हें महव[8] हो गया कि नहीं ?

कहा था अहदे - मुहब्बत कभी न भूलेंगे
मगर यह अहदे-मुहब्बत भुला दिया कि नहीं ?

---

१. शुरूआत, २. हृदय-वेदनाका पाठ, ३. किशोर हृदय, ४. परिचित, ५. प्रेम-व्यवहारसे, ६. चकमा, धोका, ७. उपेक्षाएँ, ८. स्मरण ।

इल्तिजा

–५ मेंसे ३–

अभी आओ कि नये सिरसे मुहव्बत कर लें
दिलके वीरानेको मामूरे - मसर्रत[1] कर लें
गर्दिशे - चर्खको[2] फिर खूगरे-बहजत[3] कर लें
उम्रे - नाशादको[4] सरमायए - इशरत[5] कर लें
वक़्त बाक़ी है अभी आओ कि उल्फ़त कर लें
अभी आओ कि नये सिरसे मुहव्बत कर लें

आओ देखो कि सरापा ग़मे - पिन्हाँ[6] हूँ मैं
शमअ़की तरहसे इक शोलए - सोज़ाँ[7] हूँ मैं
दिल शिकिस्ता[8] हूँ; सितमकश हूँ, परेशाँ हूँ मैं
दर्द शाहिद[9] है कि मिन्नत-कशे-दरमाँ[10] हूँ मैं
तुम जो आ जाओ तो सब दूर शिकायत कर लें
अभी आओ कि नये सिरसे मुहव्बत कर लें

मुझसे गर तुमको गिला है तो सुनाओ मुझको
गर ख़ता मुझसे हुई हो तो बताओ मुझको
हो खफा मुझसे तो पास आके जताओ मुझको
ग़मे - दूरीसे मगर अब न जलाओ मुझको
नालए - दर्दको[11] आहंगे - मसर्रत[12] कर लें
अभी आओ कि नये सिरसे मुहव्बत कर लें

---

१ आनन्दसे जगमग, २ आकाशका, ३. आनन्दका अभ्यस्त, ४ दुखिया आयुको, ५ आनन्दोल्लाससे परिपूर्ण, ६. छिपे हुए दुखोंका भण्डार, ७ सन्तप्त, ८. भग्न हृदय, ९. गवाह, १०. चिकित्साकी अधिकारिणी, ११. व्यथाकी श्वासोंको, १२. आनन्दपूर्ण ।

'हूर'—सुश्री गौहर इक़बाल 'हूर' मेरठी

आर्ज़ूए-मौहूम

मैं सोचती रहती हूँ
यह मेरी तमन्ना है
ऐ काश कभी ऐसा
इक दौरे-अमल आये
इक फूल मैं बन जाऊँ
फूलोंकी लताफ़तमें
शाख़ोंकी नज़ाकतमें
मैं नुज़हतें फैलाऊँ
फिर फूलोंके खिरमनपर
और सब्ज़ःके दामनपर
कुछ निगहतें बरसाऊँ
ऐसा जो हो तो शायद
मुमकिन है कभी शायद
राहत मैं यहाँ पाऊँ
हासिल हो सकूँ दिलको!
और कैफ़े-बक़ा मुझको
लेकिन यह नहीं मुमकिन
देखो जो हक़ीक़तमें
राहत नहीं दुनियामें
फ़ानी है यहाँ हर शै

मैं सोचती रहती हूँ
यह मेरी तमन्ना है
ऐ काश कभी ऐसा
इक दौरे - अमल आये
इस बज़्मे - परेशाँसे
ज़ुल्मतगहे - हस्तीसे
इस गंजे - लताफ़तसे
उड़कर मैं पहुँच जाऊँ
महताब मै बन जाऊँ
हर शामको रौशन हूँ
हर सुबहको छुप जाऊँ
फिर बज़्मे-फ़लकपर सब
तारें करें झिलमिल जब
हँसकर मैं निकल आऊँ
उस दश्ते - मुसीबतपर
गहवारए - ज़ुल्मतपर
वह नूर मै बरसाऊँ
कि फिर मेरी ही किरनोंसे
हर जर्रः चमक उट्ठे
हर क़तरेको चमकाऊँ
ऐसा जो हो तो शायद
मुमकिन है कभी शायद
राहत मै यहाँ पाऊँ

सिंहावलोकन

[बहू-बेटियोंकी शाइरी]



इश्क़

प्रेम रहित जीवन शुष्क

उभय पक्षका प्रेम

एकाङ्गी प्रेम

आशिक़-माशूक़

हिन्दी-उर्दू-दृष्टिकोण

महिलाओंकी शाइरी



इश्क़

इश्क किया नही जाता, हो जाता है। इश्ककी आग दावानलकी[1] तरह लग तो अनायास जाती है, लेकिन फिर उसकी भाँति बुझकर नहीं देती—

इश्क़पर ज़ोर नहीं, है यह वोह आतिश[2] 'ग़ालिब' !
कि लगाये न लगे और बुझाये न बुझे ।।

आतिशे-इश्क (प्रेम-ज्वाला) रूईकी आगकी मानिन्द बेमालूम और धीमे-धीमे सुलगती रहती है। शुरू-शुरूमे तो इसकी सेक शीत-ऋतुमे तापने-जैसी सुखद मालूम होती है—

शायद इसीका नाम मुहब्बत है 'शेफ़्तः' !
इक आग-सी है सीने के अन्दर लगी हुई ।।

फिर यही आग-सी मुहब्बत शनैः-शनैः आशिक (प्रेमी) को चाट जाती है। ब-कौले-मीर—

इश्क़ आदममें नहीं कुछ छोड़ता ।
हौले-हौले कोई खा जाता है जी ।।

इश्ककी चपेटमे एक बार आने पर फिर उससे छुटकारा सम्भव नही—

हमने अपनी-सी की बहुत लेकिन—
मर्ज़े - इश्क़का इलाज नही ।।

---

१. वनमें वृक्षोकी रगड़से आप-से-आप लगनेवाली आग,

२. अग्नि,

इस मर्ज-इश्क या प्रेम-ज्वालाको लगानेमे नयन-अग्नि-बाण कमालका कौशल रखते[1] है—

नावक-सर[2] से लाइकै, तिलकु तरुनि इत ताँकि।
पावक-झर सी झमकि कै, गई झरोखा झाँकि ॥५७०॥

---

१ उदाहरण-स्वरूप हिन्दीके प्रसिद्ध कवि बिहारीके दोहे दिये जा रहे हैं। इनके सब दोहे 'बिहारी-रत्नाकर' ग्रन्थसे उल्लिखित किये गये हैं और उनपर ग्रन्थकी अंक-संख्या डाल दी गई है। जो दोहे कबीर, मतिराम, रहीम आदिके दिये गये है, उनपर अंक-संख्या न देकर यथास्थान कविका नाम दिया गया है। जिनपर अंक-संख्या है, वे सब दोहे बिहारी रत्नाकरके है।

२. 'नावक-सर' का प्रयोग एक ऐसे बाणके अर्थमें किया जाता है, जो नलिका-द्वारा चलाया जाता है। यह नलिका लोहेकी होती है। इसमे बारूद तथा छोटे-छोटे बाण भर दिये जाते है। इस नलिकामें एक स्थानपर छिद्र होता है। उसमें अग्निका संचार करनेपर बारूदके प्रभावसे उसमे-के बाण निकलकर बन्दूककी गोलीके समान बहुत दूरतक चोट करते है। इन बाणोको चलाते समय लक्ष्यका अनुसंधान, अर्थात् उसकी ऊँचाई-नीचाई तथा दिशाका निश्चय करना पड़ता है। इसलिए 'ताँकि' (तर्क करके-निश्चय करके) का प्रयोग किया है। जब इस नलिकामे आग दी जाती है, तो बारूदके उड़नेसे प्रकाश-सा होता है। इसीलिए कविने 'पावक-झर सी झमकि कै' कहा है। यहाँ झरोखेको कविने 'नलिका', नायिकाके रूपके प्रकाशको अग्नि-संचारकी चमक, एवं नायकपर दृष्टिकी चोटको नावक-सर लगना माना है। 'तिलकु' (क्षण-मात्र) से कवि यह व्यंजित करता है कि नायिका नावक चलानेमें ऐसी दक्ष है कि उसको लक्ष्यका अनुसन्धान करनेमे विलम्ब नही लगा और देखते ही अचूक बाण मार दिया।

इन नैन-बाणोंकी मार सहन करना हँसी-खेल नही, बडे-बडे चतुर खिलाड़ी चौकड़ी भूल जाते है। अच्छे-अच्छे सूरमा सुध-बुध बिसार बैठते है––

कहा लड़ैते दृग करे, परे लाल बेहाल।
कहुँ मुरली, कहुँ पीत पटु, कहूँ मुकुट, बनमाल[1] ॥१५४॥

इस अचूक एव कौशलपूर्ण तीरन्दाजीका करिश्मा देखकर एक हमजोली आश्चर्यचकित होकर पूछती है––

तिय कित कमनैती पढी, बिनु जिहि भौंह-कमान।
चलचित-बेझैं चुकति नहिं बंक-बिलोकनि-बान[2] ॥३५६॥

अर्थ––नायक कहता है––"तरुणी झरोखेमें से झाँककर, क्षणमात्र मेरी ओर अनुसन्धान करके, अग्निकी ज्वाल-सी झमककर बाण मारकर हट गई।"

१. सखी राधासे कहती है––"तेरे इन लाड़ले नैनोंने कृष्णको इस बुरी तरह घायल किया है कि बेसुध पड़े हुए है। उनकी मुरली कहीं पड़ी हुई है, पीत-पट कहीं फिका हुआ है, मुकुट कही लुढ़का पड़ा है और माला कहीं गिरी हुई है।"

२. "तूने यह विलक्षण धनुर्विद्या कहाँ सीखी ? बिन डोरीके भौह रूपी कमानपर तिर्च्छी चितवनके बाणसे चलायमान चित्तको बेधनेमें तू चूकती नहीं।" बिन डोरीकी कमानसे तीर नही फेका जा सकता, तिर्च्छा बाण कभी लक्ष्यको भेद नहीं सकता। चंचल (हिलते-डुलते) पर भी कभी निशाना नहीं बैठता। लेकिन सुन्दरीका कौशल सराहिए कि वह ये सब असम्भव बाते सम्भव करके दिखला रही है।

खेलन सिखए, अलि, भलैं चतुर अहेरी मार।
कानन-चारी नैन-मृग नागर नरनु सिकार[1] ॥४५॥

ये नैन-बाण अन्य सब बाणोसे विषम होते है। ये लगते तो आँखोमे है, किन्तु घाव हृदयमे करके समस्त अंगोको व्याकुल कर देते है—

दृगनु लगत, बेधत हियहिं, बिकल करत अँगआन।
ए तेरे सब तै बिषम, ईछन-तीछन बान ॥३४९॥

ऐसे प्रेमनगरमे कैसे बसा जाय और क्योकर निर्वाह किया जाय? जहाँ न्याय-नीति न हो। यहाँ तो ऐसा अन्धेर है कि अपराध तो लोचन करते है और निरपराध हृदय व्यर्थमे बँध जाते है—

क्यौ बसियै, क्यौं निबहियै, नीति नेह-पुर नाँहिं।
लगालगी लोइन करैं, नाहक मन बँधि जाँहि ॥४०७॥

लेकिन यह सब ऊपरी मनकी बाते है। वास्तवमे होता यह है कि एक बार नैनबाणसे घायल होनेपर कुछ उसकी चुभनमे ऐसा अकथनीय आनन्द मिलता है कि बार-बार तीर खानेको दिल करता है। बकौले-'गालिब'—

कोई मेरे दिलसे पूछे, तेरे तीरे-नीम-कशको।
यह खलिश कहाँसे होती, जो जिगरके पार होता[2] ॥

किसीसे एक बार आँख लगनेपर फिर आँख नही लगती। नीदे उचाट हो जाती है—

---

१ हे सुन्दरी! कामदेव रूपी चतुर अहेरीने तेरे कानन-चारी मृग-नैनोको नागरिक नरोका शिकार करना खूब सिखलाया है। कलतक तो नर ही मृगोका आखेट करते आये थे, किन्तु आज यह मै अभूतपूर्व दृश्य देख रही हूँ कि मृग मनुष्योको घायल कर रहे है।

२. माशूकने तीरे-नजर कुछ इस अन्दाजसे मारा कि वह जिगरके पार न होकर दिलमे चुभकर रह गया। अगर वह पार हो जाता तो चुभनका लुत्फ उम्र भर क्योकर उठाया जाता?

जब-जब वै सुधि कीजियै,तब-तब सब सुधि जाँहि।
आँखिनु आँख लगी रहैं, आँखैं लागति नाँहि[1] ॥६२॥
लाल, तुम्हारे रूपकी, कहौ, रीति यह कौन।
जासौं लागत पलकु दृग लागत पलक पलौ न[2] ॥३९८॥

नैना लडनेपर थकते नही, पुनः पुनः लड़ते रहते है। कोई लडनेसे बरजना भी चाहे तो यह अपनी लड़नेकी आदत नही छोड़ पाते—

नैना नैक न मानहीं, कितौ कह्यौ समुझाइ।
तनु मनु हारैं हूँ हँसैं, तिन सौं कहा बसाइ[3] ॥१६०॥
लाज-लगाम न मानही नैना मो बस नाहिं।
ए मुँहजोर तुरंग ज्यौं ऐंचत हूँ चलि जाहिं[4] ॥६१०॥

---

१. जब भी प्रियतमकी सुध आजाती है, प्रियाकी सब सुध-बुध चली जाती है। उसकी प्रतीक्षामें आँखे द्वारकी ओर तो लगी रहती है, परन्तु क्षण भरको आँखोंसे आंख नही लगती, नींद नहीं आती।

२. प्रियतम ! कहो तो सही तुम्हारे रूपकी यह क्या रीति है, कि जिसके दृग पलक भरको उसपर लगते है, फिर उसके दृग पलभर भी नहीं लगते।

३. मैं क्या करूँ ? अपने नयनोंको कितना ही समझाया, किन्तु मानकर ही नहीं देते। भला जो ज्वारी तन-मन हारनेपर भी हँसते रहें, उनपर मेरा क्या वश चल सकता है ? ज्वारी कब किसीकी सीख मानते है, वे तो हारनेपर और भी बढ़कर खेलते हैं।

४. नयन मेरे वशमें नहीं है। ये मुँहजोर (लगामको खींचनेपर भी न रुकने वाले) घोड़ेकी तरह लज्जारूपी लगामको नहीं मानते और खींचते हुए भी प्रेमीकी ओर चले ही जाते है।

बहके सब जिय की कहत, ठौरु कुठौरु लखै न।
छिन औरै, छिन और से, ए छबि-छाके नैन[1] ॥९॥

नैनोकी यह बहक, आँख-मिचौनी उजागर हुए बिना नही रहती। कबीरने सच ही कहा है—

प्रेम छिपायो ना छिपै, जा घट परघट होय।
जो पै मुख बोले नहीं, नैन देत हैं रोय॥

प्रेम छिपायेसे छिपता नही, रोकनेसे रुकता नही। प्रकट होनेपर कुछ लोग हँसते है, कुछ बरजते है। मगर बकौले–'असर' लखनवी—

इश्क़से लोग मनअ़ करते है।
जैसे कुछ इख़्तियार है अपना॥



---

१. ये नैना प्रियतमकी छवि रूपी मदिरा पीकर ऐसे बावले और मतवाले हो रहे हैं कि मनकी गोपनीय बाते यत्र-तत्र ठौर-कुठौर, मौक़े-बे-मौके कह देते है।

प्रेम-रहित जीवन शुष्क

इश्क करना या प्रेमी होना कोई अपराध नही, यह तो स्त्री-पुरुषका स्वाभाविक कर्म है। उनकी जीवन संबंधी आवश्यकताओका मुख्य अंग है। प्रेमके विना जीवन नीरस और शुष्क है। कबीरने सच ही कहा है—

जा घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहारकी साँस लेत बिन प्रान॥

प्रेमकी आगमे तपकर ही मनुष्य खरा होता है। बकौले-'असर' लखनवी—

इन्सानको बे-इश्क़ सलीक़ा नहीं आता।
जीना तो बड़ी चीज़ है मरना नहीं आता॥

और जब मनुष्य प्रेममें आठो पहर भीगा रहता है, तब यही धराधाम उसके लिए स्वर्ग बन जाता है। बकौले—राधेनाथ कौल—

इश्क़ जन्नत है आदमीके लिए।
इश्क़ नेमत है आदमीके लिए॥

प्रेम जितना जीवनके लिए आवश्यक है, उतना ही कठिन और दुरूह है—

'रहिमन' मैन तुरंग चढ़ि चलिबो पावक माँहि।०
प्रेम-पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निबहत नाँहि॥
अन्तर दाँव लगी रहे, धुआँ न प्रगटै सोय।
कै जिय जाने आपुनो, कै जा सिर बीती होय॥
जे सुलगे ते बुझि गये, बुझे ते सुलगे नाहिं।
'रहिमन' दाहे प्रेमके, बुझि-बुझिके सुलगाहिं॥
यह न 'रहीम' सराहिए, लेन-देनकी प्रीत।०
प्रानन बाजी राखिए, हारि होय कै जीत॥

उभय पक्षका प्रेम

प्रेम करनेका वास्तविक आनन्द तब है, जब कि यह आग दोनो ओर बराबर लगी हुई हो। कौन प्रेमी और कौन प्रेयसी है, यह भेद-भाव मिटा-कर दोनो एक दूसरेके प्रेमी हो जाते है। मतिराम के अनुसार--

०कौन बसत है कौनमें, यों कछु कही परै न।
पिय नैननि तिय नैन है, तिय नैननि पिय नैन ॥

इसी भावको बिहारीने यूँ व्यक्त किया है--

०कीनै हूँ कोरिक जतन अब कहि काढ़ै कौनु।
भो मन मोहन-रूपु मिलि पानी मै कौ लौनु[1] ॥१८॥

इकतर्फा प्रेम, प्रेम नही उन्माद है। एकाङ्गी प्रेम एक पहियेके रथके समान है। जो कभी लक्षतक नही पहुँचता। यदि पुरुषकी अपेक्षा नारी-हृदयमे प्रेमका अकुर प्रस्फुटित हो तो, वह पुरुषको भी आकर्षित कर लेगी, एवं उससे मिलनेके अनेक उपाय निकाल लेगी, और यदि वह नही चाहेगी तो पुरुषके सब उपायोको निरर्थक कर देगी। अनेक उपायों एवं राज्य-शक्तिका उपयोग करनेपर भी रावण सीताका, अलाउद्दीन पद्मिनीका और औरगजेब रूपनगरकी राजकुमारीका प्रेम तो दरकिनार, उनकी परछाईका भी स्पर्श-सुख प्राप्त न कर सके। समस्त वैभव और राज्य-बल मुँह ताकते रह गये। इसके विपरीत रुक्मिणीका कृष्णको, संयोगिताका पृथ्वीराजको, रूपनगरकी राजकुमारीका राणा राजसिंहको, प्रेम-निमन्त्रण भेजनेपर न उन्हे इतने दूरवर्त्ती कण्टकाकीर्ण मार्ग रोक सके,

---

१ मनमोहनका लावण्यमय रूप मेरे मनरूपी सरोवरमें मिलकर लवण हो गया है। कोटिक प्रयत्न करनेपर भी उसको उसमें से कौन निकाल सकता है?

न दुर्गम पर्वत और विशाल नदियाँ निरुपाय कर सके और न विपक्षीकी अपार शक्ति ही उन्हे डरा सकी। नारीका प्रेम-निमन्त्रण पुरुषत्वके लिए चुनौती है। यदि वह प्रियतमा बनने योग्य है, तो पुरुष जानपर खेलकर भी उसे प्राप्त करेगा। प्रियतमा चाहे तो मिलनके अनेक उपाय निकाल लेती है--

चितई ललचौहैं चखनु डटि घूँघट-पट माँह।
छल सौं चली छुवाइकै छिनकु छबीली छाँह[1] ॥१२॥
झटकि चढ़ति उतरति अटा, नैक न थाकति देह।
भई रहति नट कौ बटा अटकी नागर-नेह[2] ॥१९४॥

यदि प्रेमी-प्रेयसी दोनों प्रेम-विह्वल है तो मिलनकी ताक-झाँकमे लगे रहते है, और कुछ-न-कुछ साधन जुटा ही लेते है। प्रेमी और प्रेयसीके

---

१. प्रियतम बहुत दिनोंमें विदेशसे आया है। उसकी प्रियतमा गुरु-जनोंकी उपस्थितिके कारण प्रेम-विह्वल होनेपर भी लज्जावश न मुँह खोलकर उसे देख सकती है और न कोई बात कर सकती है। तौ भी वह अपना अनुराग प्रकट किये बिना न रह सकी। पहले तो घूँघटमेंसे प्रियतमको जी भरके निहारती रही। फिर उसके सामनेसे इस कौशलसे निकल गई कि कम-से-कम उसकी छायाका स्पर्श-सुख तो प्रियतमा अनुभव कर सके।

२. अपने प्रेमीको कही खड़ा हुआ देखकर प्रेयसी उसे बार-बार देखनेके लिए झपटकर कभी अटारीपर चढ़ती है, कभी अटारीपरसे उतरती है। उसकी देह थकनेका नाम नहीं लेती। वह अपने प्रेमीके स्नेहरूपी डोरीमें बँधी चकईके समान बनी हुई है। जैसे नट नचाता है, वैसे नाच रही है।

घरोके वीचमे केवल दीवार मात्रका व्यवधान है। तो भी दोनोका मिलन नही हो पाता। किसी दिन छतपर क्षणिक सुयोग मिला तो—

अँगुरिन उचि, भरु भीति दै, उलमि चितै चख लोल।
रुचि सौं दुहूँ दुहूँनुके चूमे चारु कपोल[1] ॥५०५॥
सुख सौं बीती सब निसा, मनु सोए मिलि साथ।
मूका मेलि गहे, सु छिनु हाथ न छोड़े हाथ[2] ॥५७१॥

नारी-सुलभ शील-संकोच एवं कौटुम्बिक मर्यादाओके होते हुए भी शयन-कक्षके अतिरिक्त भी नई-नवेली पत्नी अपने प्रियतमको निहारने, उससे लुका-छिपी दो एक बाते कहने आदिका अवसर खोज लेती है तो कोई आश्चर्यकी बात नही। क्योकि वैवाहिक-सम्वन्धके कारण वे समाजकी दृष्टिमे प्रणयके अधिकारी है, किन्तु प्रेम-ज्वालाकी आगको बुझानेके लिए कुमारी या परकीया भी अपनी बुद्धि, सामर्थ्य, साधनके अनुसार कोई-न-कोई तिकड़म भिडा ही लेती है।

प्रारम्भमे लज्जावश सकुचाती है, कुटुम्बके कोपसे भय खाती है और सामाजिक व्यंग्योसे घवराती है, किन्तु जैसे-जैसे प्रेम-रंग चढता जाता है, तैसे-तैसे शर्मो-हया एवं लोक-लाजके भय फीके पड़ते जाते है।

---

१. पाँवोकी उँगलियो पर उचककर, मुड़ेरपर अपना-अपना भार देकर, आगेकी ओर झुककर तथा चंचल नेत्रोसे चारों ओर देखकर कि कही कोई देखता न हो, दोनोने परस्पर प्यार लिया-दिया।

२. प्रेमी-प्रेयसी पड़ौसी है। उनके घरोके बीच केवल एक दीवार है। दीवारमें एक बड़ा छिद्र भी है। एक रोज अवसर पाकर दोनोंने उस छिद्रमें हाथ डालकर परस्पर हाथ पकड़ लिये। क्षणमात्रको भी न छोड़कर रातभर हाथ पकड़े हुए आनन्द-विभोर हुए खड़े रहे, मानो रात भर परस्पर सो रहे हो।

बाँधी दृग डोरानि सों घेरी बरुनि समाज।
गई तऊ नैनानि तैं निकसि नटी-सी लाज ॥ मतिराम

और शनैः-शनैः वे प्रेम-नगरमें आँख-मिचौनी खेलने लगती है। कभी प्रेमीको पत्र लिखती है—

लाज छुटी, गेहौ छुट्यो, सबसे छुट्यो सनेह।
सखि कहियौ वा निठुर सों रही छूटिबें देह ॥ मतिराम
कागद पर लिखत न बनत कहत सँदेसु लजात।
कहि है सबु तेरौ हियौ मेरे हिय की बात ॥६०॥
तोहीं निरमोही, लग्यौ मो ही इहैं सुभाउ।
अनआएं आवै नहीं, आएं आवतु, आउ[1] ॥३६॥

प्रेम-विह्वल परकीया नारी परदेश गये हुए प्यारेको कभी पत्र लिखकर बुलाती है। कभी सम्मुख पाती है तो एकान्तमे वार्त्तालाप करती है—

सुन्यो माइके तें जबहिं आयो बाभन कंत।
कुशल पूछिबेके मिसिन लीनो बोल इकंत ॥ मतिराम

यहाँ तक कि वह स्वयं कोई-न-कोई बहाना बनाकर प्रेमीको निर्जन स्थानमे ले जाती है। कवि मतिरामने राधाको माध्यम बनाकर देखिए कैसा बहाना खोज निकाला है—

आई है निपट साँझ, गैयाँ गई घर माँझ,
ह्याँसो दौरि आई मेरो कह्यौ कान्ह कीजिए,
हौं तो हौं अकेली और दूसरो न देखियत,
बनकी अँधेरीमें अधिक भय भीजिए।

---

१. हे निर्मोही ! मेरा चित्त तुझपर ऐसा अनुरक्त है कि तेरी अनुपस्थितिमें यह भी मेरे पास नहीं रहता। मालूम होता है वह भी तेरे पास ही रहता है। क्योंकि तेरे आने पर ही मेरा चित्त ठिकाने आता है। अतः जल्दी आ।

कवि 'मतिराम' मनमोहन सौं पुनि-पुनि,
राधिका कहत बात साँचो यै पतीजिए,
कबकी हौं हेरति न हेरें हरि! पावति हौ,
बछरा हिरानौ, सो हिराय नैक दीजिए॥

प्यारेको एकान्तमे बुलाती ही नही, आवश्यकता होनेपर स्वय भी उसके निर्दिष्ट स्थानपर जाती है।

दियै देह दीपति, गयौ, दीप बयारि बुझाइ।
अंचल ओट कियें तऊ चली नवेली जाइ[1]॥
चली अली नवलाहि लै पिय पै साजि सिंगार।
ज्यों मतंग अंडदारको[2] लियें जात गँड़दार[3]॥
जोबन-मद गज मन्द गति चली बाल पिय गेह।
पगनि लाज-आँदू परी, चढ़्यौ महावत नेह[4]॥

---

१. प्रेयसी अपने प्रेमीसे मिलनेके लिए आँचलमें दीपक छिपाये चली है, ताकि अँधेरे मार्गमें जानेमें सुविधा हो, किन्तु वह हवाके झोंकेसे बुझ गया है। फिर भी नवेलीके शरीरकी कान्तिसे प्रकाश बना हुआ है। वह उस मर्मको न जानकर बुझे हुए दीपकको आँचलमें छिपाये जा रही है, मानों वह अब भी जल रहा है।

२. अड़ने वाला हाथी, ३. महावत, हाथीको अंकुश मार-मार कर ले जानेवाला।

४. तरुणीने जब अभिसार किया तो उसकी गति मन्द थी। लज्जाके मारे उसके पाँव आगे न पड़ते थे। लेकिन प्रेम उसे किसी प्रकार चलानेपर विवश कर रहा था। उसकी दशा उस मन्दगति हाथीके समान थी, जिसके पैरोमें जन्जीर पड़ी रहनेसे आगे बढ़ना कठिन हो, किन्तु महावत ठेलकर जिसे आगे बढ़ा रहा हो।

एकाङ्गी प्रेम

यदि स्त्रीका मन आसक्त न हो तो, पुरुष लाख प्रयत्न करनेपर भी उसके मनको नहीं मोह सकता। पर-पुरुष तो किस खेतकी मूली है, इच्छा न होनेपर वह अपने जीवन-सर्वस्व प्राण-पतिको भी उँगली नही छूने देती। किसी-न-किसी ढंगसे वच निकलती है—

केलिकैं राति अघाने नहीं, दिन ही में लला पुनि घात लगाई,
प्यास लगी कोउ पानी दै जाइयौ, भीतर बैठिकैं बात सुनाई।
जेठी पठाई गई दुलही, हँसि हेरि हरे 'मतिराम' बुलाई,
कान्हके बोल मैं कान न दीनो सो गेहकी देहरी पै धरि आई॥

ऐसे उदाहरण आटेमे नमकके समान है, जब कि प्रेम-ज्वालामे केवल स्त्री झुलसती रही हो और उसमे गिरनेको परवानावार पुरुष न आया हो। क्योकि वह अपने पुरुषत्व-वश स्त्री-प्रेमकी अवहेलना नही कर सकता। जब तक कि इस तरहका कोई विशेष व्यवधान न हो—

१—स्त्री प्रेमके योग्य न हो, २ पुरुष पहलेसे किसी अन्यपर आसक्त हो या विवाहित हो, ३ प्रेम या विवाहसे विरक्त हो, ४ लम्पट या दुराचारी हो।

स्त्रीके बजाय यदि प्रेम-फाँस पुरुषके चुभती है, तो उसे सही सलामत निकालनेमे बहुत ही कम भाग्यवान् सफलता पाते है। अधिकाश उसकी खटकसे जीवन-पर्यन्त व्यथित रहते है। इस इकतर्फा मर्दाना इश्कसे आशिक तो जलीलो-ख्वार होते ही है, माशूक भी कम परेशान नही होते। वे ऐसे दिल फेक आशिकोसे बेहद घबराते है—

ग़ालिब— पीनसमें गुज़रते है जो कूचेसे वे मेरे।
कन्धा भी कहारोंको बदलने नहीं देते॥

मोमिन— कूदकर घरमें जो पहुँचा, मैं तेरे, पर क्या करूँ ?
दम निकल जाता था, खटकेसे बराबर रातको ॥

ज़ौक़— मर गये पर भी तग़ाफ़ुल ही रहा आनेमें ।
बेवफ़ा पूछे है—"क्या देर है ले जानेमें" ?

सोज़— जनाज़े वालो ! न चुपके क़दम बढ़ाये चलो ।
उसीका कूचा है, टुक करते हाय-हाय चलो ॥

दाग़— यह मेरे वास्ते ताक़ीद है, दरबानों पर ।
कि "उसे मैं भी बुलाऊँ तो न आने पाये" ॥

असीर— जो लाश भेजी थी क़ासिदकी, भेजते ख़त भी ।
रसीद वह तो मेरे ख़तकी थी, जवाब न था ॥

आशिक़-माशूक़

इश्क[1] करनेवालेको 'आशिक[2]' और जिस व्यक्तिसे इश्क किया जाये उसे 'माशूक[3]' कहते है। कोई स्त्री किसी पुरुषपर आसक्त है तो वह स्त्री आशिक और वह पुरुष उसका माशूक है। इसी प्रकार कोई पुरुष किसी स्त्रीपर अनुरक्त है तो वह पुरुष आशिक और वह स्त्री उसकी माशूक: है। आशिकी-माशूकीमे लैगिक-प्रतिबन्ध नही है। चाहनेवाले स्त्री एवं पुरुष आशिक और चाहे जानेवाले स्त्री एवं पुरुष माशूक कहलाते है।

आशिक गरजमन्द होता है। अपने माशूकका प्यार प्राप्त करनेकी, उससे मिलनेकी, अपना बनानेकी उसे तीव्र लालसा रहती है। अत वह अपने माशूकको रिझानेकी, प्रफुल्ल करनेकी सम्भव-असम्भव युक्तियाँ सोचता है, यत्न करता है। माशूककी मिन्नते करता है, उसके नाज उठाता है, इशारोपर नाचता है, उसके उपेक्षा भावको नजरन्दाज करता है, आवश्यकता पडनेपर लोक-लाज त्यागता है, कुटुम्बका मोह छोड़ता है, विरहमे रोता है, एँड़ियाँ रिगड़ता है, यहाँ तक कि अपना सर्वस्व न्योच्छावर कर देता है, प्राण तक दे देता है।

कुछ ही भाग्यवान् प्रेम-डगरपर चलते हुए अपने चरम लक्षपर पहुँच पाते है। अन्यथा अधिकाश मार्गमे फिसल जाते है या हिम्मत हारकर बैठ जाते है। ऐसे ही असफल आशिकके लिए मीरने चेतावनी दी थी—

वसीयत 'मीर' ने मुझको यही की।
कि सब कुछ होना तू आशिक़ न होना॥

---

१. प्रेम, चाह, मोह, अनुराग, आसक्ति,

२. प्रेमी, आसक्त, अनुरक्त, अनुरागी,

३. प्रेम-पात्र, प्रिय, महबूब, हबीब,

मीरा अपने मोहनको रिझानेके लिए मेवाड़से नंगे पाँव वृन्दावन पहुँची। पार्वतीने शिवको वरण करनेके लिए दुर्द्धर-तपश्चर्य्या की। मान-अपमानकी चिन्ता किये बिना ही दुष्यन्तकी खोजमें शकुन्तला कहाँ-कहाँ न भटकी! अपने ही जर खरीद गुलाम यूसुफकी इक नज़रे-इनायत पानेको जुलेखा दर-दरकी भिखारिन बन गई। मजनूँने लैलीके लिए जीवनभर रेगिस्तानकी ख़ाक छानी। शीरीको अपना बनानेके लिए फरहादने पहाड़ काटते-काटते जान दे दी। सोहनी अपने महिवालके प्रेममें नदीमें डूब गई। न जाने कितने असंख्य आशिकोंने अपने माशूकोंके लिए कष्ट सहे हैं, प्राण न्योछावर किये हैं और भविष्यमें न जाने कितने उक्त मार्गोंका अनुसरण करते रहेंगे।



हिन्दी-उर्दू-दृष्टिकोण

यूँ तो प्रत्येक आसक्त व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो, या पुरुष, आशिक़ कहला सकता है। लेकिन हिन्दी-कवियोने मुख्यतः स्त्री-जातिको और उर्दू-शाइरोने विशेषकर पुरुप वर्गको आशिक-श्रेणीमे रखा है। इस भिन्न दृष्टिकोणके कारण एक ही देशमे जन्मीं और परवान चढी कविता और शाइरीमे व्यवधान पड गया है, किन्तु दोनो ही दृष्टिकोणोसे लाभ उठाया और समन्वय किया जासकता है।

स्त्री-जाति स्वभावतः आसक्तिके गुणोसे परिपूर्ण है। इसी कारण हिन्दी-कवि उसे 'आशिक' पदपर अभिषिक्त करते आये है। स्त्री मन, वचन, कायसे पति-प्रेममे लीन रहती है। पतिका अनुराग पानेके लिए हर सम्भव उपाय करती है। उसे ईश्वर समझकर पूजती है। अपना शरीर ही नही, आत्मा भी समर्पित कर देती है। जिसे वरण कर लिया, उसका बड़े-से-वड़े संकटमे साथ नही छोड़ती। जीवन पर्यन्त उसकी माला जपती है। पर-पुरुषकी स्वप्नमे भी कामना नही करती। पति-विरहमे तारे गिन-गिनकर रात और तिनके चुन-चुनकर दिन गुजारती है। पतिके अत्याचारोको, नैतिक अपराधोको सहन करती रहती है। अकेलेमे रोती है, सबके सामने हँसती है। और पुरुप ? यदि वह संयमी एव शीलवान है और उसे मनके अनुकूल पत्नी मिली है, तव तो वह भी अपनी पत्नीके प्यारका आदर करता है और स्वयं भी उससे अनुराग रखता है। अन्यथा उपेक्षा करना, विरह-ज्वालामे जलाना, परकीयासे प्रेम करके उसे सन्ताप देना, वाधा पड़नेपर पीड़ा पहुचाँना पुरुषका साधारण-सा कार्य्य है।

स्त्रियाँ स्वभावतः लजालु, शीला, कोमल होती है। उनका हृदय पति या प्रेमीके लिए प्रेमसे ओत-प्रोत होता है। और पुरुपोमे ये गुण उतनी अधिकता लिये हुए नही होते। इसीलिए हिन्दी-कवियोने स्त्रीको 'आशिक' और पुरुषको 'माशूक' की कोटिमे रखकर अपनी अनोखी और परिष्कृत बुद्धिका

परिचय दिया है। इस कल्पनासे हिन्दी-कवितामे इतनी स्वाभाविकता एवं पवित्रता आ गई है कि उर्दूके प्राय. सभी अच्छे साहित्यिको एवं आलोचकोने मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। अल्लामा 'नियाज' फ़तहपुरी तो हिन्दी कवियोकी इस कल्पनापर इतने मुग्ध हुए कि कुछ दोहे चुनकर 'जज्बाते-भाषा' शीर्षकसे एक छोटी-सी पुस्तक भी प्रकाशित कर दी। उसीमे आपने लिखा है—

"इसमे कलाम (शक) नही कि भाषाकी शाइरी जज्बातो-असरात (हृदयग्राही भावो और प्रभाव) से मालामाल (परिपूर्ण) है और जिस कदर तरन्नुम (माधुर्य्य) और मूसीकी (संगीत) इस जबानमे है, किसी दूसरी जबानको मयस्सर (प्राप्त) नही, और इसकी वजह यह है कि जैसा आशिक इस जबानको मिला, वह किसी और जबानको नसीब नही हुआ। क्योकि जिन्से-कवीको हलाक करनेके लिए इससे ज्यादा सरीहुल असर अम्र कोई नहो कि जिन्से-लतीफकी तरफसे इजहारे-तअ़ल्लुक (शक्तिशाली पुरुषवर्गको मोहित करनेके लिए इससे अधिक शीघ्र प्रभावक कार्य्य कोई नही कि कोमल एवं मृदुल ललनाओकी ओरसे आसक्तिका भाव प्रकट) हो।"

हिन्दी-कवियोके विपरीत प्राचीन उर्दू-शाइरोने आशिकीका सेहरा तो पुरुष वर्गके सिर बाँध दिया, किन्तु माशूकीका ताज किस वर्गके सिरपर रखा जाय ? कुछ निश्चय न कर सके। १७८० ई० पूर्व शाइरीका माशूक स्त्री है या पुरुष यह स्पष्ट नही हो पाता था। क्योकि आशिक और माशूक दोनोके लिए—संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सम्बोधन आदि पुल्लिग व्यवहृत होते थे—

साकिब लखनवी—

लूटने वाले हमारी नींदके।
किस मज़ेसे रातभर सोया किये॥

फ़ानी बदायूनी—

नहीं ज़रूर कि मर जायें जाँ निसार तेरे
यही है मौत कि जीना हराम हो जाये

इस तरहके अशआरसे स्पष्ट नहीं होता कि आशिक और माशूक किस वर्गके है। यह शैली उर्दूकी बहुत खूब है। क्योंकि ऐसे अशआरका दोनो ही वर्ग उपयोग कर सकते है। लेकिन जब एकवचनमे पुरुष आशिककी तरफसे माशूकके लिए पुल्लिग शब्द आते है, तो कानोंमे कुछ खटक-सी होती है—

मीर—

देख लेता है वह पहले चारसू अच्छी तरह।
चुपके-से फिर पूछता है "मीर तू अच्छी तरह" ॥

ग़ालिब—

शबको किसीके ख़्वाबमें आया न हो कहीं।
दुखते हैं आज उस बुते-नाज़ुकबदनके पाँव ॥

परम्परानुगत पुरुष तो आशिक और माशूकके लिए पुल्लिग शब्दोका प्रयोग करते ही थे, स्त्रियाँ भी शाइरीमे अपनेको पुल्लिग लिखनेको बाध्य थी।

सुलताना बेगम—

थी वह निगाहे-नाज़ या नावकका तीर था।
मिलते ही आँख रह गया, मैं कहके "हाय दिल" ॥

हिजाब बेगम—

नहीं यह ख़ूब कि सुनते नहीं किसीकी तुम।
यह देखो तो कि मैं कहता हूँ क्या, सुनो तो सही ॥

शाइरीका यह ढग तो बहुत अच्छा था कि माशूकका स्पष्ट संकेत न हो, ताकि स्त्री-पुरुष दोनो वर्ग समान रूपसे अशआरका उपयोग कर सके। मगर अच्छी चीजमे भी बुरे पहलू निकल आते है। जिस तरह गुलाबमे काँटे।

शाइरीका आशिक पुरुष होता और माशूक स्त्री तो भी एक मौलिकता रहती। लेकिन बाज पुरुष आशिकमिज़ाजोंने—छोकरोंको भी 'माशूक' तसव्वुर करना शुरू कर दिया। पुरुषकी तरफ़से समलिंगीसे इश्कका इजहार किया जाये, इस घिनावनी मनोवृत्ति एवं कुरुचिको क्या कहा जाय ?

पुरुषोंका इकतर्फा इश्क, भद्र महिलाओंपर कुदृष्टि, बदचलन औरतोंसे काम-वासना और छोकरोंसे अप्राकृतिक प्यारका उल्लेख उर्दू-शाइरीको पतनकी ओर लिये जा रहा था कि 'हाली' और 'आजाद' ने अपने आन्दोलनसे कायापलट कर दी। परिणाम-स्वरूप आज वह अपने विकसित रूपमें सुशोभित हो रही है।

गजलमें सबसे पहले 'हसरत' लखनवीने १७७२–१७९७ ई० में स्पष्टत स्त्रीको माशूकका दर्जा दिया। तबसे लखनवी शाइरीमें स्त्रियोचित-लिबास, जेवर, पर्दा, कंघी, चोटी आदिका समावेश होने लगा। लेकिन परम्परानुसार क्रिया, विशेषण, सम्बोधन आदि पुल्लिग ही इस्तेमाल होते रहे, और यह रेख़्ती शाइरी उर्दूके लिए कलंक बनकर रह गई।[1]



---

१. विशेष जानकारीके लिए देखें 'शेरो-सुख़न' पाँचवाँ भाग।

महिलाओंकी शाइरी

अताउल्लाह पालवी लिखते हैं—"हिन्दी-शाइरीको दुनियाकी तमाम जबानोकी शाइरीमे महमूदो-मुमताज़ (श्रेष्ठ और उच्च) दर्जा मिलनेकी महज वजह यह थी कि वह अपने जज़्बो-असर (भाव और प्रभाव) मे सारी दुनियाकी शाइरीसे यगाना और मुन्फरद् (एकाकी और अद्वितीय) थी। और इसका सबब सिर्फ यह था कि इसमे जज्बाते-मुहब्बत (प्रेमकी भावनाएँ, आसक्ति) औरतकी तरफसे, औरतकी जबानसे अदा (प्रकट) होते थे; और इसमे मुखातिब (सम्बोधित) माशूक मर्द, बल्कि शौहर (पति) हुआ करता था। जिस वजहसे वह मुहब्बत एक तरफ तो फितरी (स्वाभाविक) होती थी और दूसरी जानिब (तरफ) इकतर्फा होनेके इल्जामसे भी बरी (मुक्त) थी[1]।"

हिन्दी-कवितामे नारी-जातिके भावोंका अत्यन्त सजीव एवं मधुर वर्णन मिलता है, किन्तु वह सब पुरुषों-द्वारा लिखा हुआ है। यदि स्वयं स्त्रियो-द्वारा स्वानुभव एवं हृदयोद्गार व्यक्त हुए होते तो वह और अधिक हृदय-स्पर्शी, मृदुल, मार्मिक होते और अस्वाभाविकता एवं कृत्रिमताके दोपसे भी मुक्त होते। लेकिन यह उस युगमे सम्भव न था।

यूँ तो बलवान एवं सामर्थ्यवान होनेके नाते पुरुष वर्ग प्रत्येक क्षेत्रमे आगे बढता रहा, और कोमल, नम्र एवं अशक्त होनेके फलस्वरूप स्त्रियाँ पिछड़ती रही, फिर भी मुस्लिम-आक्रमण कालसे पूर्वका युग गनीमत था। पर्देके अभिशापसे और घरकी चारदीवारीके बन्दी-जीवनसे मुक्त थी। हर अच्छे कार्य करनेमे स्वतंत्र थी और उनका भी अपना निजी व्यक्तित्व था।

---

१. आजकल उर्दू १५ अप्रैल १९४६ पृ० ११।

भारतसे मुस्लिम-आक्रमण-कालके बाद नारीकी स्वतन्त्रता समाप्त हो गई। मुसलमान अपने मजहबी एतकादकी वजहसे ख़ुद तो पर्देके सख्त पाबन्द थे ही, उनकी वजहसे हिन्दुओको भी पर्देका कायल होना पडा। मुस्लिम-फौजोके दिन-रातके आक्रमणो, आततायियो-द्वारा अपहरणो और बादशाहो-द्वारा बलात् लड़कियोके छीने जानेके भयसे चारदीवारीमे उन्हे बन्द होना पडा। धीरे-धीरे नारीकी स्वतंत्रता समाप्त हो गई और वह केवल पिंजरेकी मैना बनकर रह गई।

ऐसी स्थितिमे जब कि उनके बालो-पर कैंच कर दिये गये थे, क्या उड़ान भरती? जब पढना-लिखना ही निपिद्ध था, तब वे कविता तो क्या कर पाती, उन्हे तो यह भी पता न था कि उनके सम्बन्धमे कविगण या शुअ़रा कितना सुरुचि एव कुरुचिपूर्ण लिख रहे है। जिस नारी-समाजके रूप, सौन्दर्य, हाव-भाव, विरह-मिलनकी नित नयी अनोखी और विचित्र कल्पनाएँ करनेमे कवि एवं शाइर दिन-रात लीन रहते थे, दरबारोसे पुरस्कृत होते थे, जनतासे वाह-वाही लूटते थे और ग्रन्थो-पर-ग्रन्थ रचे जा रहे थे। वही नारी-समाज उनके कौशलसे अनभिज्ञ था। शिकारियोका समूह कस्तूरी-मृगपर लक्ष बाँध रहा था और मृगको अपनी नाभीमे कस्तूरी होनेका आभास तक न था।

प्रकृतिके करिश्मे भी अजीबो-गरीब होते है। बाज दफा असम्भव बाते भी सम्भव हो जाती है। समुद्रमे डूबे हुए सोने-जवाहरातके सन्दूक लहरोके थपेडे खाते हुए किनारे लग जाते है। जमीन-दोज खजाने भूकम्पके धक्कोसे कई बार ऊपर आ गये है। यहाँ तक कि दफनाये गये मुर्दे कब्रोसे जीवित निकल आये है।

किसी भी वर्ग या समाजको चिरकाल तक बन्धनमे नही रखा जा सकता। नारी-समाजके गुण भी पृथ्वीसे फूट निकलने वाली बहारकी तरह प्रस्फुटित होते रहे। अभिभावकोका भय और पण्डित-मौलवियोके फत्वे

विघ्न डालते रहे। फिर भी बादलोमे घिरे सूर्य-चन्द्रकी तरह किरणें झलक दिखाती ही रहीं। स्त्रियाँ भी लुके-छिपे कविता या शाइरी करती रही। उन्हे प्रोत्साहन मिलना तो दर किनार, अनुत्साहित ही किया जाता रहा। उचित निर्देशन और प्रचार न मिलनेके कारण न वे ख्याति पा सकी और न पुरुष-वर्ग जैसा शाइराना कमाल दिखा सकी। कीमती जवाहर-पारे भी खराद-तराशके अभावमे मस्तक और गलेकी जीनत बननेके बजाय मखमली बक्सोमे शोभायमान होते रहे।

खुदाए-सुखन 'मीर' ने शाइरोंका तजकिरा लिखा, लेकिन एक भी शाइराका उल्लेख करना उचित नहीं समझा। हालाँ कि स्वयं उनकी सुपुत्री 'बेगम' उपनामसे शेर कहती थी और अच्छा कहती थी। सौदा, यकीन, नसीर आदि उस्तादोकी भी शिष्याएँ थी। मलिकाओ, बेगमो, शहजादियों, शरीफ बहू-बेटियों, दाश्ताओ, लौण्डियो और वेश्याओमे भी शाइराएँ हुई है, किन्तु तजकिरोमे उनका उचित उल्लेख न होनेसे न तो उनको ख्याति ही मिल पाई और न सर्वसाधारणमे पुरुषोके समान उनकी शाइरी आपाई।

लेकिन कस्तूरीकी गन्धको कबतक पोशीदा रखा जा सकता था, वह शनै:-शनै: फैलने लगी। नवाब शेफ्ताने १८३० ई० के लगभग शाइरोका तजकिरा लिखा तो उसमे शाइरातका भी जिक्र किया।

फिर तो उनके बाद होनेवाले तजकिरे नवीसोने भी इस रिवाजको आगे बढाया। इन तजकिरोकी बदौलत सैकडो शाइरातके नाम तो सामने आगये, किन्तु दो-चार पंक्तियोके परिचय और बतौर नमूना दो-चार अशआरके देखनेसे उनके व्यक्तित्व और शाइराना मर्त्तबेका सही अन्दाज नही होता। बल्कि गलतफहमी ज्यादा बढती है। शाइरीमे देगके एक चावल परखनेवाला नियम नही चल सकता। इन महान् शाइरोका केवल निम्नलिखित एक-एक शेर यदि प्रकाशमे आया होता तो कदापि उनके सम्बन्ध-मे ये धारणाएँ न बन पाती जो उनके समूचे कलामको देखकर बनी है—

ग़ालिब—

धौल-धप्पा उस सरापा नाज़का शेवा नहीं।
हम ही कर बैठे थे 'ग़ालिब' पेश दस्ती एक दिन॥

मोमिन—

आये ग़ज़ाल-चश्म सदा मेरे दाममें।
सैय्याद ही रहा, मैं गिरफ़्तार कम हुआ॥

इक़बाल—

वह प्यारी-प्यारी सूरत, वोह कामनी-सी मूरत।
आबाद जिसके दमसे था मेरा आशियाना॥

हर्ष है कि अन्य क्षेत्रोके समान साहित्यिक क्षेत्रमे भी महिला-समाज अग्रसर हो रहा है। हिन्दी भाषा-भाषी महिलाओके समान उर्दू-दाँ मस्तूरात भी—मजामीन, तन्कीद, स्कैच, नॉविल, अफसाने, ड्रामे, रिपोर्ताजिके अलावा शाइरीमे भी अच्छी-ख़ासी तरक्की कर रही हैं। गजल, नज्म, रुबाई, किते, मर्सिये वगैरह सभीमे तबाआजमाई कर रही है।

अब तो औरतोके मुशाअरोका भी बहुत धूम-धामसे एहतिमाम किया जाता है। रेडियो-स्टेशनोसे ये मुशाअ़रे रिले भी होते है और ख़ुद रेडियो स्टेशनोसे भी ऐसे मुशाअ़रोके प्रोग्राम चलते रहते है। मर्दोके मुशाअ़रोमे भी शाइरातको पढनेके लिए बहुत ऐहतिरामके साथ मद्ऊ (निमंत्रित) किया जाता है। लेकिन एक वह वक्त भी था, "जब १८ फरवरी १९३९ ई० को लखनऊमे मुहतरिमा कनीज फातमा 'हया' ने मस्तूरातका मुशाअ़रा किया तो उसकी अच्छी ख़ासी मुख़ालिफत हुई और उस मुखालिफतमे औरते ही सबसे ज्यादा बढ-चढकर उसी तरह पेश-पेश थी, जिस तरह अमरीकाके गुलाम, गुलाम-मुक्ति-आन्दोलनकी मुख़ालिफतमे थे।"

प्रस्तुत पुस्तकमे १९४० से १९६० ई० तकका कलाम चयन किया गया है, ताकि शाइरातकी उन्नतिशील शाइरीकी प्रगतिका वास्तविक ज्ञान हो

सके। वर्त्तमानकालीन शाइरातने काफी उन्नति की है। उनके भाव कहीं-कहीं उर्दूके नामवर शाइरोंके रंगमें डूबे नजर आते हैं। वह दिन दूर नहीं जब आलोचकोंको लिखना पड़ेगा कि अमुक शाइरका कलाम अमुक शाइरासे प्रभावित है। यहाँ हम तुलनात्मक चन्द शेर बिना किसी टिप्पणीके दे रहे हैं—

ग़ालिब—

क़ैदे-हयातो-बन्दे-ग़म अस्लमें दोनों एक हैं
मौतसे पहले आदमी ग़मसे निजात पाये क्यों ?

ताहिरा शबनम—

क़ैदे-हयातमें तू करता है फ़िक्रे-राहत
दीवाने हँस पड़ेंगे सुनकर ख़याल तेरा

ग़ालिब—

देखना क़िस्मत कि आप अपने पै रश्क आ जाये है
मैं उसे देखूँ भला कब मुझसे देखा जाय है

बेगम अख़्तर—

आप अपने पै रश्क आता है
कि तमन्नाए-यार करते हैं

ग़ालिब—

क़तरा अपना भी हक़ीक़तमें है दरिया लेकिन
हमको तक़लीदे-तुनक - ज़र्फ़िए-मंसूर नहीं

ज़रीफ़ः—

मंज़ूर नहीं मुझको तुनक ज़र्फ़िए-मंसूर
दुनिया पै अयाँ हाले-दिले-ज़ार न करते

ग़ालिब—

मुद्दत हुई है यारको मेहमाँ किये हुए
ज़ोशे-क़दहसे बज़्मे-चिराग़ाँ किये हुए

अदा बदायूँनी—

हर-एक हर्फ़े-आरज़ूको दास्ताँ किये हुए
ज़माना हो गया है, उनको मेहमाँ किये हुए

ग़ालिब—

या रब ! ज़माना मुझको मिटाता है किसलिए
लौहे-जहाँ पै हर्फ़े-मुक़र्रर नहीं हूँ मैं

खालिद: जबलपुरी—

जिन्दगी मेरी कहीं हर्फ़े-मुक़र्रर तो नहीं ?
बर्क़ क्यों ढूँढती फिरती है नशेमन मेरा ?

मीर—

पास नामूसे-इश्क़ था वर्ना
कितने आँसू पलकतक आये थे ?

अदा बदायूनी—

१गौहरे-आबदार यह नौके-मिज़ह पै ख़ूब है
खाकमें मिल गया तो फिर अश्ककी आबरू कहाँ ?

इक़बाल— हया नहीं है ज़मानेकी आँखमें बाक़ी
खुदा करे कि जवानी तेरी रहे बेदाग़

अदा बदायूनी—

सबक ले, गौहरे-ताबाँसे तेरी मासूमी
जहाने-हिर्सो-हवामें भी पाकबाज़ रहे

इक़बाल—

एक बुलबुल है कि है महवे-तरन्नुम अबतक
इसके सीनेमें है नग़मोंका तलातुम अबतक

जहाँ 'बानो'—

एक फ़क़त बुलबुल नवासंजे-फ़ुग़ाँ महफ़िलमें है
और इक है जान बरपा इस दिले-बिस्मिलमें है

इक़बाल—

जिनको आता नहीं, दुनियामें कोई फ़न, तुम हो
नहीं जिस क़ौमको परवाए-नशेमन तुम हो

तैमूरजहाँ हिजाब—

अहदे-तैमूरका इक ख़्वाबे-जवानी तुम हो
सफ़ए-दहरकी गुमगश्ता कहानी तुम हो
जौरे-सैयादकी इक ज़िन्दा निशानी तुम हो
सारी दुनियाके लिए सोज़े-निहानी तुम हो

इक़बाल—

फ़र्द क़ायम रब्ते-मिल्लतसे है, तनहा कुछ नहीं
मौज है दरियामें और बेरूने-दरिया कुछ नहीं

तैमूरजहाँ हिजाब—

क़तरे मिल जाएँ जो आपसमें तो दरिया होगा
क़ौमके दर्दका इस तरह मदावा होगा

ग़ालिब—

हुस्न और उसपै हुस्ने-ज़न रह गई बुलहविसकी शर्म
अपने एतमाद है, ग़ैरको आज़माएँ क्यों ?

हया मेरठी—

मुझे जब आप है अपनेसे एतबारे-वफ़ा
तू ही बता कि तेरा एतबार क्यों न करूँ ?

इक़बाल—

उठ कि ज़ुल्मत हुई पैदा उफ़क़े-खावर पर
बज़्ममें. शुअ़ला-नवाईसे उजाला कर दें

हया लखनवी—

उठें फिर फ़स्ले-गुलमें आर्ज़ूओंको जवाँ कर दें
चलें फिर बुलबुलोंको आश्नाए-गुल-सिताँ कर दें

फ़ैज अहमद फ़ैज़—

आह ! मै और तेरी चाह नहीं !!
इस तसन्नोहसे थक गया हूँ मै

हया लखनवी—

तुझे चाहता है दिले-हज़ीं
करूँ लाख मुँहसे नहीं-नहीं

अमीर मीनाई—

वोह, और वादा वस्लका क़ासिद ! नहीं-नहीं
सच-सच बता यह लफ़्ज़ उन्हीं की ज़बाँ के हैं

ख्वालिद: जबलपुरी—

वोह और वादा वस्लका क़ासिद ग़लत-ग़लत
क्या बात कह रहा है कि जिसका गुमाँ नहीं

शाद अज़ीमाबादी—

लहदमें क्यों न जाऊँ मुँह छुपाये
भरी महफ़िलसे उठवाया गया हूँ

ख़ालिद: जबलपुरी—

भरी बज़्मसे मैं उठाया गया हूँ
कहाँ फिर कहाँसे मैं लाया गया हूँ

इक़बाल—

नक्श तौहीदका हर दिल पै बिठाया हमने
ज़ेरे-ख़ंजर भी यह पैग़ाम सुनाया हमने

राज़ मुज़फ़्फ़रनगरी—

हम तो वे थे कि दो आलमको हिला देते थे
नामपर तेरे रगे-जाँको कटा देते थे

जोश मलीहाबादी—

ले रहा है करवटें, आरिज़में यूँ रंगे-शबाब
जैसे तूफ़ानी समन्दरमें ज़ियाए-माहताब

ज़ह्रा बलियावी—

आँख शरमीली, नज़र नीची, फ़िदा जिसपर हिजाब
ले रहा है करवटें सोया हुआ दिलमें शबाब

हाली—

जो दीं कि बड़ी शानसे निकला था वतनसे
परदेसमें अब आके ग़रीबुल ग़ुरबा है

ज़ेब उस्मानिया—

इस दीनके मानी हैं, अब खारो-ख़ज़बसे कम
महरो-महो-अंजुम थी जिस दीनकी तफ़सीरें

इक़बाल—

नाला है बुलबुले-शोरीद: तेरा खाम अभी
अपने सीनेमें उसे और ज़रा थाम अभी

ज़ेब उस्मानिया—

गर तेरा नाला मुहताजे-नै है
दिल ही में अपने उसको अभी थाम

इक़बाल—

तेरे शीशेमें मै बाक़ी नहीं है ?
बता क्या तू मेरा साक़ी नहीं है ?
समन्दरसे मिले प्यासेको शबनम !
बुखीली है यह रज़्ज़ाक़ी नहीं है !!

ज़ेब उस्मानिया—

क़तरे-क़तरेको फिरें तेरे सुबूकश लाचार !
है यह किसलिए ग़ैरतका मुकाम ऐ साक़ी !
मक्रुमतसे तेरी हो जाँय न मैकश बद्दिल,
संगदिल है तेरी महफ़िलका निजाम ऐ साक़ी !

इक़बाल—

ग़ुबारे-रहगुज़र हैं कीमिया पर नाज़ था जिनको
जबीनें खाकपर रखते थे, जो अक्सीर-गर निकले

ज़ेब उस्मानिया—

खिरदके मसरफ़े-आलासे कितने बेख़बर निकले
कि बाज़ारे-जहाँसे अहले-मग़रिब ख़्वारतर निकले

इक़बाल—

उक़ाबी शानसे झपटे थे जो वे बालो-पर निकले
सितारे शामके खूने-शफ़क़में डूबकर निकले

ज़ेब उस्मानिया—

०फ़लककी तुर्फ़ाकारी है कि आज ऐ 'ज़ेब' दुनियामें
जो थे सैयाद वोह खुद, ताइरे-बे बालो-पर निकले

इक़बाल—

तेरा इमाम बे हज़ूर, तेरी नमाज़ बेसुरूर
ऐसी नमाज़से गुज़र, ऐसे इमामसे गुज़र

ज़ेब उस्मानिया—

ज़ाहिदे-क़मनिहादने रस्म समझ लिया तो क्या ?
क़स्दे-क़याम और है, रस्मे-क़यामसे गुज़र

मोमिन—

क्या मरते दमके लुत्फ़में पिन्हाँ सितम न था ?
वे देखते थे साँसको और मुझमें दम न था

सारः हैदराबादी—

की दमे-नज़अ, उसने पुरसिशे-हाल
लब पै जुम्बिश हुई, बता न सके

फ़ानी—

०तू कहाँ थी ऐ अजल! ऐ नामुरादोंकी मुराद
मरने वाले राह तेरी उम्रभर देखा किये

शमीम—

तेरी ही आस पै जीती है, अब 'शमीमे'-हज़ी
करेगी रहम तू ऐ मर्गे-नागहाँ कब तक ?

जोश मलीहाबादी—

ग़ल्ताँ है ख़ुबूमें अक्से-अंजुम साक़ी !
दरियामें है चाँदसे तलातुम साक़ी !
इस वक़्त नज़र मिलाके दमभरके लिए
मैं तेरे निसार, एक तबस्सुम साक़ी !

[illegible] मलीहाबादी—

[illegible]की सदाएँ आती हों, जब रह-रहके गुलज़ारोंसे
[illegible] [illegible]-शीरीं फूट पड़े, जब दिलके नाजुक तारोंसे
[illegible] [illegible] हटाके पर्दोंको तू काश चमनमें दर आये
[illegible] [illegible] ज़र्रा-जर्रा तसवीरे-मसर्रत बन जाये

[illegible]—

[illegible]-कौ बहार अगर मेरे नसीबमें न हो
[illegible] दिले-नीम सोजको, तारिके-बहार कर

[illegible] मलीहाबादी—

मेरे चमनके नसीबोंमें गर बहार नहीं
तो उसको हदयए-बर्क़ो-शरार ही करदे

[illegible] गोण्डवी—

चमनमें छेड़ती है किस मजेसे ग़ुंच-ओ-गुलको
मगर मौजे-सबाकी पाकदामानी नहीं जाती

नसीम मलीहाबादी—

बहारें आईं भी और हो गईं रुखसत मगर कबतक
गुलिस्ताँमें गुलोंकी चाकदामानी नहीं जाती

जिगर मुरादाबादी—

वे ख़ुद तस्कीने-ख़ातिर कर रहे हैं
मगर दिल है कि फिर घबरा रहा है
गले मिलकर वे रुख़सत हो रहे हैं
मुहब्बतका ज़माना आ रहा है

शमीम मलीहाबादी—

वक़्ते-सफ़र तसल्लिए-पैहमके बावजूद
क्यों छुट गया था सब्रका दामाँ न पूछिए

मोमिन—

तेरे पर्देने की यह पर्दादरी
तेरे छुपते ही कुछ छुपा न रहा

ख़ुर्शीद इस्मत—

ख़ुद ही महफ़िलमें हो गये रुसवा
तुमने हमको उठाके देख लिया

मोमिन—

न मैं अपना, न दिल अपना, न तुम मेरे, न जाँ मेरी
असर किस-किसको हो, होवे भी गर फ़रियादे-बेकसमें

अज़मत इक़बाल—

चमन अपना न गुल अपना, न कोई बाग़बाँ अपना
तबीयत बुझ गई, उजड़ा ख़ुशीका गुलसिताँ अपना

ग़ालिब—

इशरते क़तरा है दरियामें फ़ना हो जाना
दर्दका हदसे गुज़रना है दवा हो जाना

लैली बेगम—

मुहब्बतका एजाज मैं क्या कहूँ ?
वही दर्द बढ़कर दवा हो गया

अन्दलीब शादानी—

कुछ ऐसी ही फ़ज़ा, ऐसी ही शब, ऐसा ही मंज़र था
न जाने क्या मुझे भा गया तारोंकी झिलमिलमें

नज्मः तसद्दुक़—

तारोंकी मस्त छाँवमें अब भी कभी-कभी
करती हूँ याद भूली हुई दास्ताँको मै

असग़र गोण्डवी—

क्या मेरे हाल पै सचमुच उन्हें ग़म था क़ासिद !
तूने देखा था सितारा सरे-मिज़गाँ कोई ?

नज्मः तसद्दुक़—

उनकी आँखें देरतक, रहती हैं रश्के-कहकशाँ
जब कभी रातोंको 'नज्मः' याद आ जाती हूँ मै

अन्दलीब शादानी—

चाँदनी, मौसमे-गुल, सहने-चमन, खिलवते-नाज़
ख़्वाब देखा था कि कुछ याद है, कुछ याद नहीं

नज्मः तसद्दुक़—

वोह शबे-ताब जल्वे, वह तारोंकी छाँव
कभी मैने ऐसा भी देखा है, ख़्वाब

इक़बाल—

ख़ुदा अगर दिले-फ़ितरत-शनास दे तुझको
सकूते-लालाओ-गुलसे कलाम पैदा कर

नज़्म: तसद्दुक़—

तेरी नजरसे चमन-ज़ार सरमदी बन जाय
कली-कलीकी ज़बाँसे पयाम पैदा कर

सौदा—

कैफ़ियते-चश्म उसकी मुझे याद है 'सौदा'
साग़रको मेरे हाथसे लेना कि चला मैं

नज़्म: तसद्दुक़—

जाम गिर पड़ता है साक़ी ! थरथरा जाते है हाथ
तेरी आँखें देखकर नश्शःमें आ जाती हूँ मैं,

मोमिन—

तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता

नज़्म: तसद्दुक़—

जब मेरे पास वे नहीं होते
उनसे होती हैं राज़की बातें

मोमिन—

उस ग़ैरते-नाहीदकी हर तान पै दीपक
शोला-सा चमक जाये है, आवाज़ तो देखो

नज़्म: तसद्दुक़—

जिनपै मूसीक़ियोंको वज्द आये
हाय ! उस मस्ते-नाज़की बातें

अन्दलीब शादानी—
मैं आह करके अपने ख़यालोंमें खो गया
कुछ ज़िक्र था बहारे-शबे-माहताबका

नज़्मः तसद्दुक़—
शबे-हिज्रमें तुम बहुत याद आये
भरी चाँदनी-थी सुहाना समाँ था

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़—
मचल रहा है, रगे-जिन्दगीमें ख़ूने-बहार
उलझ रहे है, पुराने ग़मोंसे रूहके तार

नज़्मः तसद्दुक़—
फिर फ़ित्ने जवानीके, मचलते है रगोंमें
फिर दिलका हर-इक गोशः है सदहश्र बदामाँ

ग़ालिब—
फिर वजहे-एहतियातसे रुकने लगा है दम
मुद्दत हुई है चाके-गरीबाँ किये हुए

नज़्मः तसद्दुक़—
जी खोलकर कुछ आज तो रोने दे हमनशीं !
मुद्दत हुई है दर्दका दरमाँ किये हुए

फ़िराक़ गोरखपुरी—
यह तीरगी, यह अबतरी, यह निकहतें, यह मस्तियाँ
कि खुल पड़ी हो जिस तरह वोह ज़ुल्फ़े-अम्बरीं कहीं

नज्म तसद्दुक—
मिलते है दोनों वक्त कि आता है कोई याद
आरिज़ पै काकुलोंको परीशाँ किये हुए

ग़ालिब—

जी ढूँढ़ता है फिर वही फ़ुर्सतके रात-दिन
बैठे रहें तसव्वुरे-जानाँ किये हुए

नज्म तसद्दुक़—

ज़ुल्मत नसीब, गोशए-खिल्वतमें ग़ामे-ग़म
बैठे हैं दाग़े-दिलको फ़रोज़ाँ किये हुए

फ़ानी—

दुश्मने-जाँ थे तो जाने-मुद्दआ क्यों हो गये ?
तुम किसीकी ज़िन्दगीका आसरा क्यों हो गये ?

नज्मः तसद्दुक़—

खून बनकर मेरी आँखोंसे टपकने वाले !
नूर बनकर मेरी आँखोंमें समाया क्यों था ?

मजाज़—

सबका तो मदावा कर डाला, अपना ही मदावा कर न सके
सबके तो गरेबाँ सी डाले, अपना ही गरेबाँ भूल गये

नूर—

औरोंके चाके-क़िस्मत हमने रफ़ू किये है
और सी सके न अपना अफ़सोस चाके-तक़्दीर

ग़ालिब—

बार-हा देखी हैं उनकी रंजिशें
पर कुछ अबके सरगरानी और है

वफ़ा—

यूँ वफ़ासे हुए नाराज़ तुम अक्सर लेकिन
जैसी अब है तुम्हें नफ़रत कभी ऐसी तो न थी

१८ मार्च १९६१ ई०]

सहायक-ग्रन्थ-सूची

१. सबातीने-दकनकी उर्दू खिदमात [१९४० ई०] नसीरुद्दीन हाशमी
२. मैं साज ढूँढती रही [११४७ ई०] अदा जाफिरी बदायूनी
३ शाइराते-उर्दू [१९४४ ई०] मुहम्मद जमील बरेलवी
४. बहतरीन अदब [१९४८-१९५४ ई०]
५. आजकल उर्दू दिल्ली [१९४४ से १९६० ई० तक]
६. निगार लखनऊ [१९५१ से १९५३ ई० तक]
७. नकूश लाहोर [१९५४ ई०]
८ शमा दिल्ली [१९५५ से १९६० ई० तक]
९. शाइर बम्बई [१९५७ से १९५८ ई० तक]
१० बीसवीं सदी दिल्ली [१९५९ से १९६० ई० तक]
११. तहरीक दिल्ली [१९५४, १९६० ई०]
१२. आईना दिल्ली [१९५५ ई०]
१३ एशिया बम्बई [१९४९ ई०]
१४. शाने-हिन्द दिल्ली [१९६० ई०]
१५. बिहारी-रत्नाकर [१९२६ ई०] जगन्नाथदास रत्नाकर
१६ मतिराम-ग्रन्थावलि [१९२५ ई०] कृष्णबिहारी मिश्र
१७. रहिमन-विलास [१९१५ ई०] व्रजरत्नदास
१८ शेरो-शाइरी [१९५० ई०] गोयलीय
१९ शेरो-सुखन [पाँच भाग] गोयलीय